पिता और पुत्र

लेखिका

वेरा पानोवा

पपुलर लाइब्रेरी

१६५।१ बी, कर्नवालिस स्ट्रीट,

कलकत्ता-६

प्रथम संस्करण, १९५८

अनुवादक

सतीश दास

अनुवाद की भाषा के सम्पादक—सूर्यदेव उपाध्याय

दाम : ३) रुपया

प्रकाशक : श्री अखिलचन्द्र नन्दी, पपुलर लाइब्रेरी १९५।१ बी, कर्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता-६ । मुद्रक : श्री शशिभूषण पाण्डेय, बी. ए., साहित्य प्रेस, ८४ सी, लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

पिता और पुत्र

भूमिका

वेरा पानोवा सोवियत संघ की विख्यात लेखिका हैं। सत्तरह साल की उम्र से ही उनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपने और सोवियत जनता द्वारा समादृत होने लगी थीं। "ट्रावलिंग कम्पेनियन्स", "दी ब्राइट शोर" इत्यादि कई उच्च-कोटि के उपन्यास लिखकर उन्होंने सुख्याति अर्जन की है। उनका यह "पिता और पुत्र" उपन्यास "सेर्योझा" नाम से जब छपा तो सोवियत साहित्य में एक हलचल-सी मच गयी और उसे किशोर-साहित्य की एक अनूठी पुस्तक माना गया।

वेरा पानोवा के बारे में विश्वविख्यात फ्रांसीसी लेखक और कवि लूई आरांगा ने लिखा है—"हालाँकि उनके बारे में पर्याप्त आलोचनाएँ की जा रही हैं फिर भी मैं कहूँगा कि वेरा पानोवा आधुनिक साहित्य-स्रष्टाओं में अन्यतम हैं।" लूई आरांगा ने अपनी आलोचना में "सेर्योझा" को यथेष्ट महत्व दिया है।

वेरा पानोवा के उसी "सेर्योझा" नामक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद "पिता और पुत्र" है। "पिता और पुत्र" के माध्यम से लेखिका ने सोवियत–जीवन की जो बोलती तस्वीर पेश की है वह इतनी अनुभूतिपूर्ण, जीवन्त और हृदयस्पर्शी है कि पढ़ते समय लगता है मानो सिनेमा देख रहे हों।

पिता और पुत्र "सोवियत लिटरेचर" में प्रकाशित "सेर्योझा" नामक उपन्यास का अनुवाद है।

हमें विश्वास है "पिता और पुत्र" हिन्दी के पाठकों के अन्तर को छूने और उनमें पारिवारिक जीवन की स्नेहिल अनुभूति जगाने में जरूर समर्थ होगा।

—प्रकाशक

सेर्योझा कौन है, वह कहाँ रहता है

सभी कहते हैं—वह देखने में ठीक लड़कियों की ही तरह है। वास्तव में वे कितने बुद्धू हैं! लड़कियाँ तो फ्राक पहनती हैं, लेकिन उसने तो कितने दिनों से फ्राक नहीं पहना। इसके अलावा लड़कियाँ क्या गुलेल रखती हैं? किन्तु सेर्योझा के पास तो एक गुलेल भी थी। उससे वह एक पर एक कितनी ही गोलियाँ फेंकता था। उसकी गुलेल शुरिक ने बना दी थी जिसके बदले उसने अपने जीवन भर में सूत लपेटने की जितनी फिरकियाँ जमा कर रखी थीं सभी उसे दे दीं।

लेकिन हाँ, उसके बाल ठीक लड़कियों के बालों की तरह ही बड़े-बड़े थे। कई बार तो उसके बाल मशीन से छाँट दिये गये थे जिसके लिए, न जानें, उसे कितना कष्ट सहन करना पड़ा, लेकिन इससे क्या, कुछ ही दिनों के बाद उसके बाल पहले की तरह ही लम्बे हो जाते थे।

लेकिन एक बात पर सभी एकमत थे—अपनी उम्र की तुलना में वह अधिक होशियार है। दो या तीन बार उसे कोई किताब पढ़कर सुना दीजिये, वह उसे कंठस्थ हो जायगी। अक्षर वह पहचानता था किन्तु खुद पढ़ने में उसे बहुत समय लगता था। किताब के अन्दर चित्रों को वह रंगीन पेन्सिल से रंग देता और अगर चित्र रङ्गीन होता तो वह अपने इच्छानुसार

दूसरे रंगों में बदल देता था। इस प्रकार चित्रों को रंगने में सेर्योझा को बड़ा मजा आता। हाँ, कुछ ही दिनों के अन्दर उन किताबों में नयापन नहीं रह पाता। पन्ने एक-एक कर फटने लगते। पाशा मौसी फिर उनकी सिलाई कर देती। कोई पन्ना खो जाने पर, जब तक वह फिर मिल नहीं जाता सेर्योझा को चैन नहीं पड़ती। किताबों से उसे प्यार था लेकिन किताबों की सभी बातों पर वह मन से विश्वास नहीं करता। पशुपक्षी बातें नहीं कर सकते, उड़न खटोला कभी उड़ नहीं सकता क्योंकि उसमें इञ्जिन नहीं है, अचरज-भरी बातों पर विश्वास करे ऐसा बुद्धू कौन होगा! इसके अलावा सयाने लोग जब भूत, प्रेत और डाइन की कहानियाँ पढ़कर सुनाते हैं—"सचमुच, भूत-प्रेत या डाइन नहीं है" तो किताबों की इन विचित्र कहानियों पर विश्वास कैसे किया जा सकता है?

लेकिन फिर भी वह जो एक कहानी है लकड़हारा और उसकी स्त्री की जिन्होंने अपने लड़के-लड़कियों को जङ्गल में ले जाकर गायब कर देना चाहा था और अंगुष्ठ ने उन्हें बचा लिया। सेर्योझा को ये कहानियाँ सुनने में अच्छी नहीं लगतीं। ऐसी किताब अगर कोई उसे पढ़कर सुनाने आता तो वह उसे मना कर देता।

सेर्योझा अपनी माँ, पाशा मौसी और लुकियानिच के साथ रहता है। उनके छोटे-से मकान के तीन कमरों

में से एक में वह और उसकी माँ सोती है, मौसी और मौसा दूसरे कमरे में रहते हैं, तीसरा कमरा उनके खाने का कमरा है। जब कोई मेहमान आता तो वे खाने के कमरे में खाते हैं और जब कोई मेहमान नहीं होता तो रसोई घर में ही खा लेते हैं। मकान के सामने एक लम्बा-सा बरामदा और एक छोटा-सा आँगन है। आँगन में एक ओर मुर्गियाँ रहती हैं, दूसरी ओर दो लम्बी क्यारियों में प्याज और मूलियाँ लगी हैं। मुर्गियाँ कहीं चर न जायँ, इसलिए क्यारियों को काँटों से घेर दिया गया था। सेर्योझा जब भी मूली निकालने जाता उसके पाँवों में काँटे गड़ ही जाते।

कुछ लोगों का ख्याल है कि उनका शहर बहुत छोटा है। लेकिन यह ख्याल बिलकुल गलत था। सेर्योझा और उसके सभी दोस्त जानते हैं कि उनका शहर बहुत बड़ा है। कितनी दूकानें, मकान, मनूमेन्ट, सिनेमा-हाल—उनके शहर में क्या नहीं है। कभी-कभी उसकी माँ उसे सिनेमा दिखाने ले जाती। रोशनी के बुझते ही जब खेल शुरू हो जाता तो वह अपनी माँ से चुपके से कहता, "माँ, तुम समझ लो तो जरा मुझे भी समझा देना। क्यों ?"

उनके मकान के सामने वाले बड़े रास्ते से कितनी ही लारियाँ आती-जाती हैं। कभी-कभी तिमोखिन की विशाल लारी पर चढ़ कर बच्चों का दल इधर-उधर घूम आता है। लेकिन वोदका खा लेने पर तिमोखिन किसी को भी लारी पर

चढ़ने नहीं देता। तब बच्चों के चिल्लाने पर भी वह हाथ हिला-कर कह देता, "अभी तुम लोगों को नहीं चढ़ाऊँगा। देखते नहीं मैंने वोद्का पी ली है।"

सेर्योझा के मकान के सामनेवाले रास्ते का नाम कितना अद्भुत है—फार स्ट्रीट, अर्थात बहुत दूर का रास्ता। लेकिन यह तो केवल नाम है, क्योंकि सब कुछ तो इसी रास्ते के पास है। खेल का मैदान, बाजार, सिनेमा हाल। और 'ब्राइट शोर सरकारी फार्म' तो एकदम नजदीक ही है। इस फार्म की तरह प्रसिद्ध स्थान और हैं ही कितने? वहीं तो लुकियानिच काम करता है। मौसी वहीं से हेरिंग ॐ का अँचार खरीद लाती है। माँ का स्कूल भी तो इस फार्म के भीतर ही है। छुट्टी के दिनों में माँ उसे स्कूल के जलसों में ले जाती है। वहीं उसने उस लाल बालोंवाली लड़की—फीमा को देखा था। फीमा की उम्र आठ ही वर्ष है लेकिन वह देखने में कितनी बड़ी लगती है। कान की बगल में वेणी और उसमें लाल, पीला, नीला, सफेद-बैगनी—कितने ही रंगों के फीतों की छटा! फीतों का जैसे अन्त ही नहीं। सेर्योझा इन सब पर कभी गौर नहीं करता था। लेकिन फीमा ने ही एक दिन उसे बुलाकर कहा था, "ऐ, तुम देख नहीं पाते क्या? देखो, मेरे कितने फीते हैं!"

ॐ एक तरह की मछली

छोटी-मोटी तकलीफें

फीमा ने ठीक ही कहा था। सेर्योझा किसी चीज पर गौर नहीं करता। चारों ओर देखने के लिए इतनी चीजें हैं, क्या सब को देखा जा सकता है? या देखना सम्भव है? तुम्हारे चारों ओर तो देखने के लिए अशेष वस्तुएँ हैं। पृथ्वी जैसे हजारों वस्तुओं से लद गयी है। इसलिए सब कुछ देख लेना बिलकुल असम्भव है। इसके अतिरिक्त सभी वस्तुएँ कितनी बड़ी-बड़ी हैं। दरवाजे कितने भयानक ऊँचे और मनुष्य (बच्चों को छोड़कर) कितने ही लम्बे-चौड़े, जैसे एक-एक दैत्य हों। गाड़ी, घोड़ा, लारी, रेलगाड़ी के इञ्जिन—इन सब की तो बात ही दूर रही। इञ्जिन की सीटी तो इतनी तीव्र कि तुम और कुछ सुन ही नहीं सकोगे।

लेकिन सचमुच में ये सब खतरनाक नहीं हैं। सभी सेर्योझा को कितना प्यार करते हैं! वह अगर चाहे तो वे उसकी बातें सर झुकाकर ध्यान से सुनते हैं। हँसते हैं। अपने लम्बे-लम्बे पैरों से कभी भी तो उसे रौंदते नहीं। लारियाँ और दूसरी गाड़ियाँ भी तो उसे कभी चोट नहीं पहुँचातीं। हाँ, अगर उनके एकदम सामने आ गये तो बात दूसरी है। रेल के इंजन बहुत दूर उस स्टेशन पर रहते हैं। सेर्योझा दो-एक बार तिमोखिन के साथ वहाँ गया है। स्टेशन के दक्षिणी कोने में खाली जगह पर उसने न जाने कितने भयानक जानवर को पड़ा

देखा है। उसकी दोनों डरावनी आँखें क्रोध और सन्देह से देखती रहती हैं। एक विशाल नाक है जो सांस लेती जान पड़ती है। गाड़ी के पहिये की तरह उसकी छाती है और उसके होंठ भी लोहे की तरह मजबूत हैं। दोनों कठोर पंजों से वह बराबर मिट्टी को खरोंचता रहता है। जब वह गरदन निकाल चलना शुरू करता है तो सेर्योझा की तरह ही लम्बा दिखलायी पड़ता है। एक दिन एक कुत्ते का बच्चा दौड़कर उसके सामने आ गया तो यह कुरूप जानवर उसे गप से निगल गया। लगता है, सेर्योझा को भी वह एक दिन इसी तरह निगल जायेगा। सेर्योझा जब स्टेशन जाता है तो इस जानवर को चारों ओर से घूम-घूम कर देखता रहता है। यह जानवर भी अपना लाल कंघा निकाल हर वक्त जैसे कुछ न कुछ खाता ही रहता है। उसे अपनी दोनों पैनी बन्द आँखों से एकटक देखता ही रहता है। इसे देखते ही उसका नन्हा दिल भय और दुर्भावना से न जानें क्यों धक-धक करने लगता है।

मुर्गे चोंच मारते हैं, बिल्लियाँ नोंचती हैं, बिच्छुएँ चुभती हैं, शरारती बच्चे मारपीट करते हैं—धमाक से गिरते ही वे घुटनों का चमड़ा खुरच देते हैं। इसीलिये सेर्योझा के शरीर में, हाथ-पाँव में हर समय एक न एक खरोंच, एक न एक घाव दिखलाई देता ही। उसके नन्हे-से शरीर का एक न एक भाग हर समय फूला रहेगा ही और हर रोज किसी न किसी हिस्से से खून बहेगा

ही। क्योंकि एक न एक घटना तो रोज ही होती है। वास्का ऊँचे घेरे पर चढ़ गया और उसे देखकर सेर्योझा भी चढ़ने लगा। मगर चढ़ न सकने के कारण बेचारा धप से गिर पड़ा। लीदा के बगीचे में सबने मिलकर एक खाई खोदी और एक-एक कर सभी कूदने लगे। लेकिन जब सेर्योझा कूदने गया तो गिर गया और सो भी खाई के अन्दर। उसके दोनों पैर उसी दम फूल गये और उसके बाद कई दिनों तक उसे बिस्तरे पर ही लेटे रहना पड़ा। अच्छा होने पर फिर पहले ही दिन जब बाल खेलने के लिए निकला तो बाल छत के ऊपर उछलते ही चिमनी में अटक गया। जब तक बाल लेकर वास्का वहाँ न पहुँचा तब तक उसे बेवकूफ की तरह मुँह बाये ऊपर की ओर देखते हुए इन्तजार करना पड़ा। एक बार तो वह करीब-करीब डूब ही गया था। उन लोगों को एक दिन लुकियानिच नाव से टहलाने ले गया था। सेर्योझा, वास्का, फीमा, नाद्या, आदि कितने ही उसपर सवार थे। लेकिन लुकिया-निच की नाव ऐसी बेडौल थी कि लड़कों के इधर-उधर करते ही जोरों से डगमगाकर एकदम टेढ़ी हो गई। वे एक पर एक पानी में जा गिरे। केवल लुकियानिच नहीं गिरा। उफ! पानी कितना ठंडा था, जैसे एकदम बरफ हो। सेर्योझा की नाक, कान, मुँह—यहाँ तक कि पेट के अन्दर भी ठंडा पानी सर-सर घुसने लगा, वह चिल्ला भी न सका। वह भींग जाने से भारी हो गया। उसे लगा जैसे कोई उसे नीचे दबोचता जा

रहा है! वह बहुत डर गया, इतना डर आज तक उसे जीवन में कभी नहीं लगा था। चारों ओर अँधेरा छा गया। इस तरह वह कब तक गोते लगाता रहा—कौन जाने! अचानक जैसे किसी ने उसे ऊपर खींच लिया।

बड़ी मुश्किल से आँखें खोलने पर उसने देखा—नदी ठीक उसके सामने है। थोड़ी दूरी पर किनारा भी दिखायी पड़ता है। अब अँधेरा भी नहीं है, सूरज की किरणों से सभी चीजें चमक रही हैं। उसके पेट के भीतर का पानी गड़-गड़ाकर बाहर निकल आया और तब वह साँस ले सका। नदी का किनारा भी धीरे-धीरे जैसे उसके एकदम नजदीक पहुँच गया और तब ठण्ढक से काँपते-काँपते घुटने के बल उठ वह जमीन पर बैठ गया। वास्का ने उसके बाल पकड़कर नदी से बाहर खींचा है। लेकिन उसके बाल यदि इतने बड़े-बड़े न होते तो क्या होता? फीमा तैरना जानती थी इस लिए वह तैरकर बाहर आ गयी और नाद्या को लुकियानिच ने बचा लिया। लेकिन लुकियानिच जब नाद्या को खींचकर बाहर निकाल रहा था तभी नाव भी बेलाग तैरती हुई दूर चली गयी। नदी के ढलाव पर सामूहिक खेती के कुछ लोगों ने नाव देख लुकियानिच के दफ्तर में टेलीफोन से खबर कर दी। उस दिन से फिर कभी लुकियानिच उन लोगों को नाव में बैठा घुमाने नहीं ले गया। ले चलने के लिए कहते ही बोल उठता, "बाप रे बाप! फिर तुम लोगों को ले जाऊँगा?

मुझे काफी सीख मिल गयी है!"

दिन भर इसी तरह की कितनी ही घटनाओं के बाद,कितनी चीजें देखने-सुनने के बाद सेयोंझा थक जाता। शाम होते ही उसके मुँह से बातें नहीं निकलतीं। उसकी दोनों आँखें झपकने लगती थीं। उसके हाथ-पाँव धो, खाना खिला और रात की पोशाक पहना वे उसे लेटा देते और उसे पता तक भी नहीं चलता। नरम तकिये पर आराम से सिर रख दोनों छोटे-छोटे हाथों को दो तरफ फैला एक पाँव सीधा और दूसरा मोड़कर वह सो जाता। उसके लम्बे-लम्बे बाल सलोने मुखड़े पर इधर-उधर बिखर जाते। साँड़ की तरह उसकी दोनों भौंहें तनी-सी दीखतीं। फूल की पंखुड़ियों की तरह बड़ी-बड़ी आँखों की पपनियाँ सीधी हैं। मुँह थोड़ा-सा खुला है, आँखों पर नींद की खुमारी छाई है, सांस चल रही है या नहीं—यह भी मालूम नहीं होता। छोटा-सा बच्चा चुपचाप फूल की तरह सोया पड़ा है, उसके कान के पास जोरों से नगाड़ा बजाओ, बन्दूक छोड़ो, मगर वह जागेगा नहीं। वह कुछ जान भी नहीं पायेगा। अगले दिन सबेरा होते ही उसे फिर जिन्दा रहने के लिये संग्राम करना पड़ेगा—इसीलिये तो वह अभी जी भर सो ले रहा है...'

घर में परिवर्तन

एक दिन माँ ने उससे कहा, "सेयोंझा, सुनो......... मैं

सोचती हूँ, तुम्हारे पिताजी हों तो अच्छा हो।"

सेयोंभा ने आँखें उठा माँ की ओर देखा। ऐसा विचार तो उसके मन में कभी आया तक नहीं। उसके साथियों में बहुतों के पिता हैं, और बहुतों के नहीं भी हैं, उसके पिता भी लड़ाई में मारे गये हैं। उन्हें उसने कभी देखा भी नहीं, केवल उनका चित्र देखा है। उसी चित्र को माँ कभी-कभी चूमती है और उसे भी चूमने को देती है। माँ की गरम सांसों से चित्र के धुँधले शीशे को उसने कई बार चूमा है लेकिन चित्र के पिता को वह जरा भी प्यार न कर सका। केवल चित्र में देखकर क्या किसी को प्यार किया जा सकता है?

और आज माँ यह क्या कह रही है? माँ के दोनों घुटनों के बीच खड़ा होकर सेयोंभा भौचक्का हो उसकी ओर देख रहा था। माँ का मुँह न जाने क्यों लाल हो उठा था, पहले दोनों गाल, फिर ललाट, कान, सब लाल हो उठे। माँ ने अपने घुटनों के बीच उसे कसकर पकड़ उसके सिर को चूम लिया। अब वह माँ का मुँह देख नहीं पा रहा था, केवल माँ की आस्तीन की नीली जमीन पर सफेद धब्बे ही उसे दिखाई पड़ रहे थे। माँ धीरे से बोली, "पिता के होने से अच्छा होता, क्यों सेयोंभा?"

सेयोंभा ने भी धीरे से कहा, "हूँ...." लेकिन क्या सच-मुच! और वह यही सोच रहा था। माँ को खुश करने के लिए उसने उसकी हाँ में हाँ मिला दिया। फौरन वह सोचने बैठ

गया, पिता का होना अच्छा है। नहीं, नहीं न होना ही अच्छा है····? कौन-सा अच्छा है? तिमोखिन जब उन सब
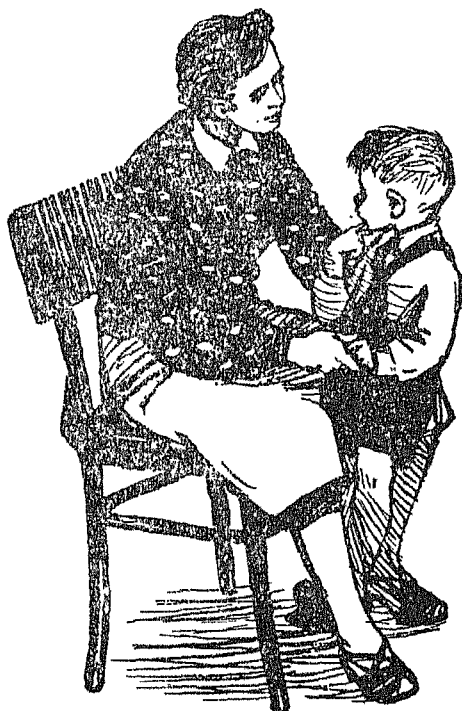
को अपनी लारी पर बैठा घुमाने ले जाता है तो केवल शुरिक ही उसके पास—लारी के सामनेवाली सीट पर बैठ पाता है। वे इसके लिए उससे डाह करते हुए भी कुछ बोल नहीं पाते क्योंकि तिमोखिन शुरिक का बाप जो है। लेकिन फिर भी शुरिक के शरारत करने पर तिमोखिन उसे मारता है। तब शुरिक

रोते-रोते जब आँख-मुँह फुला लेता है तो उसे खुश करने के लिए सेर्योझा को अपने सभी खिलौने भी दे देने पड़ते हैं। खैर जो हो…… फिर भी पिता का होना ही अच्छा है। कुछ दिन पहले वास्का के चिढ़ाने पर लीदा ने कहा था, "मेरे तो पिता हैं, तुम्हारे तो नहीं हैं। दूर……"

सेर्योझा ने अचानक माँ के सीने से अपना सिर हटा वहाँ हाथ रखकर पूछा, "वहाँ क्या धकधक कर रहा है माँ ?"

माँ ने मुस्कुराते हुए उसे कसकर दबा लिया और फिर चूमते हुए कहा, "यह मेरा दिल है।"

सेर्योझा सिर नीचे कर माँ की छाती पर अपना कान रखते हुए बोला, "मुझे भी दिल है ?"

"हाँ, तुम्हें भी है।"

"कहाँ है ? मैं तो अपने दिल की धड़कन सुन नहीं पाता !"

"तुम न सुन पाओ, मगर धड़कन ठीक हो रही है। धड़कन न होने से कोई जिन्दा नहीं रह सकता।"

"क्या वह हमेशा वैसे ही करता रहता है ?"

"हाँ।"

"क्या तुम मेरे दिल की धड़कन सुन पाती हो ?"

"हाँ, सुन पाती हूँ और तुम भी हाथ रखकर जान सकते हो। लो, यहाँ हाथ रखो"—माँ ने उसका हाथ पकड़ उसकी छाती पर रखते हुए कहा, "समझ रहे हो ?"

"हाँ—ओह, खूब जोर-जोर से धड़क रहा है। क्या वह बहुत बड़ा है।"

"जरा मुट्ठी बाँधो तो! बस, वह इसी मुट्ठी की तरह बड़ा है। समझे?" अचानक न जाने क्या सोच, माँ की गोद से अपने को मुक्त कर सेर्योझा दौड़ पड़ा। माँ ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

"अभी आता हूँ।"

वह दौड़कर रास्ते पर आ गया और वास्का तथा फ़ेंका को देखते ही उनके पास जा छाती की बाईं ओर हाथ रख बोला, "देखो, देखो, यहाँ पर मेरा दिल है। मैं हाथ रख-कर इसका अनुभव कर लेता हूँ, तुम लोग भी हाथ रखकर देखो...न!"

"दुत! तुम्हारा दिल! वह तो सब को है।" वास्का ने गम्भीर होकर जानकार की तरह कहा। फ़ेंका आगे बढ़ उसकी छाती पर हाथ रखते हुए बोला, "यह बात है!"

सेर्योझा ने इस बार पूछा, "समझ रहे हो?"

"हूँ।"

"वह मेरी मुट्ठी की तरह बड़ा है!"

"किसने कहा?"

"माँ ने।" अचानक माँ की बात याद आते ही वह बोल उठा, "जानते हो, मेरे पिता आ रहे हैं।" लेकिन वास्का और फेंका ने उसकी बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। वे

औषधि के लिए न जानें कैसी-कैसी जड़ी बूटियाँ लिये चले जा रहे थे। उन्हें किसी दूकान में बेंच जेब खर्च के लिए कुछ पैसे जुटायेंगे। दो दिनों से इन जड़ी-बूटियों को ढूँढ़ते फिर रहे हैं। वास्का ने अपनी माँ से अपनी जड़ी-बूटियों को धो-पोंछ साफ कर कपड़े में लपेट देने को कह दिया था, किन्तु झेंका की माँ नहीं थी। उसकी मौसी और बहन भी अपने-अपने कामों में व्यस्त थीं। इसलिए वह अपनी जड़ी-बूटियों को गन्दे तरीके से एक गठरी में बाँधे लिये जा रहा था। लेकिन उसकी जड़ी-बूटियाँ वास्का से बहुत अच्छी और अधिक थीं। इसीलिये अपनी पीठ पर उन जड़ी-बूटियों का बोझ लादे वह झुका-सा चल रहा था। सेर्योझा दौड़कर उनके निकट जा कातर स्वर में बोला, "मैं भी तुम लोगों के साथ जाऊँगा।"

"नहीं, तुम घर जाओ। हम काम से जा रहे हैं"—वास्का गम्भीर स्वर में आदेश देने के ढंग से बोला। सेर्योझा ने फिर कहा, "सिर्फ तुम्हारे साथ जाऊँगा।"

"नहीं, नहीं, कहता हूँ—घर जाओ। यह कोई खेल नहीं है। तुम्हारे जैसे लड़के-बच्चे वहाँ नहीं जाते, समझे?" वास्का ने फिर धमकाया। सेर्योझा अब रुक गया। उसके दोनों होंठ अभिमान से काँप रहे थे। लेकिन नहीं, वह रोयेगा नहीं......लीदा पास ही में है, वह आकर चिढ़ायेगी, कहेगी कैसा रोना लड़का है। फिर भी वह आकर पूछ ही तो बैठी, "वे

तुम्हें शायद नहीं ले जायेंगे ?"

सेर्योझा आँखें पोंछकर बोला, "मैं उन लोगों से अधिक जड़ी-बूटियाँ जमा कर सकता हूँ। मैं जड़ी-बूटियों का आकाश से भी ऊँचा ढेर लगाऊँगा, तुम देख लेना !" लीदा हँसी से लोट-पोट होकर बोली, "आकाश से भी ऊँचा ? जरा लड़के की बात तो सुनो ! अरे बुद्धू , आकाश से भी ऊँचा कुछ हो सकता है ?"

"मेरे पिता आ रहे हैं, देखना अगर मैं न कर सका तो वे जरूर करेंगे।"

"यह तो एक गप्प है। तुम्हारे पिता नहीं आयेंगे और आने से ही क्या हुआ, ऐसा तो वे भी नहीं कर सकते।"

सेर्योझा ने आकाश की ओर देखा। क्या सचमुच कोई जड़ी बूटियों का आकाश से ऊँचा ढेर नहीं लगा सकता ? सेर्योझा यह सोचता ही जा रहा था। लीदा, न जाने किस तरह, दौड़कर घर गयी और एक रूमाल जिसे उसकी माँ कभी-कभी सिर में या गले में लपेटे रहती है—ले आई और दोनों हाथों को हिला गाना गाती ठुमक-ठुमक कर नाचने लगी। सेर्योझा अचरज से उसे देखता रहा।

लीदा ने कहा, "नाद्या खूब कहानियाँ सुना सकती है ? वह बैले में नाच सीखने जाती है।" थोड़ा नाचकर फिर बोली, "मास्को और लेनिनग्राद के बैले में नाच सिखलाया जाता है।" कहते-कहते सेर्योझा की आँखों में विस्मय और प्रशंसा की

झलक देख लीदा ने नाच रोककर हँसते हुए पूछा, "क्या देखते हो ? तुम भी नाचोगे क्या ? मुझे देख-देखकर नाचो न।" सेर्योझा उसकी नकल करने लगा, लेकिन रूमाल के बिना कैसे नाचा जा सकता है ? लीदा उसे गाने को कहती है। लेकिन गाना गाने पर भी तो ठीक वैसा नहीं हो पाता।

"जरा रूमाल दो न मुझे"—कातर स्वर में उसने कहा। लेकिन लीदा ने उसकी बात सुनकर भी अनसुनी कर दी। ठीक इसी समय सेर्योझा के घर के फाटक पर एक गाड़ी आकर रुकी। गाड़ी से उतर एक महिला के आगे बढ़ते ही पाशा मौसी भी अन्दर से निकल आई।

"यह लीजिये, दिमित्री कोर्नेइयेविच ने यह सब भेजा है," उस महिला ने कहा। एक सूटकेस, किताबों का एक बंडल और एक मोटी भूरे रंग की चीज उसमें लपेटी हुई थी। वह शायद फौजी कोट था। वे दोनों मिलकर सामान को अन्दर ले गयीं। माँ खिड़की से एकबार झाँक न जाने कहाँ खिसक गयी। वह महिला मुस्कुराकर बोली, "बस यही, यह तो कोई खास दहेज नहीं है।"

मौसी दुखित स्वर में बोली, "कम से कम एक कोट तो नया खरीद ही सकता था।"

"खरीदेगा जी, खरीदेगा। देखना, समय के मुताबिक सब कुछ खरीदेगा। लो, यह चिट्ठी उसे दे देना।" एक चिट्ठी

मौसी के हाथ में रख महिला गाड़ी में जा बैठी और चल पड़ी। अब सेर्योझा 'बेतहाशा' दौड़ता घर के अन्दर आ गया और चिल्लाना शुरू किया, "माँ, माँ, देखो, करोस्तेलेव ने अपना फौजी कोट भेजा है।"

(दिमित्री कोर्नेइयेविच करोस्तेलेव उनके घर अक्सर आता रहता था। सेर्योझा के लिए वह कितने खिलौने और खाने की चीजें लाता था। उसका फौजी कोट कितना बड़ा था, और उसमें पट्टी तक भी नहीं। सेर्योझा उसके इस भद्दे नाम का किसी प्रकार भी उच्चारण नहीं कर पाता। इसलिये वह केवल करोस्तेलेव कहकर ही पुकारता था।)

वह फौजी कोट अब खूँटी पर झूल रहा था। माँ ध्यान से चिट्ठी पढ़ रही थी। उसकी बात का कोई भी उत्तर नहीं दिया। पूरी चिट्ठी पढ़ लेने के बाद बोली, "हाँ, यह मैं जानती हूँ। अब वे हमारे यहाँ ही रहेंगे सेर्योझा। वही तुम्हारे पिता होंगे।"

माँ ने फिर चिट्ठी पढ़ना शुरू किया। "पिता" शब्द से जिसकी तस्वीर सेर्योझा की आँखों में तैरने लगती है वह कैसा अनजान है, अपरिचित है। किन्तु करोस्तेलेव तो उनके बहुत दिनों के पुराने मित्र हैं। मौसी और लुकियानिच तो उन्हें 'मित्या' कहकर पुकारते हैं। माँ यह सब क्या अनाप शनाप बक रही है? अचानक यह प्रश्न कर बैठा, "आखिर क्यों?"

"धत्! दुष्ट कहीं का मुझे चिट्ठी पढ़ने नहीं देगा क्या?" माँ झुँझलाकर बोली। चिट्ठी पढ़ लेने के बाद भी माँ ने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। व्यस्त-सी केवल इधर-उधर करने लगी। किताबों का बंडल खोल उन्हें कपड़े से पोंछ ताक पर सजाकर रख दिया। साफ-सुथरे घर आँगन को फिर एकबार साफ किया। झकाझक फर्श को फिर से धो-पोंछकर माँ घर को सजाने लगी। पर्दा, मेजपोश—सब बदल बगीचे से फूलों का एक गुच्छा ले आयी और उसे टेबुल के ऊपर फूलदानी में रखा। इसके बाद रसोईघर में जा पिट्ठे तैयार करने लगी।

मौसी मैदे की लोई बना-बना माँ की सहायता कर रही थी, सेर्योझा भी मैदे की लोई तथा मुरब्बा ले पिट्ठे बनाने बैठ गया। इसके बाद करोस्तेलेव के आने पर सब कुछ भूल दौड़कर उसके पास गया और खुशी से चिल्ला उठा, "जानते हो तुम्हारे लिये मैंने पिट्ठे तैयार किये हैं।" करोस्तेलेव ने झुक-कर दोनों हाथों से उसे जकड़ लिया और बहुत देर तक उसको चूमता रहा। सेर्योझा ने सोचा—अब मेरा बाप बना है इसीलिये आज मुझे इतनी देर तक चूमता रहा। करोस्तेलेव ने अब घर में प्रवेशकर सूटकेस से माँ का एक चित्र निकाल हथौड़ी और काँटी ले सेर्योझा के कमरे की दीवाल पर ठोक-ठोककर टाँगने लगा। थोड़ी देर बाद माँ भी कमरे में आई और मीठी मुस्कान के साथ बोली, "इसकी अब क्या जरूरत

है। अब तो मैं खुद हमेशा तुम्हारे पास रहूँगी।"

करोस्तेलेव ने माँ का हाथ अपने हाथ में ले लिया और दोनों ही सटकर खड़े हो गये। लेकिन उसपर नजर पड़ते ही दोनों झट से अलग हो गये। माँ घर से बाहर हो गयी और करोस्तेलेव कुर्सी पर बैठ उसकी ओर देखते हुए हँसकर बोला, "अच्छा सेर्योझा, मैं तो अब तुम लोगों के साथ रहने आया हूँ, तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है न ?"

"हमेशा रहोगे ?"

"हाँ, हमेशा।"

"मुझे मारोगे तो नहीं ?"

करोस्तेलेव चौंक उठा। बोला, "क्यों, मारूँगा क्यों ?"

"अगर मैं शरारत करूँ ?"

"नहीं, मेरा ख्याल है, शरारत करने पर भी बच्चों को मारना-पीटना बेवकूफी है।"

"हाँ, ठीक कहते हो, मारने से रूलाई आती है, आती है न ?" सेर्योझा जैसे बहुत खुश हो उठा।

करोस्तेलेव ने फिर कहा, "हम दोनों एक दूसरे को समझने की कोशिश करेंगे, क्यों ?"

"तुम सोओगे कहाँ ?" सेर्योझा ने इसबार दूसरा प्रश्न किया।

"लगता है इसी घर में सोऊँगा। हाँ, सुनो, अगले रविवार को सबेरे तुम और मैं एक जगह चलेंगे। कहाँ, बोलो तो ?

खिलौने की दूकान पर, तुम्हारी जो इच्छा होगी, खरीद लेना, समझे ?"

"सच ? तब मुझे एक साइकिल चाहिये। रविवार के आने में अब कितनी देरी है, बोलो तो ?"

"अब देरी नहीं है।"

"कितने दिन और हैं ?"

"कल शुक्रवार है। परसों शनिवार और तरसों ही तो रविवार।"

"दुत्, अभी भी इतनी देरी है ?" सेर्योझा हताश होकर बोला।

इसके बाद तीनों—सेर्योझा, माँ और करोस्तेलेव खाने बैठे। पाशा मौसी और लुकियानिच कहीं घूमने चले गये थे। अब सेर्योझा को बड़ी नींद आ रही थी। उसकी आँखें झप-कने लगी थीं। बत्ती के चारों ओर भूरे पतिंगे मँडराकर मेजपोश पर गिर पड़ते थे और पंख झर-झरकर बिखर जाते थे। उन्हें देख उसे जैसे और भी नींद आ रही थी। अचानक उसने देखा उसकी खाट करोस्तेलेव कहीं उठाये ले जा रहा था।

"मेरी खाट कहाँ ले जा रहे हो ?" सेर्योझा पूछ बैठा। माँ झट से बोल उठी, "तुम सो जो रहे हो ? जाओ, हाथ-पाँव धो लो।"

सबेरे नींद टूटने पर वह समझ ही नहीं पा रहा था कि

कहाँ है। दो की जगह तीन खिड़कियाँ क्यों दिखलायी पड़ रही हैं और वह भी उसके बिस्तरे की विपरीत दिशा में क्यों? पर्दे भी तो एकदम दूसरे किस्म के हैं? तब यह क्या·······हाँ, अब समझ गया—कल मौसी के घर में ही वह सोया था। यह घर भी बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया था। खिड़की के ऊपर फूलदानी में गुलदस्ता रखा था। आइने के पीछे मोर की पूँछ का झाड़न झूल रहा था। मौसा-मौसी के बिस्तरे भी लपेट एक पर एक रखे हुए थे। खुली खिड़की से सुबह की सुनहली किरणें घर के अन्दर आँखमिचौली खेल रही थीं। सेयोंझा अब सब कुछ समझ गया। बिस्तरे से झट से उठ रात की पोशाक उतार दी और पैन्ट पहन खाने के घर की ओर चल पड़ा। घर के सामने आकर देखा—घर का दरवाजा अभी भी बन्द था। बाहर से दरवाजे की मूठ घुमाने की कितनी ही कोशिश की मगर दरवाजा खुला नहीं। उसके सारे खिलौने उसी घर में जो हैं—इसलिये अन्दर गये बिना काम नहीं चल सकता। उसकी छोटी-सी नयी कुदाल भी है उसी घर में। अचानक उसकी ऐसी इच्छा हो उठी कि वह फौरन कुदाल ले बगीचे में मिट्टी खोदने चला जाय।

सेयोंझा माँ को पुकारने लगा, "माँ, माँ, दरवाजा खोलो।" दरवाजा उसी तरह बन्द रहा। भीतर एकदम शांति। फिर जी-जान से चिल्लाने लगा, "माँ! माँ!! माँ·······!!!"

मौसी न जाने कहाँ से दौड़कर आ पहुँची और उसे पकड़

रसोईघर की ओर ले गयी। धीरे से वह बोली, "यह क्या हो रहा है ? इतना चिल्लाते क्यों हो ? छिः ऐसा नहीं करते ! तुम अभी भी एकदम बच्चे हो क्या ? माँ सो रही है, उसे जगा क्यों रहे हो ?"

"मैं अपनी कुदाल लूँगा।"

"लोगे न ! कहीं भागी थोड़े ही जा रही है ? माँ के उठते ही ले लेना। अभी समझदार लड़के की तरह इस गुलेल से ही खेलो बेटा। गाजर खाओगे ? यह लो, खुद ही धोकर इसे खाओ। लेकिन समझदार लड़के खाने के पहले हाथ-पाँव धो लेते हैं, जानते हो न ?"

आदरपूर्वक कोई बात कहने पर सेर्योझा पर बड़ा असर पड़ता था, वह उसकी बात अनसुनी नहीं कर सकता। शान्त लड़के की तरह मौसी के हाथ से हाथ-पाँव धो उसने एक प्याला दूध पिया। उसके बाद हाथ में गुलेल ले बाहर चला आया। वह देखो ! रास्ते के दूसरी तरफ टट्टर पर एक गौरैया बैठी है। अच्छी तरह निशाना साधे बिना ही उसने गोली दाग दी। चिड़िया फुर्र से उड़ गयी। लेकिन वह हर बार निशाना साधे बिना ही गोली दागता था। वह जानता है कि कारण चाहे जो भी हो उसका निशाना कभी भी ठीक नहीं बैठता। निशाना साध गोली दागने पर भी निशाना अगर चूक गया तो लीदा उसे चिढ़ाकर पागल बना देती। इसलिये वह जहाँ-तहाँ, जैसे-तैसे ही गोली छोड़ना पसन्द करता था।

उधर शुरिक अपने घर के सामने दरवाजे पर खड़ा था। सेर्योझा को देख वह बोला, "चलो, हम लोग जरा जंगल से घूम आयें।"

"दुत! जंगल की ऐसी-तैसी, मैं नहीं जाता जंगल!"

दरवाजे के सामने बेंच पर सेर्योझा पाँव लटकाकर बैठ गया। उसका मन फिर न जाने कैसा-कैसा हो गया! आँगन से होकर आते समय उसने देखा था,उसके कमरे की खिड़कियाँ बन्द थीं लेकिन उस समय उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। अभी अचानक उसे याद आया, गरमी के मौसम में तो उसके कमरे की खिड़कियाँ इस तरह कभी बन्द नहीं रहती थीं। केवल जाड़े में जब चारों ओर बरफ गिरती रहती है तभी इस तरह खिड़कियाँ-दरवाजे बन्द रहते हैं। आज यह क्या हुआ? खिलौने निकालने का तो कोई उपाय ही नहीं। लेकिन इसी क्षण खिलौने लाने के लिए उसका मन उतावला क्यों हो उठा? उसकी इच्छा होती है कि जमीन पर लोट फूट-फूट कर रोये। वह क्या पहले की तरह अब छोटा है? इसलिये अब तो जमीन पर लोटकर रोते भी नहीं बनता। लेकिन बड़ा होने से ही क्या हुआ? मन तो मानता नहीं। उसे फौरन अपनी कुदाल की जरूरत है। माँ और करोस्तेलेव तो कुछ समझते ही नहीं। वह सोचने लगा—उन लोगों के उठते ही वह अपने सारे खिलौने उस कमरे से मौसी के कमरे में ले आयेगा। दराज से घर बनानेवाला ब्लाक भी वह लाना न भूलेगा।

वास्का और फ़ेंका उसके सामने आकर खड़े हो गये। लीदा भी नन्हे विक्तर को गोद में लिए खड़ी थी। वे सभी सेर्योझा

की ओर अचरज से देख रहे थे। वह कुछ बोला नहीं, सिर्फ पाँव हिलाने लगा। फ़ेंका ने पूछा, "क्या हो गया है तुम्हें ?"

वास्का ने उत्तर दिया, "जानते नहीं, इसकी माँ ने फिर से ब्याह किया है।"

सभी खामोश हो गये। थोड़ी देर बाद भेंका ने फिर पूछा, "किससे ब्याह किया है ?"

वास्का बोला, "ब्राइटशोर के डायरेक्टर करोस्तेलेव से। पिछली मीटिंग में उसे कितनी फटकार मिली थी !"

'क्यों ? जरा सुनूँ !" भेंका ने फिर पूछा।

"कोई कारण तो जरूर था" कहकर वास्का ने अपनी जेब से सिगरेटों का एक टेढ़ा-मेढ़ा डिब्बा निकाला। भेंका बोल उठा, "एक मुझे भी दो।"

"सिर्फ दो ही तो हैं" कह वास्का ने एक सिगरेट खुद लिया और दूसरा भेंका के आगे बढ़ा दिया। इसके बाद अपना सिगरेट सुलगा भेंका को दियासलाई की जलती काठी दे दी। सूरज की चमकती किरणों में छोटी-सी दियासलाई की काठी की लौ बिलकुल दिखलाई ही नहीं पड़ती थी। सिगरेट का धुआँ कैसी सुन्दर कुँडलियाँ बनाता निकल रहा था। दियासलाई की काठी जमीन पर बुझकर टेढ़ी और काली हो गयी। रास्ते के इस तरफ जहाँ वे खड़े थे सूरज की किरणें झिलमिला रही थीं। लेकिन दूसरी तरफ अभी भी धूप नहीं आयी थी। उस तरफ के टट्टरों पर बिच्छू के पत्तों पर अभी भी शबनम की बूँदें चमक रही थीं। रास्ते की धूल पर गाड़ी के पहिये के टेढ़े-मेढ़े निशान थे। लगता था इस रास्ते से

कोई ट्रैक्टर ले गया है। सेर्योझा देख रहा था और सोच रहा था—कैसी विचित्र बात है!

लीदा ने शुरिक को बुलाकर कहा, "जानते हो, सेर्योझा का मन खराब है। उसे नये पिता मिले हैं न!"

वास्का ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, "नहीं, नहीं, इसके लिए तुम इतनी फिकर मत करो। आदमी तो अच्छा ही जान पड़ता है। तुम पहले जैसे थे वैसे ही बने रहो। उससे तुम्हें क्या?"

सेर्योझा अचानक पिछली रात की बात याद आते ही बोल उठा, "जानते हो, उसने मेरे लिये एक साइकिल खरीदने को कहा है।"

वास्का बोला, "सच? या यों ही सिर्फ वादा किया है?"

"सच। हम दोनों अगले रविवार को दूकान जायेंगे। शनिवार के बाद ही तो रविवार है।"

झेंका बोला, "दो पहियेवाली साइकिल तो? या तीन पहियेवाली बच्चों की साइकिल?"

वास्का इस बार अक्लमन्द की तरह बोल उठा, "नहीं, बच्चों की साइकिल मत लेना। तुम तो बड़े हो रहे हो। अब दो ही पहियेवाली साइकिल अच्छी रहेगी।"

लीदा इतनी देर बाद बोली, "दुत् बातें बना रहा है। साइकिल-फाइकिल नहीं देगा।"

शुरिक बोल उठा, "मेरे पिता ने भी साइकिल देने को कहा

है। अगले महीने में तनखाह पाते ही खरीद देंगे।"

करोस्तेलेव के साथ प्रथम दिन

बगीचे में लोहे की खड़खड़ाहट सुन सेर्योझा ने उस ओर देखा। करोस्तेलेव बगीचे के अन्दर खड़ा हो सिट-किनी खोल रहा था। उसके बदन में धारीदार कमीज और गले में नीली टाई थी। भीगे-भीगे बाल अच्छी तरह सँवारे हुए थे। उसने जैसे ही सिटकिनी खोली, माँ खिड़की खोलते हुए न जाने क्या बोली। खिड़की की ताक पर कुहनी रख करोस्तेलेव ने जवाब दिया।

खिड़की से अपने को जरा बाहर निकाल उसने दोनों हाथों से उसका सिर पकड़ लिया। वे देख ही न पाये कि लड़के रास्ते से उन्हें देख रहे हैं। सेर्योझा इस बार दौड़कर आँगन में गया और बोला, "करोस्तेलेव, मेरी कुदाल दो न!"

"कुदाल?"

"हाँ, मैं अपने सभी खिलौने भी ले जाऊँगा।"

माँ बोली, "अन्दर आकर अपने खिलौने ले जाओ।"

सेर्योझा अन्दर गया, कमरे में चारों ओर कैसी एक विचित्र मीठी सुगन्ध फैल रही थी। साँस लेते ही वह मीठी सुगन्ध उसकी नाक में घुस जाती थी। कितनी तरह की कितनी चीजें इधर-उधर पड़ी थीं। ब्रश, कपड़े, सिगरेट और न जाने क्या-क्या। माँ आइने के सामने खड़ी हो बालों की

वेणी खोल रही थी। फौरन उसकी लटें कमर के नीचे तक लटकने लगीं। सचमुच उसके बाल देखने में कितने सुन्दर थे। उसे देखकर वह बोली, "आओ सेर्योझा।" वह बिना कुछ बोले भौचक्का-सा सिगरेट के डिब्बों की ओर देखता रहा। डिब्बे कितने सुन्दर, कितने चमकदार थे! एक डिब्बा हाथ में ले वह उलटने-पुलटने लगा। वह महीन कागज में लपेटा हुआ था, इसलिये खुल नहीं रहा था।

आइने में उसे देखकर माँ बोली, "रख दो उसे सेर्योझा। तुम अपने खिलौने नहीं लोगे?"

घर बनानेवाला ब्लाक तो आलमारी की दराज के पीछे की ओर थे। इधर-उधर झाँक यह उसे देख तो पाता था लेकिन दराज को और खींचकर खोले, उसके नन्हे-नन्हे हाथ वहाँ तक पहुँच नहीं पा रहे थे। माँ फिर बोल उठी, "क्या हो रहा है? क्या खोजते हो, बोलो न!"

"इसे खींच जो नहीं पा रहा हूँ।" सेर्योझा बोला। इसी समय करोस्तेलेव भी कमरे में घुस आया। उसकी ओर देखकर सेर्योझा बोला, "ये डिब्बे खाली होने पर मुझे दे दोगे?" वह जानता है, सयाने लोग इन डिब्बों के अन्दर जो सफेद चीज रहती है उसे पी लेने के बाद खाली डिब्बे बच्चों को दे देते हैं। करोस्तेलेव ने उसी क्षण एक डिब्बे के सारे सिगरेट निकाल डिब्बा उसके हाथ में देते हुए कहा, "यह लो। खुश हुए तो?"

माँ बोली, "इस दराज में उसका कोई खिलौना है, जरा निकाल देना।"

करोस्तेलेव ने अपने लम्बे-लम्बे हाथों से जब खींचा तो वह पुरानी दराज चरमराकर तुरत खुल गयी। सेयोंझा ने आसानी से ब्लाक निकाल लिया। अरे बाप! इस मजबूत दराज को करोस्तेलेव ने कितनी आसानी से खोल दिया! इसके बाद सेयोंझा अपने सभी खिलौने और ब्लाक को सीने के पास दोनों हाथों से दाबे ले आया और मौसी के कमरे में अपनी खाट और आलमारी के बीच रख दिया। माँ अपने कमरे से पुकारकर बोली, "कुदाल नहीं ले गये! उसीके लिए आये और उसीको छोड़ गये।"

सेयोंझा फिर उस कमरे में घुस कुदाल ले बगीचे में चला आया। नहीं, अभी मिट्टी खोदने की इच्छा नहीं है उसकी। चाकलेट के ऊपर वाले रंगीन कागज के टुकड़ों को उसी चमकते नये डिब्बे में रखने की इच्छा हो रही थी। लेकिन माँ के कहने के बाद बगीचे में थोड़ी भी जमीन नहीं खोदने से भी काम नहीं चल सकता। सेब के पेड़ के नीचे की मिट्टी खूब नरम और भींगी हुई थी। उसने उसी जगह कुदाल को, जितने जोर से संभव हुआ, गड़ा दिया। इसके बाद अपने छोटे हाथों से जमीन की छाती पर कुदाल चलाने लगा। धूप में जलती हुई उसकी भूरी पतली पीठ का एक भाग तथा हाथों की मांसपेशियाँ कुदाल के दबाव से उभर उठी

थीं। करोस्तेलेव सिगरेट पीता हुआ बरामदे में चहलकदमी कर रहा था और उसे देख रहा था।

लीदा विक्तर को गोद में लिये उसके पास आकर खड़ी हो गई। वह बोली, "आओ, फूल के पौधे लगा दें यहाँ। खूब सुन्दर दिखाई पड़ेगा। सेब के पेड़ के सहारे उसने विक्तर को जमीन पर बैठा दिया। किन्तु वह छोटा शिशु एक किनारे लुढ़क गया। लीदा ने झुँझलाकर विक्तर को उठा लिया और डाँटते हुए फिर उसे ठीक से बैठा अच्छी गृहिणी की तरह बोली, "जरा ठीक से बैठ भी नहीं सकता बुद्धू कहीं का? तुम्हारी उमर के बच्चे कितनी अच्छी तरह से बैठते हैं। तुम तो निरे बुद्धू राम हो।"

लीदा ने यह बात खूब जोर से चिल्लाकर कही ताकि करो-स्तेलेव बरामदे से सुन सके। इसके बाद कनखी से करोस्तेलेव को देख गेंदे के फूल के पौधे ला उस नरम मिट्टी में लगाने लगी।

"वाह! देखो, कितना सुन्दर लगता है।" लीदा आनन्द से ताली बजा उठी। इसके बाद लाल, सफेद पत्थर के कितने ही टुकड़े लाकर पौधों के चारों ओर सजा दिया। हाथ से दबा-दबाकर ऊबड़-खाबड़ मिट्टी बराबर कर दी। लीदा के दोनों हाथ कीचड़-मिट्टी से बिल्कुल काले हो गये थे। सेर्योझा की ओर देख वह फिर बोली, "देखो तो, अब कितना सुन्दर लगता है!"

"हाँ, बहुत सुन्दर लगता है," सेर्योझा ने सिर हिलाकर

उत्तर दिया।

"अब बोलो। क्या मेरे बिना तुम इतना सुन्दर कोई काम कर सकते हो?"

इसी समय विक्तर फिर धड़ाम से चित्त हो गिर पड़ा। लीदा उसकी ओर देखकर बोली, "अच्छा हुआ! इसी तरह पड़े रहो, बुद्धू राम!" लेकिन विक्तर जरा भी रोया नहीं। अँगूठे को चूसते हुए ऊपर की ओर भौचक्का-सा केवल पेड़ के पत्तों को देख रहा था। लीदा ने कमर से बेल्ट की तरह बँधी रस्सी खोल बरामदे के सामने आ उछलना शुरू कर दिया। एक, दो, तीन……जोर-जोर से बोलते हुए वह उछलती रही। उसके इस उत्साह को देख करोस्तेलेव हँसते-हँसते घर के अन्दर चला गया।

सेर्योझा ने लीदा की ओर देखकर कहा, "देखो, देखो, बच्चे की देह में किस तरह चींटियाँ लग गयी हैं।" लीदा उछलना छोड़ दौड़कर विक्तर के पास आई और उसे उठा चींटियाँ झाड़ते हुए झुँझलाकर बोली, "ओह, इसने तो तंग-तंग कर दिया। हर वक्त धो-पोंछकर साफ करने पर भी इसकी देह में गन्दगी लगी ही रहती है।"

माँ ने बरामदे से पुकारा, "सेर्योझा, अब इधर आओ। कपड़े बदल लो। हमलोग घूमने जायेंगे।"

सेर्योझा झट से उठ दौड़ पड़ा। घूमने जाना उसे बड़ा अच्छा लगता था। किसी दूसरे के घर जाना तो और भी

अच्छा लगता था। वे उसे खाने के लिए मिठाई देते हैं और खिलौने देते हैं! माँ ने कहा, "हमलोग तुम्हारी नानी को देखने जा रहे हैं, समझे?" कहाँ, किसके घर जा रहे हैं, यह जानने से उसे कोई मतलब नहीं, बस कहीं भी, घूमने जाना चाहिये।

इस नानी को उसने जहाँ-तहाँ कई बार देखा था। वह देखने में बड़ी गंभीर और कठोर है। एक सफेद बूटीदार रूमाल उसकी ठोड़ी से सिर तक हर वक्त बँधा रहता है। कभी-कभी वह गले में तमगा पहनती है। तमगे के ऊपर लेनिन का चित्र भी खुदा था। उसके हाथ में हमेशा एक काला बैग रहेगा ही। उसमें से चाकलेट निकाल उसने कई बार उसे दिया है। किन्तु इससे पहले वे कभी नानी के घर नहीं गये थे।

आज इन तीनों ने ही सबसे सुन्दर पोशाक पहन लीं। रास्ते पर आकर करोस्तेलेव और माँ ने उसके हाथ पकड़ लिये और चलने लगे। लेकिन जल्दी ही उसने उन लोगों से अपने हाथ छुड़ा लिये और खुद ही चलना शुरू किया।

खुद चलने में कितना मजा है! रास्ते के दोनों ओर कितने प्रकार की कितनी चीजें देखी जा सकती हैं। मन में आया तो उनसे बहुत आगे बढ़ गये और नहीं तो उनके पीछे-पीछे ही चलते रहे। इञ्जिन की तरह फटफटाते हुए रास्ते के बाएँ किनारे घास की फुनगी तोड़ मुँह में रख सिटी बजाते हुए जैसी मर्जी हो, चलो। रास्ते पर शायद किसी का खोया हुआ

पसा भी मिल जाय। बड़ों का हाथ पकड़कर चलने से क्या, यह सब किया जा सकता है ? नहीं, इसमें कोई मजा नहीं है। उनका हाथ पकड़कर चलने से हाथ तो कुछ ही देर में पसीने से तर हो जायेगा और तब राह चलने में कोई मजा ही नहीं आयेगा।

इसके बाद वे बड़े रास्ते पर के एक छोटे घर में घुसे। जैसा घर छोटा था वैसा ही आँगन भी। रसोईघर से होकर वे जैसे ही अन्दर पहुँचे, नानी ने आगे बढ़ उन लोगों का स्वागत किया। नानी बोली, "आओ, आओ, सुख से रहो, मेरा आशीर्वाद लो।"

यह सुनते ही सेर्योझा सोचने लगा, आज जरूर छुट्टी का दिन है। पाशा मौसी की तरह सेर्योझा भी बोला, "तुम भी लो।" बैठने के कमरे में घुस सेर्योझा ने चारों ओर देखा, कहीं भी कोई खिलौना नहीं था; यहाँ तक कि कमरे को सजाने के लिए गुड़ियाँ भी नहीं थीं, कोई अच्छी चीज नहीं थी, केवल खाने और सोने के लिए एक-सी कितनी ही अंटसंट चीजें इधर-उधर पड़ी थीं। नानी की ओर देखकर वह बोला, "तुम्हारे यहाँ कोई खिलौना नहीं है ?" (शायद खिलौने या गुड़ियाँ कहीं दूसरी जगह छिपा रखी हों)।

नानी बोली, "नहीं, खिलौने-फिलौने मेरे घर में नहीं हैं बेटे। तुम्हारी तरह यहाँ कोई बच्चा तो है नहीं ! आओ, तुम्हारे लिए मिठाई रखी है, लो खाओ।"

टेबुल पर ढेर-सा पिट्ठा और एक लाल काँच के बर्तन में केक के साथ टाफियाँ भी रखी थीं। कुर्सियाँ खींचकर टेबुल के किनारे-किनारे सभी बैठ गये। करोस्तेलेव ने बैठते ही एक बोतल का मुँह खोलकर गिलास में गाढ़े लाल रंग की शराब उड़ेल ली। माँ बोली, "लेकिन सेयोंझा यह सब नहीं खायेगा।"

हमेशा ऐसा ही होता था। वे खुद हमेशा यह रंगीन पानी खूब मौज से पीते थे, लेकिन उसे कभी भी नहीं देते थे। कोई अच्छी चीज घर में आने पर उसे खाने नहीं दिया जाता। यह तो वह हमेशा से देखता आ रहा है।

लेकिन आज करोस्तेलेव ने कहा—"सोचता हूँ, थोड़ा-सा उसे भी दूँ।" एक छोटे-से गिलास में थोड़ा-सा उड़ेलकर उसे दिया। सेयोंझा सोचने लगा, तब तो करोस्तेलेव के साथ अच्छी तरह से रहा जा सकता है।

सबने अपना-अपना गिलासों को एक दूसरे से बजा लिया। सेयोंझा ने भी अपना छोटा गिलास उनके गिलासों से बजा लिया।

उन लोगों के साथ आज एक और आदमी—नानी भी थी। वह सिर्फ नानी ही नहीं—परनानी भी थी। उसे पर-नानी कहकर पुकारने का उसे आदेश दे दिया गया था। करोस्तेलेव उसे सिर्फ नानी कहकर ही पुकारता था। लेकिन सेयोंझा को आज वह जरा भी अच्छी नहीं लगती थी।

लाल पानी का गिलास उसे देने पर इसी परनानी ने कहा, "वह मेजपोश पर ही गिरा देगा।"

लेकिन सचमुच, उन लोगों के गिलास से अपना गिलास बजाते समय कई बूँदें मेजपोश पर गिर पड़ीं। तब परनानी बोल उठी, "देखा न? मैंने ठीक कहा था या नहीं?" इसके बाद नमक के बर्तन से थोड़ा-सा नमक लेकर उस भींगी हुई जगह पर रखते हुए गुस्से से बड़बड़ाने लगी। इसके बाद से परनानी एकटक केवल उसे ही देख रही थी। उसकी आँखोंपर चश्मा भी था। वह सिर्फ बुढ़िया ही नहीं बल्कि एकदम थुल-थुली बुढ़िया थी। उसके भूरे हाथों पर झुर्रियाँ और गाँठें पड़ गयी थीं। लम्बी नाक जरा नीचे की ओर झुकी हुई थी और सुन्दर ठोड़ी जरा ऊपर को उठी हुई थी।

लाल पानी सचमुच पीने में कितना मीठा था! एक ही घूँट में वह सब निगल गया। उसे एक तश्तरी में पिट्ठे भी दिये गये। पिट्ठों को उसने तोड़-तोड़कर खाना शुरू किया।

परनानी फिर बोल उठी, "कैसे खाया जाता है, शायद यह भी नहीं जानते?"

इस बात से उसे बड़ी बेचैनी महसूस हुई और वह कुर्सी को ही हिलाने लगा।

बुढ़िया फिर धमका उठी, "शैतान कहीं का, अच्छे लोगों की तरह ठीक से बैठना भी नहीं जानते?"

उसे गरमी महसूस होने लगी। उसकी खूब जोरों से गाने

की इच्छा होने लगी। इसीलिए उसने फौरन गाना शुरू कर दिया।

परनानी बोल उठी, "ओह, इतनी भी अक्ल नहीं है कि कैसे बर्ताव किया जाता है।"

करोस्तेलेव सेर्योझा का पक्ष लेते हुए बोला, "इसे तंग क्यों करती हो? बेचारे को जरा शान्ति से रहने दो!"

परनानी फिर बोली, "जरा सब्र करो न, देखो यह आगे क्या करता है।"

बुढ़िया ने भी यह रंगीन पानी बहुत ज्यादा उड़ेल लिया। उसकी दोनों आँखें चश्मे के अन्दर से चमक रही थीं!

सेर्योझा इस बार चिल्ला उठा, "जाओ हटो, मैं तुम से जरा भी नहीं डरता।"

माँ बोली, "कैसा शरारती है!"

फिर करोस्तेलेव बोला, "तुम लोग बहुत बक-बक कर रही हो, एक ही घूँट तो पी है। अभी-अभी सब ठीक हो जायेगा।

अचानक सेर्योझा अपने छोटे गिलास के ऊपर खाली बोतल को उड़ेलते हुए चिल्ला उठा, "मैं और पिऊँगा, मुझे और दो!" दूसरे हाथ से मेजपोश को जरा खींचते ही सभी बर्तन झनझना उठे। माँ पर नजर पड़ते ही उसने देखा, माँ कितनी अद्भुत दृष्टि से उसे देख रही है। परनानी टेबुल पीटती हुई चिल्ला उठी, "खूब किया, अच्छा किया?" लेकिन सेर्योझा को अभी हिलने की जो इच्छा हो रही थी। इसीलिए उसने

हिलना-डुलना शुरू किया। उसकी आँखों के सामने टेबुल पर पिट्ठे, केक, मिठाइयाँ, गिलास, रकाबियाँ—सब कुछ कैसे हिल रहे हैं। वाह! मजा आ रहा है। माँ, करोस्तेलेव, नानी यहाँ तक कि बुढ़िया पर नानी भी जैसे हिंडोलेवाली कुर्सियों पर बैठी हो। अब सेर्योझा हँसना चाहता था। ही-ही केवल हँसने ही की इच्छा हो रही थी। अचानक उसे सुनाई पड़ा, जैसे कोई गा रहा है। अरे वह तो परनानी ही गा रही है! झुर्रियोंवाले हाथ में चश्मा लिये दोनों हाथ हिला-हिलाकर विचित्र हाव-भाव के साथ कैसे गाती जा रही थी! समुद्र के तट पर जाकर कार्तियूशा ने जो गाना गाया था यह वही गाना था। सुनते-सुनते न जाने कब पिट्ठे पर सिर रखकर सेर्योझा सो गया।

जब नींद टूटी तो देखा—परनानी वहाँ नहीं थी। दूसरे सभी चाय पी रहे थे। वे लोग सेर्योझा की ओर देख जरा मुसकुराये।

माँ ने पूछा, "कैसे हो? अब बिलकुल अच्छे हो न? फिर चिल्लाओगे तो नहीं? ओह! कैसा ऊधम मचा दिया था!"

सेर्योझा भौंचक्का होकर सोचने लगा—यह क्या! मैं चिल्लाया कब? माँ क्या कह रही है अंटसंट?

माँ बैग से एक कंघा निकाल उसके बाल झाड़ने लगी। नानी बोली, "लो, मिठाई खाओ।"

मटमैले पर्दे के पीछे पास के कमरे में कोई खर्राटे ले रहा

था। सेर्योझा ने धीरे से पर्दा हटा झाँककर देखा—अरे बाप रे बाप, यह तो परनानी है, बिस्तरे पर हाथ-पाँव फैलाये खर्राटे ले रही है।

माँ वाले कमरे में आ उन लोगों की ओर देखकर बोला, "चलो घर चलें। अब मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता।"

विदा लेते समय उसने सुना, करोस्तेलेव नानी को माँ कहकर पुकार रहा है। करोस्तेलेव के भी माँ है; यह तो वह अब तक नहीं जानता था। उसका ख्याल था—ये दोनों यूँ ही एक दूसरे को केवल जानते-पहचानते हैं।

अब वे घर के लिए चल पड़े, लेकिन रास्ता बहुत लम्बा और नीरस लग रहा था। सेर्योझा की जरा भी चलने की इच्छा नहीं होती थी। करोतेलेव तो अब उसका पिता है, फिर उसे कंधे पर क्यों नहीं बैठा लेता ? सभी के पिता तो अपने बच्चों को कभी-कभी कंधे पर बैठाकर ले जाते हैं। पिता के कंधे पर बैठने में बच्चों को न जाने, कितना आनन्द मिलता है। गर्व से छाती भी फूल उठती है। पिता के कंधे से इधर-उधर की सभी चीजें स्पष्ट दिखलायी भी पड़ती हैं। इसलिए आखिरकार वह कह ही बैठा, "मेरे पाँव दुख जो रहे हैं!"

माँ बोली, "अब थोड़ी ही दूर है, हम लोग लगभग पहुँच ही गये हैं। इतनी दूर तो अच्छी तरह चल सकते हो।"

लेकिन सेर्योझा ने करोस्तेलेव के सामने जाकर अपने नन्हे हाथों से उसके घुटनों को जकड़ लिया।

माँ धमकाकर बोल उठी, "इतने बड़े हो गये फिर भी गोद में बैठना चाहते हो ? छिः कितनी शर्म की बात है।" लेकिन उसी क्षण करोस्तेलेव ने उसे दोनों हाथों से उठा अपने चौड़े कंधे पर बैठा लिया।

वाह ! कितना ऊँचा लग रहा है वह। लेकिन उसे जरा भी डर नहीं लगता। एक पुरानी मजबूत दराज को जो एक ही झटके में खोल सकता है, वह क्या कभी उसे कंधे पर से गिरा सकता है ? वह निर्भय होकर इधर-उधर देख रहा था। रास्ते के दोनों ओर घरों के आँगन यहाँ तक कि छतों पर क्या हो रहा है, वह सब कुछ देख रहा था। बड़ा मजा है तो ! रास्ते की कितनी मजेदार चीजों को देखता आनन्दपूर्वक कंधे पर बैठा वह चला जा रहा था। उसकी उमर के कितने ही बच्चे पैदल चल रहे थे। उन्हें देखकर उसके मन में उनके लिए जरा भी अफसोस न होता हो यह बात भी नहीं, लेकिन अहंकार से छाती फूल भी उठती था। पिता के कंधे पर चढ़कर उनकी गर्दन से लिपट घर लौटने में कितना मजा है, यह उसने शायद आज पहली बार अनुभव किया।

साइकिल ख़रीदी गयी

रविवार को फिर उसी कंधे पर बैठकर वह साइकिल ख़रीदने चला। रविवार भी जैसे हठात् आ पहुँचा और आते ही सेयोंझा की ख़ुशी का ठिकाना न रहा।

करोस्तेलेव से पूछा, "आज का वादा याद है न ?"

"जरूर याद है, इतनी बड़ी जरूरत की बात क्या भूल सकता हूँ ? कुछ काम करना है, उन्हें कर लूँ तो चलें।"

पर 'कुछ काम करना है' यह बात एकदम गप है। केवल माँ के साथ बैठे-बैठे बातें करने के अलावा उसे कोई काम नहीं और बातें भी कैसी—बिलकुल एक-सी, मूर्खता-पूर्ण! लेकिन ऐसी ही बातें उन्हें अच्छी लग रही थीं, यह साफ मालूम पड़ता था। क्योंकि बातें शुरू करते हैं तो फिर खतम करने का नाम ही नहीं लेते। खासकर माँ तो एक ही बात को बार-बार कह रही थी। कई बार सेयोंझा ने उन्हें अगल-बगल से चुपचाप

देखा, वे धीमे स्वर में सिर्फ एक ही बात बोलते जाते थे। वह केवल भौचक्का होकर सोचता था—कब ये थककर अपनी बकबास बन्द करेंगे।

माँ फुसफुसाकर कह रही थी, "तुम इतने संवेदनशील हो····अपनी सारी अनुभूतियों से सब कुछ समझ सकते हो यह जानकर ही मैं इतनी खुश हूँ····।"

करोस्तेलेव भी मृदु स्वर में उत्तर देता था "सच बात कहने में क्या है ? तुम्हें देखने के पहले इन बातों को मैं दिल स नहीं समझ पाता था। पहले कितनी ही चीजों को नहीं समझ पा रहा था—कब से समझने लगा, बताओ तो सुनूँ ? ठीक समझ रही हो न····" इसके बाद दोनों ने एक दूसरे का हाथ कसकर पकड़ लिया।

माँ बोली, "उस समय मैं छोटी थी, सोचती थी कि खूब सुख से हूँ। उसके बाद लगा जैसे दुःख से मर ही जाऊँगी। लेकिन आज वे सारी बातें सपना मालूम पड़ती हैं।"

करोस्तेलेव के दोनों हाथों के बीच अपना मुँह छिपाकर वह न जाने क्या फुसफुसाकर कहने लगी।

कुछ ही देर बाद उसने माँ को कहते सुना, "मैंने जैसे एक मीठा सपना देखा हो, नींद की खुमारी में सिर्फ एक मधुर सपना। उसके बाद अचानक नींद टूटते ही देखा तुम हो····तुम मेरे पास हो, एकदम पास।"

करोस्तेलेव माँ की बात काटकर बोला, "मैं तुम्हें

प्यार करता हूँ।"

लेकिन माँ उसकी बात पर जरा भी विश्वास नहीं कर पा रही थी। बार-बार केवल पूछती थी, "सच कहते हो ? सच-मुच प्यार करते हो ? जरा बोलो न ?"

"प्यार करता हूँ, दिल से प्यार करता हूँ।"

"सचमुच प्यार करते हो ?"

माँ कैसी है ? एक ही बात को बार-बार क्यों कहती है ? या करोस्तेलेव ही कोई भयानक सौगंध खाकर क्यों नहीं कह देता ? तब तो माँ फिर अविश्वास नहीं कर सकेगी। अब करोस्तेलेव चुपचाप केवल माँ की ओर अपलक देख रहा था। लगता था बात करने की अब उसकी इच्छा नहीं। बात करते-करते अब शायद थक गया था। माँ भी अब उसकी ओर एकदम टकटकी लगाये देख रही थी! ओफ, ये दोनों एक दूसरे को इस तरह और कब तक देखते रहेंगे ? बहुत देर बाद माँ फिर धीरे से बोली, "मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।" यह जैसे कोई नाटक हो। एक ही बात को कितनी बार कितनी तरह से कहा जाता है। वह सोचने लगा, ये लोग यह बकवास कब बन्द करेंगे ? ये चुप क्यों नहीं होते ?

लेकिन वह जानता था कि जब बड़े लोग आपस में बातें कर रहे हों तो उन्हें किसी तरह भी तंग नहीं किया जा सकता। वे यह कतई बर्दाश्त नहीं कर सकते। वह अगर इस वक्त उनके बीच जाकर खड़ा हो जाय

तो न मालूम वे गुस्से में क्या कर बैठें! अगल-बगल में चुपचाप खड़ा रहकर, बीच-बीच में कभी-कभी जोरों से सांस खींचते हुए यह जता देने के सिवा कि वह वहाँ खड़ा है, और कुछ भी तो वह नहीं कर सकता। और गुड़िये की तरह खड़ा रहना कितना कष्टकर है!

लेकिन थोड़ी देर बाद ही शायद उसके कष्ट का अन्त हो गया। करोस्तेलेव ने माँ से कहा, "मुझे एक घंटे के लिए जरा बाहर जाने दो मार्याशा! सेर्योझा और मैं एक जरूरी काम से बाहर जा रहे हैं।"

इसके बाद करोस्तेलेव के कंधे पर बैठ चारों ओर अच्छी तरह देखने के पहले ही वह खिलौने की दूकान पर पहुँच गया। करोस्तेलेव के पाँव कितने लम्बे-लम्बे हैं और कितनी जल्दी-जल्दी चलते हैं। दूकान के फाटक पर पहुँच करोस्तेलेव ने उसे कंधे से उतार दिया और दोनों अन्दर घुसे।

दूकान में चारों ओर तरह-तरह के खिलौने सजाये गये थे। गाल फुलाये एक गुड़िया जैसे उसीकी ओर देखकर हँस रही थी। उसके दोनों छोटे-छोटे पाँवों में जूते भी थे। लाल रंग के एक नगाड़े पर नीले भालू का एक पूरा परिवार आराम से बैठा था। एक तुरही सोने की तरह चमक रही थी। और भी न जाने कितने खिलौने इधर-उधर पड़े थे। किस ओर देखे, किसको देखे। आशा और आनन्द से उसे जैसे दिग्भ्रम

हो गया हो। भीतर से बाजे का स्वर सुनायी पड़ रहा था। झांककर देखा, एक आदमी एक एकोर्डियन* को अपने इच्छा-नुसार 'पों-पों' करता हुआ खींचता और बन्द करता जा रहा था। उसमें से रोने की-सी एक दर्दीली आवाज निकल पड़ती थी। और फिर रुक जाती थी। अब उसे मधुर संगीत का धीमा स्वर सुनाई पड़ा। रविवार की पोशाक पहने कितने ही लोग खड़े-खड़े संगीत सुन रहे थे। काउन्टर के पीछे एक बूढ़ा दूकानदार खड़ा था। करोस्तेलेव को देखकर वह आगे बढ़ आया और पूछा, "क्या देखना चाहते हैं ?"

"इस बच्चे के लिए एक साइकिल दिखलाइये।"

सेर्योझा को जरा गौर से झुककर देखते हुए वह बोला, "तीन पहियोंवाली साइकिल तो ?"

सेर्योझा उसी क्षण बोल उठा, "नहीं, नहीं तीन पहिये वाली साइकिल मैं नहीं लूँगा।" कैसा आदमी है ! तीन पहिये-की साइकिल लेकर वह क्या करेगा ?

"मार्या" बूढ़े ने किसी को पुकारा। लेकिन कोई आया नहीं, और बूढ़ा भी उसकी बात भूल दूसरे लोगों के साथ 'यह वह' करने लगा। मधुर संगीत का स्वर फौरन बन्द हो गया। उसके बदले न जाने कैसा एक दुख से भरा गाना शुरू हो गया।

यह क्या, वे यहाँ किसलिये आये हैं, यह बात एकदम भूल करोस्तेलेव भी उन्हीं लोगों के पास जाकर खड़ा हो

* एकोर्डियन—हारमोनियम की तरह का एक बाजा।

गया। वे अडिग खड़े वहाँ क्या कर रहे हैं, कौन जाने! सेर्योझा ने अधीर होकर करोस्तेलेव का जैकेट पकड़कर खींचा। वह जैसे सोकर जाग पड़ा। लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला, "आह, कितना सुन्दर गाना है?"

सेर्योझा चिल्ला उठा, "हमें साइकिल देगा या नहीं?"

बूढ़े ने फिर पुकारा, "भार्या!" तो भार्या के ऊपर ही साइकिल का मिलना न मिलना निर्भर करता है!

खैर, अन्त में काउण्टर के पीछे ताक के पास छोटे दरवाजे से एक लड़की आई। समझा, उसीका नाम है भार्या। भार्या एक पावरोटी चबाती आगे बढ़ आयी। बूढ़े ने सेर्योझा को दिखलाते हुए उससे कहा, "गोदाम से इस नौजवान के लिए एक साइकिल ले आओ।" हाँ, उसे बच्चा या लड़का न कहकर इसी तरह नौजवान कहना ही तो सचमुच उचित है!

लगता था, गोदाम जैसे इस पृथ्वी के दूसरे छोर पर कहीं था। भार्या के लौटने में जैसे एक युग लग गया। जो आदमी बाजा टुनटुना रहा था वह तो खरीद चुका। करोस्तेलेव ने एक ग्रामोफोन खरीदा। ग्रामोफोन कितनी विचित्र चीज है! एक बक्स के ऊपर काली तश्तरी की तरह न जाने कौन-सी चीज रख देते हैं, वह घूमने लगती है और तुम्हारी इच्छा के मुताबिक सुख या दुख का गाना गाने लगती है। काउण्टर पर वही बक्स अब तक बज रहा था। करोस्तेलेव ने कितनी ही प्लेटें

भी खरीदीं जो कागज के थैले में रखी थीं। दो छोटे डिब्बे भी खरीदे, जिनमें शायद सुइयाँ भरी थीं। सेर्योझा की ओर देख तनिक मुसकुराते हुए उसने कहा, "तुम्हारी माँ के लिए यह उपहार खरीदा है।"

सभी बूढ़े की ओर टकटकी लगाये देख रहे थे, जब वह सामानों को बाँधता जा रहा था। इसके बाद मानों जैसे पृथ्वी के दूसरे छोर से साइकिल के साथ आ धमकी। पहिये की तली, घंटी, दो मूठें, पावदान, बैठने के लिए एक चमड़े की गद्दी और एक छोटी-सी लाल बत्ती भी उसमें थी। सचमुच की एक साइकिल अपनी आँखों के सामने देख सेर्योझा विस्मय से केवल एकटक देखता रहा। साइकिल के पीछे टीन की पीली प्लेट पर चार अंकों का एक नम्बर भी लिखा हुआ था। बूढ़ा साइकिल को सामने रख बोला, "देखिये, चीज कितनी अच्छी है? ऐसा माल और कहीं-दूसरी जगह नहीं मिलेगा। हाँ, यह सामनेवाला पहिया घुमाइये, घंटी बजाइये, पावदान को दबाइये, देखिये, अच्छी तरह सब कुछ देख लीजिये। सचमुच चीज बहुत सुन्दर और मजबूत है। व्यवहार करने पर ही समझ पाइयेगा, जिन्दगी भर मुझे याद कीजियेगा।"

करोस्तेलेव साइकिल की अच्छी तरह परीक्षा करने लगा। सेर्योझा अचरज से मुँह बाये देख रहा था और सोच रहा था, तो,यह शानदार सुन्दर चीज उसीके लिए खरीदी गयी है! उसे जैसे इस बात पर पूरा विश्वास ही नहीं हो रहा था।

इसके बाद वह उसी साइकिल पर चढ़ घर लौटा। अर्थात् चमड़े की गुलगुल गद्दी पर बैठे, दोनों नन्हें हाथों से मूठें कसकर पकड़े, बेढब पावदान पर पाँव रखने की जी-जान से कोशिश करते हुए वह मौज से साइकिल पर बैठा था और करोस्तेलेव प्रायः कुबड़े की तरह हो से यों्झा समेत साइकिल को खींचते हुए चल रहा था। घर के दरवाजे तक वह इसी तरह साइकिल को खींचते हुए ले गया और बेंच के सहारे खड़ाकर बोला, "अब तुम खुद चढ़ने की कोशिश करो, मेरे तो पसीना छूट गया।"

करोस्तेलेव अब घर के अन्दर चला गया। झेंका, लीदा और शुरिक सेर्योझा को देखते ही दौड़कर पहुँच गये। सेर्योझा उन लोगों की ओर देखकर इस बार घमण्ड से बोला, "मैं इतनी ही देर में चलाना भी सीख गया हूँ। हट जाओ, हट जाओ तुम लोग। नहीं तो मैं कुचल दूँगा।" "सेर्योझा ने साइकिल पर बैठ उसे चलाने की कोशिश की, लेकिन धप से जमीन पर गिर पड़ा। "उफ"कहकर जल्दी से उठ बदन झाड़ते हुए उसने हँसने की चेष्टा की, जैसे उसे कुछ हुआ ही नहीं, सफाई देते हुए बोला, "हैंडिल जरा उलटा घूम गयी न इसीलिए ऐसा हुआ। और पावदान तक पैर पहुँचाना भी बड़ा मुश्किल है।"

झेंका ने सलाह दी, "जूते खोल लो। नंगे पाँव से काफी सुविधा होगी। पांवकी उँगलियों से पावदान को पकड़ सकोगे। देखूँ, जरा मैं चढ़ूँ, खूब मजबूती से पकड़े रहो—और जोर

से।" झेंका अब साइकिल पर सवार था। उसके मजबूती से पकड़े रहने के बावजूद झेंका ने जब चलाने की चेष्टा की तो अकेले ही नहीं, सेर्योझा समेत धड़ाम से गिर पड़ा।

लीदा चिल्ला उठी, "अब मैं चढ़ूँगी।"

शुरिक बोला, "नहीं, नहीं, मैं चढ़ूँगा।"

झेंका बोला, "यहाँ बहुत धूल है। इसलिये यहाँ चलाना सीखा नहीं जा सकता। आओ, हमलोग वास्का की गली में चलें।"

वास्का के बगीचे के पीछे एक संकरी गली थी। उसके दूसरी तरफ इमारती लकड़ियाँ रखने की थोड़ी-सी जगह थी, जो ऊँची दीवारों से घिरी थीं। वह मुलायम हरी घासों से ढकी हुई थी। हरी-हरी मखमली घास को देखकर लगता था जैसे जमीन पर एक सुन्दर गलीचा बिछा हुआ है। खेलकूद के लिए यह स्थान बड़ा ही उपयुक्त था क्योंकि बड़े बूढ़े यहाँ खेलने से कुछ कहते नहीं थे। तिमोखिन के घर के घेरे तक जाकर यह मैदान खत्म हो गया था। वास्का की माँ और शुरिक की माँ—दोनों ही अपने घेरे के ऊपर से इस तरफ गोबर, मिट्टी, कूड़ा-करकट फेंकती थीं। फिर भी वह जगह किसकी थी इस बात पर कभी भी उनमें झगड़ा नहीं होता। सब ने एक स्वर से मान लिया था कि यह वास्का की ही गली है। झेंका, लीदा, शुरिक-सभी मिलकर साइकिल को ठेलते हुए वास्का की गली की ओर चल पड़े। बेचारा सेर्योझा

भी उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। चलते-चलते उनमें यह बहस छिड़ गई कि कौन सबसे पहले साइकिल चलाना सीखेगा। झेंका ने कहा, "उम्र में मैं सबसे बड़ा हूँ इसलिये सबसे पहले सीखने का अधिकार सिर्फ मुझे है।" उसके बाद लीदा और फिर शुरिक। सबसे अन्त में सेर्योझा को चढ़ने दिया। लेकिन थोड़ी ही देर बाद झेंका फिर चिल्ला उठा,"बस, बस हो गया। अब मेरी बारी है।" सेर्योझा इतनी जल्दी साइकिल छोड़ना नहीं चाहता था, अपने नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव से साइकिल को मजबूती से पकड़ते हुए वह बोला, "नहीं, नहीं, मैं थोड़ा और चढ़ूँगा। साइकिल तो मेरी है।"

शुरिक तभी बोल उठा, "कैसा तंगदिल है!"

लीदा भी मुँह बिचकाती हुई उसे चिढ़ाने लगी, "कितना तंगदिल और गुस्सैल है। कंजूस कहीं का! अपनी चीज से चिपके रहने से बढ़कर लज्जा की बात और क्या हो सकती है।" बिना कुछ बोले ही सेर्योझा ने फौरन साइकिल छोड़ दी। तिमोखिन के घर के घेरे के पास जा उनकी ओर अपनी पीठ कर रोने लगा। वह अभी साइकिल को जी-जान से अपनी सिर्फ अपनी ही सम्पत्ति के रूप में पाना चाहता था और वे हैं कि अपने को उमर में बड़ा बता, अपने को ताकतवर समझ उसे फटकने ही नहीं देना चाहते, लेकिन यह तो बहुत बड़ा जुलम है। इसीलिये वह फफक-फफककर रोने लगा। लेकिन उनमें से किसी ने मुड़कर उसे देखा तक नहीं।

उनका लड़ना-झगड़ना और साइकिल के गिरने की झन-झनाहट वह सुनता रहा। उसे किसीने बुलाया नहीं, एक बार भी नहीं कहा कि, "अब तुम्हारी बारी है, आओ।" उन लोगों की अब तीसरी बारी चल रही थी और वह रोता ही जा रहा था, उसके नन्हे दिल की सारी पीड़ा आँसू बनकर आँखों से झर-झर गिर रही थी। अचानक वास्का अपने घेरे के पीछे दिखायी पड़ा। धारीदार कमीज और पायजामा पहने, कमर में कसकर बेल्ट बाँधे और सिर पर टोपी रखे वास्का बहुत बढ़िया दिखलायी पड़ रहा था। उसकी ओर देखते ही वह समझ गया कि माजरा क्या है? वह फौरन गरजकर बोला, "तुम लोग क्या कर रहे हो? साइकिल तुम लोगों की है या उसकी है। सेर्योझा इधर आओ तो"...वास्का एक छलाँग में घेरे के उस पार जा पहुँचा और उसी दम उन लोगों के हाथ से साइकिल छीन ली। झेंका, लीदा और शुरिक बिना कुछ बोले एक ओर हटकर खड़े हो गये। सेर्योझा हाथ से आँसू पोंछता हुआ वहाँ जा पहुँचा।

लीदा मुँह बिचकाकर बोली, "तुम दोनों ही बड़े तंग-दिल हो!"

वास्का धमका उठा, "और तुम लोग? लालची, पाजी, असभ्य......" और भी कितनी ही गालियाँ देकर अन्त में बोला, "जो सबसे छोटा हो उसीको सबसे पहले सीखने देना चाहिये—यह भी तुम लोग नहीं समझते? आओ

सेयोंझा, आओ तो......"

सेयोंझा अब साइकिल पर चढ़ा। लीदा के अलावा सभी ने उसे सीखने में सहायता दी। लीदा घास पर बैठ घास के फूलों की माला गूँथने लगी मानो इसमें साइकिल चढ़ने से भी अधिक आनन्द है। इसके बाद वास्का बोला, "अब मैं चढ़ूँगा, क्यों? सेयोंझा ने खुशी से उसे साइकिल दे दी।
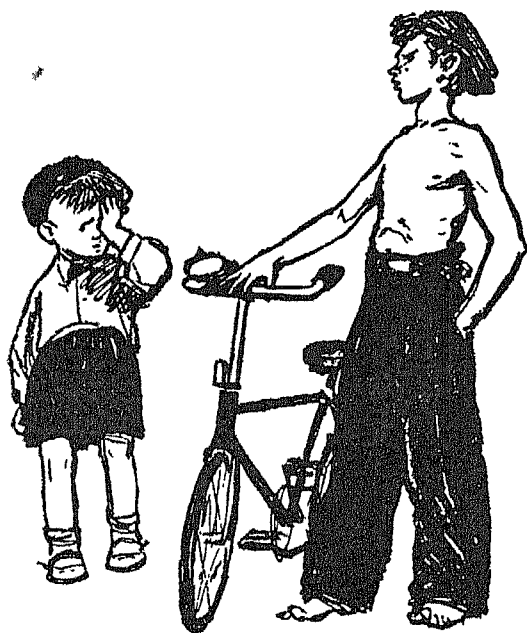
वास्का के लिए वह अब सब कुछ कर सकता है। इसके बाद वह फिर चढ़ा। अब वह खुद ही चढ़ना सीख गया। जमीन

पर गिरे बिना वह थोड़ी देर तक इधर-उधर घूमा। अब गिरा तब गिरा करता और डगमगाता रहा पर, अन्त तक नहीं गिरा, और बिना गिरे वह थोड़ा चढ़ना सीख गया। उसका पाँव पहिये के अन्दर चले जाने के कारण उसकी चार तलियाँ खुल गयीं। मगर इससे क्या; साइकिल इतनी अच्छी थी कि तब भी वह ठीक ही चल रही थी। अब दूसरे लड़कों के लिए सेर्योझा को अफसोस हुआ। "वे भी चढ़ें, मैं फिर चढ़ लूँगा" कह उसने उनके हाथ में साइकिल दे दी।

कुछ देर बाद मौसी किसी काम से जब बगीचे में आयी तो देखा—सेर्योझा भें-भें कर रो रहा था। कुछ और आगे बढ़ी तो देखा—एक अनोखा जुलूस उधर ही बढ़ता आ रहा था। सबसे आगे सेर्योझा दोनों हाथों में हैंडिल लिये रोता आ रहा था। उसके पीछे हाथ में साइकिल का ढाँचा लिये वास्का था और उसके पीछे झेंका के दोनों कंधों पर दो पहिये झूल रहे थे। लीदा के हाथ में घंटी थी और सबसे पीछे तलियों का एक बण्डल हाथ में लिये शुरिक बढ़ा आ रहा था।

मौसी दम खींचकर बोल उठी, "सत्यानाश कर दिया! नयी-नयी साइकिल····।"

शुरिक बोल उठा, "लेकिन हमने कुछ भी नहीं किया है। उसने खुद ही यह काम किया है। पहिये के बीच में अपना पाँव घुसा दिया था।"

करोस्तेलेव भी बाहर आकर देखने लगा, आखिर बात क्या है। इसके बाद जरा मुस्कुराकर बोला, "वाह, बहुत खूब! बहुत बढ़िया किया।"

सेर्योझा फूट-फूटकर रोने लगा।

करोस्तेलेव उसके पास जा उसके बदन पर हाथ फेरकर बोला, "बस, अब मत रोओ। फिर ठीक करा लाऊँगा। कारखाने में ले जाने से वे लोग इसे फिर नया बना देंगे।"

लेकिन सेर्योझा सिर झुकाये मौसी के घर में घुस फफक-फफककर रोता रहा। करोस्तेलेव ने यह बात उसे केवल सान्त्वना देने के लिए ही कही थी। टूटे टुकड़ों को फिर से जोड़ देने से क्या वह पहले जैसी चमकीली और नयी बन जायेगी! कोई भी उसको मरम्मत नहीं कर सकता। यह क्या वह समझता नहीं! उसे बेमतलब धोखा क्यों दिया जा रहा है? फिर मुलायम गद्दी पर बैठ घंटी बजाता हुआ वह उसे फिर कभी चला नहीं सकेगा। पहिये की चमकीली तलियों पर सुनहली धूप पड़ते ही वह क्या फिर कभी चमक सकेगी। असंभव! वह एकदम चौपट हो गई है।

दिन भर सेर्योझा रोते-रोते आँख-मुँह फुलाये बैठा रहा। करोस्तेलेव ने उसीके लिए ग्रामोफोन बजाना शुरू किया, लेकिन उसे जरा भी अच्छा नहीं लगा। वह जरा भी नहीं हँसा। हँसी-खुशी के कितने ही गाने मुहल्ले भर के लोगों ने सुने। लेकिन उसे जरा भी अच्छा नहीं लगा। अपने निराशा

के विचारों में ही वह दिन भर डूबा बैठा रहा। सचमुच उसे जीवन कितना नीरस मालूम पड़ता था, मानो कहीं भी आनन्द या हँसी नहीं है।

लेकिन इसके बाद क्या हुआ—क्या सच ही साइकिल की मरम्मत कराई गयी? हाँ, करोस्तेलेव ने कुछ बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहा था, उसने "ब्राइटशोर" कारखाने के मिस्त्री से साइकिल मरम्मत करवाकर लादी। मिस्त्री ने कह दिया कि आइन्दे सयाने लोग इस पर न चढ़ें, नहीं तो फिर वही हालत होगी। यह बात वास्का और फंका ने भी मान ली। इसके बाद से केवल सेर्योझा और शुरिक ही मौज से उस पर चढ़ते रहे। बड़े बूढ़ों के आस-पास नहीं रहने पर लीदा भी कभी-कभी चढ़ लेती। खैर लीदा तो दुबली-पतली है—उसके चढ़ने से कुछ नुकसान नहीं होगा, सेर्योझा उसे खुशी से चढ़ने देता।

कुछ ही दिनों में सेर्योझा साइकिल चलाने में पक्का उस्ताद बन गया। दोनों हाथ सीने पर रखकर भी वह ढालू रास्ते पर अच्छी तरह चला सकता था। लेकिन ताज्जुब की बात है! पहले के उन मनोहर दिनों की तरह तो अब साइकिल पर चढ़ने में उमंग भरा आनन्द नहीं मिलता!

अब वह दिन भी आ गया जब कि साइकिल पर चढ़ने से वह तंग आ गया। रसोईघर के एक कोने में लाल बत्ती और चाँदी की तरह चमकती घंटी के साथ वह सुन्दर मज-बूत साइकिल बराबर मूर्ति की तरह खड़ी रहने लगी। सेर्योझा

ने फिर पैदल ही इधर-उधर घूमना शुरू कर दिया। साइकिल की बात वह एकदम भूलने लगा। अब उसे वह पहले की तरह अच्छी नहीं लगती। इसीलिये उपेक्षित-सी वह घर के एक कोने में ही पड़ी रहती।

मतभेद

बड़े लोग कभी-कभी काफी अंटसंट बोलते हैं। जैसे एक दिन सेर्योझा ने चाय का प्याला उलट दिया। बस क्या था, मौसी ने बकना शुरू कर दिया, "बाप रे बाप, कैसा नटखट लड़का है! तुम्हारे चलते साफ-सुथरा करते-करते मर गयी। क्या अब भी बच्चे ही हो?"

सेर्योझा की राय में ये सारी बातें एकदम बेकार और अनावश्यक थीं। ऐसी बातें उसने हजारों बार सुनी हैं, उन्हीं को फिर सुनना क्या अच्छा लगता है? इसके साथ ही वह भी तो महसूस करता ही है कि उसे प्याला नहीं उलटना चाहिए। उलटते ही उसे भी तो अफसोस हुआ। अब लज्जित होकर वह केवल यही सोच रहा था कि दूसरों के देखने के पहले ही मौसी जल्दी से मेजपोश को ठीक क्यों नहीं कर देती? लेकिन मौसी तो केवल बकती ही रही।

"तुम कभी सोचते भी नहीं, कि मेजपोश को एक आदमी कितनी मिहनत से धोता है—साफ करता है और इस्तिरी करता है। और इन सब कामों में कितना कष्ट होता है?"

'मैंने जान-बूझकर तो उलटा नहीं। प्याला मेरे हाथ से फिसल गया" सेर्योझा ने सफाई दी।

लेकिन मौसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह बकती ही जा रही थी, "जानते हो, मेजपोश पुराना हो गया है। कई बार सी चुकी हूँ। एक दिन तो सारी दुपहरी इसे सीने में लगा दी थी।"

जैसे नये मेजपोश पर ही प्याला उलट गया हो! थोड़ी देर चुप रहकर मौसी फिर बोलने लगी, "जानबूझकर नहीं उलटा है ऐसा ही तो लगता है। जानबूझकर उलटा होता तो मजा भी चखा देती!"

सेर्योझा जब भी कोई चीज तोड़ता उसे ठीक ऐसी ही झिड़कियाँ सुननी पड़तीं। लेकिन गिलास या तश्तरी खुद उनसे ही टूट जाय तो कोई बात नहीं। लेकिन वह तोड़ दे तो फिर मत पूछिये............!

और माँ की भी बातें कितनी विचित्र थीं। कोई भी बात कहनी हो तो वह उसके पहले ही 'प्लीज' अर्थात् 'कृपया' कहने को कहती है हालांकि इस शब्द का कुछ मतलब भी नहीं होता। माँ कहती, "इसका मतलब यह है कि तुम नम्रतापूर्वक कुछ मांग रहे हो। मुझसे अगर तुम एक पेन्सिल भी मांगो तो 'प्लीज' कहना ही पड़ेगा। ऐसा कहने पर मैं समझूँगी कि तुम मुझसे अनुरोध कर रहे हो। और यही नम्रता है, समझे?"

"लेकिन मैं अगर केवल पेन्सिल ही मांगूँ तो क्या तुम

समझ नहीं सकोगी ?" सेर्योझा पूछ बैठा।

"मुझे एक पेन्सिल दो, ऐसा नहीं कहना चाहिये। ऐसा कहने से लोग तुम्हें असभ्य कहेंगे। कृपया मुझे एक पेन्सिल दीजिये, यह बात कितनी मधुर और सुन्दर सुनाई पड़ती है। और ऐसा कहने पर मैं भी खुश होकर तुम्हें पेन्सिल दे दूँगी, समझे ?"

"और यदि मैं वैसा न कहूँ तो क्या पेन्सिल देने में तुम्हें तकलीफ होगी ?"

"तब मैं पेन्सिल दूँगी ही नहीं।"

खैर, अब से माँ के कथनानुसार वह सभी बातों के पहले यह विचित्र और बेकार शब्द जोड़ देगा। जब माँ यही चाहती है तो यही हो। किन्तु उन लोगों का ख्याल बड़ा विचित्र है। वे बड़े हैं इसलिये बच्चों पर हमेशा हुकूमत करेंगे ही। पेन्सिल देना न देना उनकी मर्जी पर है। इसलिये उन्हीं की मर्जी के मुताबिक, अपनी इच्छा के विरुद्ध उसे चलना ही पड़ेगा।

लेकिन करोस्तेलेव की बात जुदा थी, वह इन छोटी-मोटी बातों पर कभी ख्याल नहीं करता था। सेर्योझा ने 'प्लीज' कहा या नहीं, वह इसकी कभी चिन्ता नहीं करता था। बरामदे के एक कोने में बैठ जब वह खेलता रहता है, तब करोस्तेलेव उसे कभी तंग नहीं करता अथवा दूसरों की तरह कभी भी यह नहीं कहता कि इधर आकर मुझे एक चुम्बन दे जाओ, उसके लिए ये फिजूल बातें थीं। लेकिन लुकियानिच

काम से लौटकर आते ही उसे ऐसा कह बैठेगा, चाहे वह खेलता हो या जो भी करता हो। इसके बाद अपनी रूखी दाढ़ी उसके मुलायम गाल पर रगड़ कर चूम लेता और उसे एक चाकलेट या सेब थमा देता। यह बात अच्छी जरूर है लेकिन खेलते समय रुकावट डालना उसे एकदम पसन्द नहीं था। सेब तो वह बाद में खा सकता था, करोस्तेलेव की तरह दूसरे इस बात को क्यों नहीं समझते ?...

करोस्तेलेव के पास भर दिन कितने लोग आते-जाते रहते थे। तोल्या चाचा तो प्रायः रोज ही आते थे। वे नौजवान और सुन्दर थे। बड़ी-बड़ी आँखों की पपनियाँ काली, दाँत सफेद और हँसमुख चेहरा! सेर्योझा उनको श्रद्धा की दृष्टि से देखता रहता था। क्योंकि वह कविता भी लिख सकते थे। जब उनसे अपनी नयी कविता पढ़ने को कहा जाता तो पहले वह असमंजस में पड़ जाते और इन्कार कर देते, फिर उठ पड़ते, एक ओर खड़े होकर कवितापाठ शुरू कर देते। सभी विषयों पर उन्होंने कविताएँ लिखी थीं—युद्ध, शान्ति, सामूहिक खेती, बसन्त इत्यादि सभी विषयों पर। किसी नीलनयना अपूर्व सुन्दर युवती के बारे में भी कवितायें लिखी थीं जिसकी वे न जाने कितने दिनों तक प्रतीक्षा करते रहे, कवितायें लिखते रहे, पर फिर भी तो वह नहीं आई।

लेकिन कवितायें सचमुच बड़ी सुन्दर थीं! ठीक पुस्तकों की कविताओं की तरह ही सुरीली और मीठी। कवितापाठ

करने के पहले तोल्या चाचा अपने काले-घने बालों को पीछे की ओर उलट देते और जरा खाँसकर छत की कार्निस की ओर देखते हुए कविता शुरू करते। सभी इस कवितापाठ के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते और माँ उन्हें अच्छी तरह तैयार कर एक प्याला चाय देती। चाय पीते-पीते सभी बीमार गायों के सम्बन्ध में बातें करते। ब्राइट शोर फार्म की गायें जब बीमार पड़ गई थीं तो तोल्या चाचा ने ही उनकी चिकित्सा की थी।

किन्तु सभी तो तोल्या चाचा की तरह अच्छे और सुन्दर नहीं हैं। प्योत्र चाचा को ही लीजिये, सेर्योझा तो हमेशा उनसे कतराकर ही चलना चाहता है। उसका चेहरा एकदम बदसूरत है और सिर बनावटी फुटबाल की तरह ही है। भद्दे ढङ्ग से हँसता भी है—ही, ही, ही, ही। एक दिन वह माँ के पास बरामदे में बैठा था, करोस्तेलेव कहीं बाहर गया था, इसी समय प्योत्र चाचा गये और उसे बुलाकर सुन्दर कागज में लपेटा हुआ एक बड़ा-सा चाकलेट उसके हाथ में दिया। सेर्योझा ने नम्रतापूर्वक 'धन्यवाद' कहकर डिब्बा ले लिया और खोला तो अन्दर चाकलेट-वाकलेट कुछ भी नहीं था। इस तरह प्योत्र चाचा के ठगने से और खुद ठगे जाने से वह लज्जा से गड़ गया। माँ की ओर देखा, तो लगा जैसे वह लज्जित है। प्योत्र चाचा कुत्सित रूप से हँस रहे थे, "ही, ही, ही..."

सेर्योझा नाराज हुए बिना, सम्मान के साथ बोला, "प्योत्र

चाचा, तुम बुद्धू हो !"

माँ भी निश्चय ही यही सोच रही थी। लेकिन उसने उसी क्षण डपट दिया, "क्या कहा ? फौरन प्योत्र चाचा से माफी मांगो।"

सेर्योझा भौचक्का-सा माँ की ओर देखता रह गया। माँ ने फिर टोका, "सुनते नहीं, क्या कह रही हूँ ?" इस बार भी उसने कोई उत्तर नहीं दिया। माँ उसका हाथ पकड़ खींचती हुई घर में ले जाकर बोली, "अब कभी मेरे पास मत आना, समझे ? ऐसे शैतान लड़के के साथ मैं बात करना नहीं चाहती।" वह क्षण भर वहाँ खड़ी रही, शायद इस आशा में कि वह अब भी माफी मांग ले। लेकिन होंठ बंद किये, मलिन आँखों से वह केवल माँ को देखता रहा। उसने क्या गलती की है, यह समझ नहीं पा रहा था। फिर वह क्यों माफी मांगे ? उसने जो ठीक समझा, वही तो कहा है।

माँ चली गयी। धीरे-धीरे वह मौसी के कमरे में गया और खिलौनों को इधर-उधर करता हुआ उसे भूल जाने की कोशिश करने लगा। उसके नन्हे-नन्हे हाथों की उँगलियाँ अभिमान और क्रोध से थर-थर काँप रही थी। पुराने ताशों से काटकर रखीं तस्वीरों को इधर-उधर करता हुआ उसने अचानक हुकुम की काली बीबी का सिर झट से दो टुकड़े कर दिये।....माँ क्यों इस बदतमीज प्योत्र चाचा का पक्ष लेती

है ? और माँ अभी भी उसके साथ बातचीत कर रही है, हँस रही है। किन्तु सेर्योझा से कुट्टी क्यों कर ली ?

शाम को उसने सुना, माँ करोस्तेलेव को पूरी घटना बता रही थी।

करोस्तेलेव कह रहा था, "उसने ठीक ही किया है। इसी को मैं सच्ची समालोचना कहूँगा।"

माँ बाधा देकर बोली, "लेकिन बच्चे को बड़ों की आलोचना कैसे करने दोगे। अगर बच्चे बड़ों की आलोचना करने लगेंगे तो हम उन्हें सिखा कैसे सकते हैं। बड़ों का सम्मान करना बच्चों का फर्ज है।

"लेकिन उस गधे का वह क्यों सम्मान करे, बोलो तो ?"

"उसे करना पड़ेगा। बड़े गधे होते हैं यह बात भी मैं उसके दिमाग में घुसने देना नहीं चाहती, समझे ? प्योत्र की तरह बड़ा होने पर ही बड़ों की आलोचना कर सकेगा। इसी उमर में ऐसा नहीं करने दिया जा सकता।"

मेरे ख्याल से यदि साधारण विचार-बुद्धि की बात पूछो तो मैं कहूँगा कि सेर्योझा अभी ही प्योत्र के बराबर हो गया है। मेरा तो यही ख्याल है। इसके अलावा शिक्षा देने का ऐसा कोई भी बँधा हुआ नियम नहीं है कि गधे को गधा कहने के कारण बच्चे को सजा दी जाय।"

उनकी सभी बातों को ठीक-ठीक न समझने पर भी सेर्योझा इस बात को अच्छी तरह समझ गया कि प्योत्र चाचा

को गधा कहने से करोस्तेलेव खुश ही हुआ है। इसके लिए वह करोस्तेलेव का बड़ा कृतज्ञ है।

सच्ची बात कहने में क्या, करोस्तेलेव दूसरे सभी लोगों से एक दम भिन्न था? इतने दिनों तक वह इन लोगों के साथ नहीं बल्कि नानी और परनानी के साथ रहता था और बीच-बीच में कभी-कभी इनके यहाँ केवल घूमने आ जाता था—इस बात पर आज सोचा भी नहीं जा सकता।

सेर्योझा को वह नहाने के लिये नदी में ले जाता, तैरना सिखलाता। माँ तो डरती है, सेर्योझा कहीं डूब न जाय। किन्तु करोस्तेलेव माँ की बातों पर केवल हँस देता। सेर्योझा की खाट के दोनों तरफ से कार्निश को हटा देने की व्यवस्था उसी ने कर दी। माँ ने बाधा देते हुए कहा था वह रात के समय गिर जायगा और उसे चोट आ जायेगी। लेकिन करोस्तेलेव दृढ़तापूर्वक बोला, "मान लो, हमलोग ट्रेन से कहीं बहुत दूर जा रहे हैं। वह ऊपरवाले बर्थ पर सो गया। फिर? क्या उसे बड़े लोगों की तरह सोने का अभ्यास नहीं करना पड़ेगा?"

इसीलिये अब सुबह शाम उसे खाट की कार्निश पकड़-पकड़ कर बिस्तरे पर चढ़ना-उतरना नहीं पड़ता। बड़ों की तरह ही बिस्तरे पर मौज से सोता है। हाँ, एकबार रात में वह बिस्तरे से फर्श पर गिर पड़ा था। बगलवाले कमरे से आवाज सुनकर वे लोग वहाँ पहुँच गये और गोद में उठाकर फिर उसे बिस्तरे पर सुला दिया। सबेरे जब यह बात उससे

कही गई तो अचरज से वह सोचने लगा—उसे तो कुछ भी याद नहीं। शरीर में कहीं दर्द भी नहीं है। फिर बिना कार्निश वाली खाट पर सोने में हर्ज ही क्या है ?

एक दिन वह आँगन में गिर गया। घुटने का चमड़ा छिल जाने से काफी खून भी गिरा। रोते-रोते घर आने पर मौसी पट्टी के लिए घबड़ाई-सी अन्दर गयी। लेकिन करोस्तेलेव बोल उठा, "रोओ मत बेटा। छिः, रोते नहीं। फौरन सब ठीक हो जायगा। मान लो, तुम एक सैनिक हो और युद्ध में घायल हो गये हो। उस समय क्या करोगे, रोओगे ?"

सेर्योझा ने रोना बन्द कर पूछा, "तुम घायल होने पर रोते नहीं थे ?"

"नहीं ! क्यों रोऊँगा, बोलो तो ? तब तो दूसरे लड़के खूब चिढ़ायेंगे ! हम पुरुष हैं, ऐसा तो जिन्दगी में होता ही रहता है। यही तो नियम है।"

सेर्योझा ने आँखों का पानी पोंछ डाला। उन्हीं लोगों की तरह वह भी वीर पुरुष है—इसे प्रमाणित करने के लिए उसने 'ही-ही' हँसने की चेष्टा की। मौसी के पट्टी लेकर आने पर आँसू पोंछ हँसते हुए बोला, लाओ, बाँध दो। लेकिन जरा भी दर्द मालूम नहीं पड़ता। इसके बाद करोस्तेलेव उसे युद्ध की कहानियाँ सुनाने लगा। युद्ध की कितनी ही बहादुराना कहानियाँ सुनकर करोस्तेलेव के पास ही एक टेबुल पर बैठे-बैठे उसकी छाती एक विचित्र गर्व से भर उठी। अगर युद्ध शुरू हो

तो लड़ने कौन जायेगा ? क्यों, वह और करोस्तेलेव तो जायेंगे ही। युद्ध उनके जीवन का एक अंग है। माँ, मौसी और लुकियानिच यहीं रहेंगे, युद्ध खत्म होने तक उन लोगों का इन्तजार करेंगे। यही उनके जीवन की भूमिका है।

झेंका

झेंका अनाथ था। वह अपनी मौसी के पास रहता था। मौसी की एक लड़की थी, वह लड़की दिन में कहीं कोई काम करने जाती थी और शाम को घर लौटने पर केवल अपने कपड़ों पर इस्तिरी करती थी। आँगन के एक कोने में आग वाले चूल्हे पर इस्तिरी रखकर पूरी शाम केवल इस्तिरी करने में ही बिता देती थी। इसके बाद कपड़ों को सजाकर रख क्लब में नाचने चली जाती थी। दूसरे दिन शाम को फिर वही काम।

झेंका की मौसी भी कहीं काम करती थीं। वह कल के पास खड़ी हो पड़ोसिनों से शिकायत करती कि वह धोने-पोंछने का भी काम करती है और चिट्ठी पत्री ले जाने का भी। लेकिन वेतन पाती है केवल एक ही काम के लिए। काफी देर तक इसी तरह खड़ी-खड़ी शिकायतें करती रहती। शिकायतवाले खाते में इसने जो लिख दिया था उसी से तो मैनेजर भी बुरी तरह फँस गया था।

मौसी हमेशा ही झेंका से नाराज रहती थी। वह सिर्फ खूब खाता था, घर की मदद में कोई काम-काज नहीं करता था।

सचमुच झेंका कोई काम करना नहीं चाहता था। सबेरे सोकर उठते ही खाने को जो मिलता, खा लेता और दूसरे लड़कों के साथ खेलने चला जाता। वह दिन भर मुहल्ले के दूसरे लड़कों के साथ इधर-उधर खेलता रहता और गप्पें लड़ाता सारा दिन काट देता।

सेर्योझा के घर आने पर मौसी उसे हमेशा कुछ न कुछ खाने को देती। अपनी मौसी के घर लौटने से कुछ ही पहले झेंका पढ़ने बैठ जाता। पिछड़ जाने के कारण छुट्टी के दिनों का बहुत-सा सबक पूरा करना बाकी रह गया था।

हर साल हर क्लास में वह फेल होता था। वास्का उससे बहुत निचले क्लास में भर्ती किया गया था लेकिन अब वास्का और वह दोनों एक साथ चौथी में पढ़ रहे थे हालाँकि वास्का भी एक बार फेल हो गया था। झेंका की अपेक्षा वास्का अधिक स्वावलम्बी था। उसके शरीर में ताकत भी ज्यादा थी।

पहले पहल सभी शिक्षक झेंका के लिए बड़े चिन्तित थे, परेशान होकर उसकी मौसी के पास जाते या कभी-कभी उसे ही बुला भेजते।

मौसी कहती, "जैसी मेरी फूटी किस्मत है, वैसे ही यह अभागा लड़का भी मेरे पाले पड़ा है। उसके साथ आप लोग, जो मर्जी कीजिये, मुझे कुछ मत कहिये। विश्वास कीजिये, मैं इससे तंग आ गई हूँ।" मौसी पड़ोसियों से भी शिकायत करती, शिक्षक कहते हैं कि उसके पढ़ने की व्यवस्था एकान्त में

क्यों नहीं कर देती। लेकिन उसके लिए इस व्यवस्था की कोई जरूरत तो है नहीं। जरूरत है जरा ठीक से चाबुक लगाने की। लेकिन क्या करूँ, मेरी मृत बहन का लड़का है। मारूँ भी तो कैसे मारूँ।" फिर शिक्षकों ने मौसी के यहाँ आना बन्द कर दिया।

लेकिन वे झेंका की खूब प्रशंसा भी करते थे क्योंकि वह बहुत शांत-शिष्ट लड़का था। दूसरे लड़के क्लास में बड़बड़ाते रहते थे लेकिन झेंका चुपचाप बैठा रहता था। हाँ, केवल पाठ नहीं सुना सकता था। और बराबर ही गैरहाजिर रहता था, यही उसमें दोष था। अपने सुन्दर मीठे स्वभाव के लिए वह हरबार सबसे ज्यादा नम्बर पाता था, गाने के लिए भी पुरस्कार पाता था। लेकिन दूसरे सभी विषयों में बिलकुल कम नम्बर पाता। मौसी के सामने वह पढ़ने-लिखने का बहाना बनाता था, इसलिये वह कुछ नहीं बोल पाती थी। घर लौटने पर मौसी देखती कि झेंका रसोईघर की टेबुल पर जूठे बर्तनों को एक कोने में सरका कापी पेन्सिल ले हिसाब बना रहा है। पहले मौसी ही टोकती, "आलसी छोकड़े, देखती हूँ, लिखना-पढ़ना तो खूब हो रहा है, लेकिन पानी कौन लायेगा? किरासन तेल भी तो नहीं लाये! उफ! तुम एक भी काम कर पाते! तुम्हारे जैसे निकम्मे लड़के को मैं और कितने दिनों तक बैठाकर खिलाऊँ?"

झेंका कह देता, "मैं अपना सबक पूरा कर रहा हूँ।"

मौसी फटकारती। झेंका एक लम्बी सांस खींच बोतल ले तेल लाने चल पड़ता।

मौसी जलभुनकर कहती, "दिल्लगी कर रहे हो मुझसे? शैतान कहीं का, जानते नहीं कि अब दूकान बन्द हो गयी होगी?"

"अच्छा, बन्द हो गई होगी तो फिर क्यों चिल्लाती हो?"

झेंका कह देता। मौसी गर्जन करती हुई कहती, "जाओ लकड़ी काट लाओ। फौरन मेरी आँखों के सामने से चले जाओ अभागा कहीं का। लकड़ी न लाये तो घर में पाँव न रखने दूँगी।" इसके बाद झटककर बाल्टी हाथ में ले मौसी उसी तरह बड़बड़ाती हुई पानी लाने चली जाती और झेंका लकड़ी काटने के लिए धीरे-धीरे गोदाम की ओर चला जाता।

मौसी उसे आलसी निकम्मा कहती, किन्तु यह एकदम सच नहीं था। अगर पाशा मौसी या कोई दूसरा लड़का उससे कोई काम करने को कहता तो वह फौरन कर देता, और अगर कोई उसकी थोड़ी प्रशंसा कर दे तो फिर पूछना ही क्या? वह जी-जान से काम कर देने की कोशिश करता।

एक दिन वास्का और उसने लकड़ी का ढेर लगा दिया था। करीब आधा जंगल ही काट डाला था। लोग चाहे जो भी कहें मगर वह बेवकूफ भी नहीं था।

सेर्योझा के औजारों से झेंका और शुरिक ने एक ऐसा सुन्दर रेलवे सिगनल तैयार किया था कि दूर-दूर से दल के दल

लड़के उसे देखने आये थे। सिगनल में एक लाल और हरी बत्ती भी लगा दी थी। उसे तैयार करने में शुरिक ने अवश्य ही बहुत अधिक सहायता की थी। शुरिक कल-पुर्जे का काम खूब अच्छी तरह जानता था। क्योंकि उसके पिता तिमोखिन लारी चलाते हैं न! लेकिन नये साल के मौके पर सजाये सेर्योझा के खिलौनों से इस लाल और हरे सिगनल को जोड़ देने की सूझ शुरिक के नहीं बल्कि झेंका के ही दिमाग में आई थी। सेर्योझा के प्लास्टिसिन (मूर्ति बनाने की मिट्टी) से कई बार उसने पशु-पक्षी और आदमी बनाये थे।

सेर्योझा की माँ ने यह देखकर उसके लिए भी उसी तरह के प्लास्टिसिन का एक बक्स खरीद दिया था। लेकिन झेंका की मौसी यह देखकर ही आग-बबूला हो गयी थी। प्लास्टिसिन से भरे बक्से को उसने टुकड़े-टुकड़े कर फेंक दिया था।

झेंका ने वास्का से सिगरेट पीना सीख लिया था। उसके पास तो पैसा था नहीं, इसलिए वास्का से लेकर ही पीता था, रास्ते पर सिगरेट का टुकड़ा देखते ही वह उसे उठाकर पीने लगता।

सेर्योझा उसकी तकलीफ को समझता था इसलिए रास्ते पर कहीं सिगरेट के टुकड़े पाता तो लाकर उसे देता रहता था।

वास्का की तरह झेंका छोटों के ऊपर कभी सरदारी

बघारने नहीं जाता। वह जब तब छोटे लड़कों के साथ, वे जैसा चाहें वैसा ही खेलना पसन्द करता था। सैनिक सैनिक

का खेल हो या लट्टू का या और कोई! वह उमर में सबसे बड़ा होने के नाते सैनिक सैनिक खेल में सेनापति या प्रधान सेनापति बनना चाहता था और लट्टू के खेल में जीतने पर तो वह बहुत खुश होता था। लेकिन हार जाने पर रोनी सूरत बना

लेता। झेंका का चेहरा करुण और मुँह बड़ा था, कान लम्बे-लम्बे और इतने लम्बे कि लगभग कंधे तक झूले रहते थे क्योंकि वह बालों को बहुत कम बनाता था।

एक दिन वास्का और झेंका सेर्योझा को साथ लेकर जङ्गल गये और आग जला आलू पकाने लगे। आलू, नमक और कच्चा प्याज वे साथ लेते गये थे। भयङ्कर धुएँ के साथ आग जल रही थी।

वास्का ने झेंका से कहा, "भावी जीवन में तुम क्या बनना चाहते, हो बोलो तो?"

झेंका अपने घुटनों को मोड़कर बैठा था। छोटा पायजामा ऊपर सरक जाने से उसके दोनों दुबले-पतले पाँव दिखायी पड़ रहे थे। वह उदास अपलक दृष्टि से आग के धुएँ की कुण्डलियों की ओर देख रहा था। वास्का ही फिर बोला, "अच्छा लगे या न लगे, स्कूल की पढ़ाई तो पहले खतम करनी ही पड़ेगी, क्यों?"

"शिक्षाहीन जीवन व्यर्थ है!" वास्का ने ऐसे गम्भीर बन कर कहा मानो वह पढ़ने में खूब तेज हो और झेंका से चार-पाँच क्लास ऊपर पढ़ता हो।

झेंका ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, "यह तो ठीक ही है, बिना पढ़े-लिखे मैं किसी भी काम में नहीं लग सकता।" एक लकड़ी लेकर उसने आग को खरोंचा, भीगी टहनियाँ सी-सी कर उठीं, टहनियों के रस से आग थोड़ी धीमी हो

गयी। तरह-तरह के पेड़-पौधों के बीच थोड़ी खाली जगह पर वे बैठे हुए थे। यह उनके खेलने की खास जगह थी। बसंत में यहाँ कितने जङ्गली फूल खिलकर झड़ते रहते थे। गर्मी में मच्छरों का भीषण उत्पात शुरू होता था। अभी धुएँ के कारण मच्छरों की दाल नहीं गल पा रही थी। लेकिन मच्छरों में भी जो अधिक चालाक और साहसी थे वे बीच-बीच में मौका पाते ही इन लोगों के हाथ पैरों को काट खाते थे। काटते ही वे दोनों हाथों से अपने मुँह-हाथ-पैर चपतियाने लगते थे। वास्का ने फिर गम्भीर बनकर कहा, "तुम्हारी मौसी तुम्हें बहुत सताती है, उसे जरा समझाया नहीं जा सकता ?"

"अरे बापरे बाप" झेंका बोल उठा, "एकबार कहकर देखो न !"

"तब उसकी परवाह ही मत करो। समझे ?"

"मैं उसकी कोई खास परवाह नहीं करता। लेकिन जानते तो हो, मौसी हरदम मेरे पीछे पड़ी रहती है, इसलिए अब मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"ल्यूस्का क्या कहती है ? उसका व्यवहार कैसा है ?"

"वह वैसा दुर्व्यवहार नहीं करती। इसके अलावा अब तो उसका ब्याह होने जा रहा है।"

"किससे ब्याह कर रही है ?"

"कौन जाने! कोई भी हो किसी से तो करेगी ही। शायद किसी अफसर से ब्याह करना चाहती है। लेकिन यहाँ तो

कोई अफसर है नहीं। इसलिए अफसर वर की खोज में वह शायद कहीं दूसरी जगह जायेगी।"

इस बीच आग और तेज हो गयी थी। सारी टहनियाँ और पत्ते जल उठे थे जिनसे लपटें जीभ की तरह लपलपा रही थीं। अब पहले की तरह धुआँ नहीं था। बन्दूक की गोली की तरह न जाने क्या छूटा और धुआँ लापता हो गया।

वास्का ने सेर्योझा से कहा, "जाओ कुछ सूखी टहनियाँ चुनकर ले आओ तो।"

सेर्योझा दौड़कर चला गया। थोड़ी देर बाद लौटकर आने पर देखा कि वास्का ध्यानमग्न तथा गम्भीर होकर झेंका की बातें सुन रहा था। झेंका कह रहा था, "मैं वहाँ राजा की तरह रहूँगा, शाम को होस्टल लौटने पर देखूँगा कि मेरे लिए वहाँ करीने से बिस्तरा तैयार है, स्बितरे के पास ही एक आलमारी है। मैं अपने इच्छानुसार सोऊँगा, रेडियो सुनूँगा, ताश खेलूँगा, झिड़कियाँ सुनानेवाला कोई नहीं होगा। खेल-कूद करूँगा, वाह कितना मजा है! इसके बाद रात को आठ बजे खाना देंगे।"

"सुनने में तो बड़ा अच्छा लगता है। किन्तु तुम्हें वहाँ भर्ती करेंगे?"

"मैं वहाँ दरख्वास्त भेजूँगा, लेंगे क्यों नहीं? जरूर लेंगे।"

"तुम्हारी उमर अभी कितनी है, बोलो तो?"

"पिछले सप्ताह चौदह पूरा हो गया है।"

"तुम्हारी मौसी को तो आपत्ति न होगी ?"

"नहीं, मौसी को जरा भी आपत्ति नहीं। लेकिन उसे डर इसी बात का है कि भविष्य में मैं इसकी कुछ भी सहायता न कर सकूँगा।"

"जहन्नुम में जाय तुम्हारी मौसी। उसकी परवाह कौन करता है ?" कड़े-कड़े शब्दों में न जानें उसने और क्या-क्या गालियाँ दीं।

झेंका बोला, "सोचता हूँ, जैसे भी हो वहाँ जाऊँगा ही।"

"अब काम तुम्हारा है, क्या करना है क्या नहीं करना है खूब अच्छी तरह सोच लो और जो करना हो, कर डालो।" वास्का ने कहा, "तुम्हीं कहते हो, तुम्हीं सोचते हो। लेकिन कुछ ही दिनों में पढ़ने-लिखने का मौसम शुरू हो जायगा। फिर कोई न कोई पीछे पड़ ही जायगा।"

झेंका बोला, "हाँ, मैं सोचता हूँ, जो करना हो कर डालूँ। जानते हो वास्का, यह बात मैं बराबर सोचता रहता हूँ। जल्दी ही सितम्बर आ रहा है। इसकी याद आते ही बेचैन हो उठता हूँ, सारा उत्साह ठंडा पड़ जाता है।"

वास्का ने कहा, "इसमें अचरज की क्या बात है ?"

जब तक सब आलू अच्छी तरह पक न गये, वे लोग झेंका की योजना के सम्बन्ध में बातें करते रहे। इसके बाद उँगलियाँ जला रसदार तनों को चबाते हुए पके आलुओं को

खा वे वहीं सो गये। दोपहरी के बाद सूरज मामा भी एक ओर ढल गये, जंगल की इस सुनसान जगह में भी धीरे-धीरे अँधेरा छाने लगा। पेड़ डूबते सूरज की लालिमा से मुस्कुरा उठे। राख के नीचे दबी आग पर भी जंगल की छाया आ पड़ी। उन्होंने सोते समय मच्छर भगाने के लिए सेर्योझा से हवा करने को कह दिया था। इसलिए वह एक आज्ञाकारी लड़के की तरह हाथ में एक पत्तेदार टहनी ले उनके बदन पर हवा कर रहा था।

टहनी से हवा करते हुए वह सोच रहा था, नौकरी करने पर झेंका अपनी मौसी को क्या सचमुच रुपये देगा? उसकी मौसी तो उसे बराबर फटकारती और धमकाती रहती है। लेकिन? सोचते-सोचते थोड़ी देर सेर्योझा खुद भी उन दोनों के बीच सो गया। इसके बाद वह सपना देखने लगा। सपने में उसने देखा कि झेंका की मौसेरी बहन ल्यूस्का अफसरों से घुल-मिलकर बात कर रही है..........।

साधारणतः झेंका केवल सोचता था, सोचकर काम करने की चेष्टा कभी नहीं करता था। लेकिन पहली सितम्बर जल्दी ही आ रही थी, स्कूल खुलने ही वाला था। लड़के-लड़कियाँ स्कूल जाकर किताबें ले आये। लीदा पोशाक पहन शेखी बघारती सबको दिखाने लगी। स्कूल का नया वर्ष अब शुरू ही होनेवाला था।

इसी बीच झेंका ने सोच लिया—किसी स्कूल बोर्डिंग में

अथवा कल-कारखाने के स्कूल में, जहाँ भी हो, उसे जाना ही होगा।

बहुतों ने उसे इस काम में सहायता दी। उसे भर्ती कर लेने के लिए उपाय निकालकर स्कूल से उसकी दरखास्त भेजी गयी। करोस्तेलेव और माँ ने उसे राह-खर्च के लिए पीठे बना कर उसे दे दिये। जाने के दिन सबेरे उसकी मौसी ने उसे फटकारा नहीं बल्कि स्नेह से उसे विदाई दी और अपने किये उपकार को भूल न जाने का बार-बार अनुरोध किया।

झेंका ने कहा, "हाँ याद रखूँगा मौसी। तुमने जो कुछ किया है उसके लिए तुम्हें अनेक धन्यवाद है।" मौसी के काम पर चले जाने पर झेंका भी जाने की तैयारी करने लगा।

मौसी ने उसे लकड़ी का एक हरा बक्स दे दिया था पर देने के पहले काफी देर तक ना-नू करती रही थी। देना चाहती न थी। लेकिन आखिरकार देकर बोली, "अपना जैसे एक हाथ काटकर तुम्हें दे दिया, समझे?" उसी बक्से में झेंका ने अपनी कुछ कमीजें, फटा-पुराना एक जोड़ा मोजा, गंदा और फटा हुआ एक तौलिया और पीठे भर लिये। दूसरे लड़के उसका बाँधना देखने लगे।

सेर्योझा दौड़कर घर चला गया और फिर फौरन वही रेलवे सिगनल हाथ में लेकर लौट आया। इतने दिनों तक उसे टेबुल पर आने-जाने वालों को दिखाने के लिए सजाकर रखा गया था। आज उसे झेंका के हाथ में देते हुए वह बोला, "लो,

इसे ले जाओ, तुम्हें दे दिया।"

झेंका बोला, "मैं इसे लेकर क्या करूँगा? कैसे ले जाऊँगा? यों ही मनभर का बोझ हो गया है।"

सेर्योझा फिर दौड़ गया और एक बक्स ले आया। बोला, "तो यह बक्स भी लो, इसमें उसे रख लो, यह बहुत हल्का है।"

झेंका ने बक्स खोलकर देखा, खिलौने बनाने के लिए प्लास्टिसिन के कई टुकड़े भी उसके अन्दर थे। झेंका का चेहरा खुशी से चमक उठा। बक्से में सबको सजाकर रख लिया।

तिमोखिन ने वादा किया था कि वह झेंका को स्टेशन तक पहुँचा आयेगा। गाँव में अभी तक रेल लाइन नहीं बैठी थी। स्टेशन भी बहुत दूर था। लेकिन शाम से कुछ पहले ही उसकी लारी न जानें कैसे बिगड़ गयी। शुरिक आकर बोला, "लारी मरम्मत के लिए कारखाने में पड़ी है और उसके पिता अभी गहरी नींद में सो रहे हैं।"

वास्का बोला, "घबड़ाओ नहीं। कोई न कोई तुम्हें अपनी गाड़ी पर जरूर चढ़ा लेगा।"

सेर्योझा बोला, "क्यों, बस से भी तो जा सकते हो।

शुरिक बोल उठा, "वाह, बड़े चालाक निकले। बस से जाने में क्या पैसा नहीं लगेगा? इतना पैसा उसके पास कहाँ है?"

झेंका बोला, "अच्छा चलो सड़क पर चलें, वहाँ किसी

गाड़ी को जाते देख हाथ दिखाने पर रुक जायेगी और मुझे जरूर चढ़ा लेगी।"

वास्का ने उसे एक पाकिट सिगरेट दिया। वास्का के पास दियासलाई नहीं थी। इसलिये झेंका ने अपनी मौसी की ही दियासलाई ले ली। इसके बाद सब निकल पड़े। झेंका ने घर के दरवाजे में ताला लगाकर चाभी सीढ़ी के नीचे रख दी। फिर सब एक साथ रवाना हुए। उफ, बक्स कितना भारी था मानो शीशे की चट्टान हो। झेंका उसे कभी इस हाथ में तो कभी उस हाथ में लिये चला जा रहा था। उसका कोट वास्का ढो रहा था। लीदा बिक्तर को गोद में लिये चल रही थी। पेट पर चिपकाये कभी-कभी बच्चे को डाँट देती, "दुत चुप क्यों नहीं होता दुष्ट कहीं का!"

हवा सनसनाती हुई बहने लगी थी। शहर से बाहर जो बड़ी सड़क स्टेशन की ओर गयी थी उसे पकड़ वे चले जा रहे थे। हवा के साथ उड़कर धूल उनकी आँखों में पड़ने लगी थी। सड़क के दोनों ओर धूल से ढकी भूरी घास और मुर्झाये फूल जमीन पर झर काँप रहे थे। ऊपर नील आसमान पर गोल सफेद नीरव बादल-दल इधर से उधर तैरते फिर रहे थे। लेकिन कुछ दूर आगे बढ़ते ही घने काले बादल घिर आये। हवा जैसे उन्हीं के हृदय से साँस बनकर निकल रही थी। लड़के ठमककर रुक गये। बक्स जमीन पर रख लारी या गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन कैसे अचरज की बात है! आज सभी लारियाँ और गाड़ियाँ

जैसे उल्टी ही दिशा में जा रही हैं! सिर्फ स्टेशन से शहर की ओर ही। खैर, अन्त में बक्सों से लदी एक लारी आती दिखलायी पड़ी। ड्राइवर की बगल में कोई नहीं था। लड़कों ने हाथ उठाया। लेकिन ड्राइवर ने तनिक देखा और लारी लेकर गायब हो गया। इसके बाद एक और गाड़ी आयी। ड्राइवर के अलावा उस गाड़ी में एक आदमी और था। लेकिन यह गाड़ी भी सरसराती चली गयी। शुरिक बोल उठा, "क्या मुसीबत है!"

वास्का बोला, "सभी आदमी हाथ क्यों उठाते हो? कैसी बेवकूफी है! वे समझते हैं कि हम सभी गाड़ी पर बैठना चाहते हैं। झेंका, तुम आगे आकर अकेले ही हाथ दिखलाओ तो! वह देखो, एक गाड़ी आ रही है……सभी लड़के वास्का का हुक्म मानकर मौन खड़े रहे। गाड़ी के नजदीक आते ही केवल झेंका ने हाथ उठाया। वास्का ने खुद ही अपने हुक्म का उल्लङ्घन किया। बड़े लड़के छोटे लड़कों से जैसा करने को कहेंगे, खुद वैसा कभी नहीं करेंगे यही उनकी रीति है। गाड़ी कुछ आगे बढ़ अचानक रुक गयी।

झेंका हाथ में बक्स लिये दौड़ गया। वास्का भी हाथ में कोट लिये आगे बढ़ गया। खट की आवाज के साथ दरवाजा खुल गया। झेंका एक ही लहमें में गाड़ी में जा बैठा। उसके बाद वास्का भी गाड़ी में जा घुसा। इसके बाद धूल के बादल चारों ओर छा गये और सब कुछ अँधेरे में छिप गया। धूल के

बादलों के फट जाने पर उन्होंने भौचक्का होकर देखा कि झेंका और वास्का को लेकर गाड़ी आँखों से ओझल हो चुकी है। अब उन्होंने समझा, वास्का ने उनलोगों को कैसा चकमा दिया है! किसी को कुछ बताये बिना झेंका के साथ गाड़ी में बैठ किस चालाकी से वह भी स्टेशन चला गया! वे अब क्या करें? उदास हो घर की ओर लौट चले। हवा के थपेड़े इस बार उनकी पीठ पर लग रहे थे, लगता था जैसे हवा उन्हें ठेले लिये जा रही है। सेर्योझा के लम्बे बिखरे बाल बार-बार उसके मुँह और आँखों पर आ जाते थे।

नीरवता को भंग करती हुई लीदा सबसे पहले बोली,—"झेंका की कमीज एकदम पुरानी है। मौसी ने बेचारे को एक भी कमीज नहीं बनवा दी।"

शुरिक बोला, "मौसी बेचारी क्या करेगी, कहो न? जहाँ वह काम करती है वहाँ का मैनेजर नम्बरी पाजी है। उसे बराबर ठगता है।"

इधर सेर्योझा हवा के थपेड़े खाता दूसरी ही बात सोच रहा था। वह सोच रहा था—झेंका कितना भाग्यवान है। वह ट्रेन पर चढ़ेगा! अपने जीवन में सेर्योझा कभी भी ट्रेन पर नहीं चढ़ा था।

आसमान पर अँधेरा छा गया…अचानक बिजली कौंध उठी और पलभर में ही झमाझम वर्षा होने लगी। वे जी-जान से दौड़ पड़े! कीचड़ में उनके पाँव फिसलते जा रहे थे। बिजली

पूरे आसमान पर मानो नाच रही थी। हवा की सनसनाहट के साथ ही बिजली गिरने की झनझनाहट भी सुनायी पड़ रही थी। नन्हा विक्तर अब डरकर रोने लगा था।

इस तरह झेंका सचमुच उन्हें छोड़कर चला गया। कुछ दिनों के बाद उसकी दो चिट्ठियाँ आयीं, एक वास्का के पास और दूसरी झेंका की मौसी के पास। वास्का को उसने क्या लिखा था यह इनमें से किसी को भी उसने नहीं बताया। ऐसा हावभाव दिखाया जैसे कितनी गुप्त बातें उसमें लिखी हों। लेकिन मौसी से ही उन्हें मालूम हो गया कि झेंका बोर्डिङ्ग-स्कूल में भर्ती हुआ है और अभी होस्टल में रहता है। उन लोगों ने वहाँ नयी पोशाक भी दी है। मौसी सबसे कहती फिरती है, "जो भी हो, लड़के को मैंने एक सहारा लगा दिया, इसके लिए ईश्वर को बहुत धन्यवाद है, अब वह आदमी बन जायेगा। मैंने ही तो सब किया है।"

झेंका कभी भी अपने दल के लड़कों का सरदार नहीं बन सका। वह जरा भावुक प्रकृति का था इसीलिए सरदारी या मुखियागिरी नहीं कर सकता था। इसीलिए बच्चे उसकी याद धीरे-धीरे भूलने लगे। कभी-कभी जब उसकी याद आ जाती तो केवल इतना ही सोचते—झेंका वहाँ कितने आराम से होगा, बिस्तरे की बगल में आलमारी होगी—उसका दिल बह-लाने के लिए कितने नाच-गान होते होंगे। सैनिक सैनिक के खेल में अब शुरिक या सेर्योझा ही बारी-बारी से सेनापति बनते थे।

परनानी का श्राद्ध

परनानी अचानक बीमार पड़ गयी थी। उसे अस्पताल में भर्ती कर दिया गया था। दो दिनों तक सबने एक दूसरे से कहा कि उसे अस्पताल जाकर देखना चाहिये। लेकिन कोई भी नहीं गया। तीसरे दिन नानी अचानक आ धमकी। उस समय घर में केवल सेयोंझा और मौसी थी, नानी पहले से भी आज अधिक चिन्तित और कठोर लगती थी। मामूली स्वागत-सत्कार के बाद नानी बैठकर बोली, "माँ मर गयी।" मौसी फौरन दोनों हाथ छाती पर रख बोली, "उनकी आत्मा को शान्ति मिले।"

नानी ने अपना वही काला बड़ा-सा थैला खोला और एक बेर निकाल सेयोंझा को दे दिया। इसके बाद बोली, "मैं कितनी ही चीजें माँ के लिए ले जा रही थी। तभी उन लोगों ने कहा कि माँ दो घंटा हुआ मर गयी। लो सेयोंझा बेर धोये हुए हैं खा डालो। खूब मीठे हैं। माँ उन्हें खूब पसन्द करती थीं। चाय में रख नरम बनाकर खाती थीं। उन्हें अब तुम्हीं लो, खा डालो।" नानी ने थैले से बहुत-सा बेर निकाल टेबुल पर रख दिया।

मौसी बोली, "सब उसे ही क्यों दिये दे रही हैं? कुछ आप भी खाइये न।"

नानी रोने लगी, रोते-रोते बोली, "नहीं मैं नहीं खाऊँगी।

माँ के लिए खरीदा था।"

"अच्छा, उनकी उमर कितनी थी?" मौसी ने पूछा।

"बेयासी वर्ष, कितने तो इससे भी अधिक दिन जीते हैं। माँ अगर नब्बे वर्ष जीती तो क्या बिगड़ जाता!"

मौसी नानी को एक गिलास दूध देकर बोली, "लीजिये इसे पी लीजिये, पीने से तबीयत कुछ अच्छी लगेगी। शोक, दुख तो मनुष्य के जीवन में लगा ही है, फिर भी खाना-पीना तो होगा ही।"

नाक झाड़ आँखें पोछ नानी ने 'धन्यवाद' कह गिलास हाथ में ले अपने होठों से लगा लिया। दूध पी थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोली, "मैं अपनी माँ को जैसे अपनी आँखों के सामने स्पष्ट देख रही हूँ। माँ कितनी विद्वान थीं। कितनी ही किताबें पढ़ डाली थीं। कितनी ही बातें जानती थीं अब तो मुझे सुनसान घर में अकेले रहना होगा, कैसे रहूँगी? किरायादार रखना पड़ेगा वरना अकेले तो मैं मर ही जाऊँगी।"

मौसी सर्द आह भरती हुई बोली, "उफ!"

दोनों हाथों में बेर लिए सेर्योझा आँगन में चला आया। मीठी धूप की ओर पीठ रख बैठा-बैठा वह न जाने कितना क्या सोचने लगा। नानी ने क्यों कहा कि उसका घर सूना हो गया है? तो परनानी अब नहीं है। शायद मर गयी। दोनों ही तो एक साथ रहती थीं। तो क्या परनानी इस नानी

की माँ थी ? अब नानी के घर जाने पर कोई उसे त्योरियाँ चढ़ा कुछ कहेगा नहीं, चिढ़ायेगा नहीं।

मौत किसे कहते हैं सेर्योझा जानता था। मौत उसने कई बार देखी है। एकबार उसने अपने बिलाव को नन्हा-सा चूहा मारते देखा है, मारने के पहले बिलाव उस चूहे के बच्चे के साथ इधर-उधर कैसे खेल रहा था! इसके बाद अचानक छलाँग मार उसने नन्हे चूहे की गरदन गप से पकड़ ली और पल भर में उसकी उछल-कूद समाप्त कर दी। उसके बाद अपने थोबड़े मुँह को हिलाता-डुलाता बड़ी अमीरी चाल से उसे खाने लगा। एकबार उसने एक मरे हुए बिलाव के बच्चे को देखा था। जैसे मुट्ठी भर गंदी रूई हो। मरी हुई तितलियाँ तो कितनी ही देखी हैं। उनके खूबसूरत डैने फट गये थे, फूल के पराग जैसे महीन कण उनके डैनों पर फैले रहते हैं। वे भी न जाने कहाँ उड़ गये थे। तालाब के किनारे मरी हुई मछलियाँ भी उसने देखी हैं। अपने रसोईघर की टेबुल पर तो प्रायः रोज ही मुर्गी का मरा हुआ बच्चा देखने को मिलता है। हंस की तरह लम्बी गरदन के एक छोटे-से काले छेद से खून बर्तन में एक-एक ठोप गिरता जाता है। लेकिन माँ या मौसी मुर्गे के बच्चे को मार नहीं पातीं, लुकियानिच ही यह काम करता था। पिंजड़े में हाथ घुसा लुकियानिच जब एक को पकड़ता है तो सभी किचिर-मिचिर करते हुए डैने फड़फड़ाने लगते हैं। उनका करुण-क्रंदन सेर्योझा को अच्छा नहीं लगता, इसीलिये वह वहाँ

से भाग जाता है। फिर रसोईघर में जाने पर कनखी से भरे हुए मुर्गे के बच्चे और टप-टप गिरते खून को देखकर उसकी देह सिहर उठती है, वह उदास हो जाता है। वे कहती हैं अब इसके लिए अफसोस करने की कोई जरूरत नहीं। मौसी अपने लम्बे निपुण हाथों से उसके डैनों को नोचती हुई कहती, "अब इसे कुछ भी मालूम नहीं होता।"

सेर्योझा ने एकबार एक मरी हुई गौरैये को छू दिया था। वह इतनी ठण्ढी और सख्त थी कि डर के मारे उसने उसी दम अपना हाथ खींच लिया था। बरफ के टुकड़े के समान ठण्ढी बेचारी गौरैया सुबह की हलकी धूप में एक जैतून की झाड़ी में पड़ी थी। अब वह कभी उठकर न तो चहकेगी न गाना ही गायेगी।

तो एकदम ठण्ढा और निश्चल हो जाने का ही नाम मौत है ?

उसी मरी गौरैये को देख उस दिन लीदा ने कहा था, "आओ इसे जुलूस के साथ कब्र देने के लिए ले चलें!" इसके बाद वह कूट का एक छोटा-सा डिब्बा ले आई। उसके अन्दर फटे-पुराने कपड़े बिछा दिये, चिथड़ों से एक तकिया तैयार कर दिया और चारों ओर करीने से फीतों की जाली लगा एक बिस्तर तैयार कर डाला। लीदा सचमुच सभी कामों में बिल-कुल उस्ताद थी, यह बात माननी ही पड़ेगी। इसके बाद उसने सेर्योझा से एक गड्ढा खोदने को कहा। उसी बक्से में उस मरी

गौरैये को सुला उसका ढक्कन बन्द कर दिया और उसे गड्ढे में रख ऊपर से मिट्टी से ढक दी। लीदा ने उस मिट्टी के बीच पेड़ की एक टहनी खड़ी कर दी। इसके बाद बोली, "देखो। कितने सुन्दर तरीके से हम लोगों ने उसे कब्र दे दी। इसने कभी सपना भी नहीं देखा होगा कि ऐसा होगा।"

वास्का और फ़्रेंका ने उस जुलूस में भाग नहीं लिया था। सिगरेट पीते हुए थोड़ी दूर बैठे-बैठे उदास हो सिर्फ देख रहे थे। लेकिन उन्होंने इस काम के लिए उनकी हँसी भी नहीं उड़ाई। आदमी भी कभी-कभी मरता है, यह बात उसे मालूम है। उस समय कफिन नाम के एक लम्बे-से बक्से के अन्दर रख जुलूस के साथ उसे ले जाते हैं। सेर्योझा ने यह जुलूस दूर से कई बार देखा है। लेकिन मरा आदमी उसने कभी नहीं देखा है।

मौसी ने एक तश्तरी में सफेद भात परोस उसके किनारे-किनारे लाल-लाल मिठाइयाँ सजा बिलकुल बीच में भात के ऊपर ही कुछ मिठाइयाँ सीधी खड़ी कर दीं। वे न तो हूबहू फूल की तरह थीं और न तारे की तरह।

सेर्योझा ने पूछा, "क्या तारा बनाया है?"

"नहीं, तारा नहीं, क्रास बनाया है। हम लोग परनानी की अन्त्येष्टि क्रिया में जा रहे हैं न।"

इसके बाद मौसी ने उसका हाथ मुँह अच्छी तरह धो-पोंछ कर कमीज और जूता-मोजा पहना दिया। नाविकवाला

नील सूट और नीली टोपी भी उसे पहनायी गयी। आज जैसे विशेष यत्न से उसे विशेष तरह से सजाया गया हो। मौसी ने भी खूब सजधजकर काले फीते का रूमाल गले में लपेट लिया। इसके बाद एक सफेद रूमाल में भात की तश्तरी बाँध उसे एक हाथ में लटका लिया और दूसरे हाथ में फूलों का गुच्छा ले लिया। मौसी ने सेर्योझा को दो बड़ी-बड़ी डालियों में फूल दे दिया। सेर्योझा ने बाहर आकर देखा, वास्का की माँ हाथ में बाल्टी लिये पानी लाने जा रही थी। वह खुशी से चिल्ला उठा, "नमस्ते। हम लोग परनानी की अन्त्येष्टि में जा रहे हैं।"

लीदा अपने घर के दरवाजे पर विक्तर को गोद में लिये खड़ी थी। उसे देखकर सेर्योझा समझ गया, लीदा भी उनके साथ आना चाहती है। लेकिन उसका फ्राक जो फटा और गन्दा है! सेर्योझा आज कितना सजधजकर निकला है और लीदा इस भद्दी पोशाक में खाली पाँव जायेगी कैसे? सच, उसके लिए सेर्योझा को बड़ा अफसोस हो रहा था। इसलिये इच्छा न रहने पर भी उसे बुलाया, "आओ न हमारे साथ। क्या होगा, ठीक जैसे हो वैसे ही चली आओ।"

किन्तु लीदा एक घमंडी लड़की थी, चौराहे पर आ खड़ी हो गयी और अपनी क्रुद्ध आँखें मलती हुई उनकी ओर केवल देखती रही।

अब वे चौराहे से मुड़कर एक संकरी गली से चलने

लगे। सेयोंझा को गरमी लग रही थी। फूलों के गुच्छे उससे अब ढोये नहीं जाते। इसलिये वह मौसी से बोला, "इन्हें भी तुम ले लो। मैं नहीं ढो पा रहा हूँ।"

मौसी ने उसके हाथ से गुच्छे ले लिये। किन्तु फिर भी वह ठोकरें खाता चल रहा था। रास्ते पर कंकड़-पत्थर कुछ भी नहीं फिर भी ठोकर खा रहा था। मौसी ने पूछा, "आखिर बात क्या है? तुम्हें क्या हो गया है? जरा सुनूँ।"

"गर्मी जो लग रही है। इतने कपड़े पहनकर रहा जा सकता है! कोट ले लो, मैं केवल कमीज और पैंट पहनकर जाऊँगा।"

"बेवकूफ की तरह मत बोलो। अन्त्येष्टि में कोई कभी सिर्फ पैंट पहनकर जाता है? यह देखो, हमलोग बस-स्टाप पर पहुँच गये। अब बस पर चढ़ेंगे।"

बस पर चढ़ने का नाम सुनते ही सेयोंझा उत्साह से चलने लगा। लेकिन रास्ता तो जैसे खत्म ही नहीं होना चाहता। इसका जैसे अन्त ही नहीं। सामने से धूल उड़ाती कुछ गायें आ रही थीं। उन्हें देख मौसी बोली, "अब मेरा हाथ पकड़ लो तो!"

सेयोंझा बोला, "पानी पीऊँगा। प्यास लगी है।"

"बेवकूफी मत करो। अभी तुम्हें प्यास लग ही नहीं सकती।"

मौसी भी कैसी है, क्यों विश्वास नहीं करती कि उसे सचमुच ही जोरों की प्यास लगी है? लेकिन मौसी की यह

फटकार सुनकर अब पानी पीने की इच्छा न रही।

भरी थानोंवाली गायें भारी सिरों को हिलाती-डुलाती उनकी बगल से चली गयीं।

इसके बाद मैदान के पास आकर वे बस पर चढ़ गये। बस के एक कोने में बच्चों के बैठने की सीट पर वह बैठ गया। सेर्योझा बस पर बहुत कम चढ़ा था। इसलिए आज का दिन हर हालत में उसके जीवन का एक खास दिन कहा जा सकता है। घुटने मोड़कर वह बैठ गया और खिड़की से बाहर देखने लगा। कभी-कभी अपनी बगल में बैठे हमसफर को भी देख लेता था। वह उससे उमर में बहुत कम हो होगा। हाँ, देखने में मोटा-ताजा जरूर था। वह गुलाबरेवड़ी चूस रहा था। उसके दोनों गाल चीनी के रस से चपचपा गये थे। सेर्योझा की ओर वह गर्वीली चितवन से देख रहा था। उसकी वह चितवन जैसे सेर्योझा से कह रही हो—देखो, मैं गुलाबरेवड़ी खा रहा हूँ। तुम्हारे पास तो है ही नहीं।

जब कंडक्टर उनके पास आकर खड़ा हो गया तो मौसी ने पूछा, "इस बच्चे का भी भाड़ा लगेगा ?"

कंडक्टर उसे देखकर बोला, "जरा इधर आओ तो नाप कर देखें।"

बस की दीवाल पर एक ओर बच्चों की ऊंचाई नापने के लिए एक काला निशान था। जिस बच्चे का सिर उस निशान को छू लेगा उसे टिकट खरीदना होगा। सेर्योझा वहाँ जा

पाँव की उँगलियों पर जरा तनकर खड़ा हो गया। कंडक्टर ने कहा, "हाँ, इसका टिकट लगेगा।"

सेर्योझा ने इसबार विजयी की तरह उस मोटे-ताजे लड़के की ओर देखा। सेर्योझा की आँखें कह रही थीं—तुम्हारा टिकट नहीं लगता, किन्तु मेरा तो लगता है। लेकिन अन्त में उस मोटे-ताजे लड़के की ही जीत हुई, क्योंकि सेर्योझा और मौसी जब बस से उतर रहे थे तब भी वह एकदम निश्चित होकर बैठा हुआ था। शायद वह बहुत दूर जायेगा।

बस से उतरते ही वे सफेद पत्थर के एक विशाल फाटक पर आ खड़े हुए। फाटक के उस तरफ बहुत-से लम्बे-लम्बे सफेद मकान थे। उन मकानों के चारों ओर छोटे-छोटे पौधों की कतारें थीं। पौधों के तने उजले रंग से रंग दिये गये थे। नीली ड्रेसिंग-गाउन पहने कितने लोग इधर-उधर घूम रहे थे, कितने बेंच पर बैठे बातें कर रहे थे। सेर्योझा ने भौचक्का होकर पूछा, "यह क्या है?"

"अस्पताल" पाशा मौसी ने उत्तर दिया। सबसे अन्त में एक कोने में जो बड़ा मकान दिखलायी पड़ रहा था वे अब उसी ओर चले। रास्ते के मोड़ पर जाते ही देखा—करोस्तेलेव माँ, नानी और लुकियानिच खड़े थे। सिर में रूमाल बाँधे तीन बूढ़ी महिलायें भी उनके निकट ही खड़ी थीं। सेर्योझा उनकी ओर देख उत्सुकता से बोल उठा, "हमलोग बस से आये हैं।" किसी ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। मौसी ने

मुँह पर उँगली रखकर बोलने से मना किया। अब वह समझ गया कि यहाँ बोलना मना है। हाँ, वे खुद आपस में फुसफुसा कर बातें कर रहे थे। माँ ने मौसी की ओर देखकर कहा, "इसे ले क्यों आयी ?" करोस्तेलेव टोपी हाथ में लिये शान्त और चिन्तित-सा खड़ा था। सेर्योझा ने दरवाजे की ओर जरा आगे बढ़कर देखा—एक छोटे से अँधेरे घर की ओर कितनी ही सीढ़ियाँ चली गयी थीं। अब वे सभी धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए उन्हीं सीढ़ियों से उतरकर उस घर में घुसे।

सूरज की तेज रोशनी से आने के कारण पहले तो सेर्योझा की आँखों के सामने सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा दिखलायी पड़ता था। इसके बाद दीवाल की ओर एक चौड़ा बेंच जरा-सा दिखाई पड़ा। घर की फर्श ऊबड़-खाबड़ थी। बीच में एक बहुत ऊँची लकड़ी की कफिन पड़ी हुई थी। कफिन के किनारे पर मलमल की झालरें थीं। घर भी सर्द था, उससे सोंधी गंध निकल नाक में घुस रही थी। नानी जल्दी से उस बक्से के पास जा सिर झुकाकर खड़ी हो गयी। मौसी भी उसकी बगल में खड़ी हो दम खींचकर बोली, "हे भगवान! यह क्या किया ? देखो-देखो, उसके दोनों हाथ कैसे नीचे की ओर लुढ़क रहे हैं, छाती पर क्यों नहीं हैं ?"

नानी सीधी खड़ी होकर बोली, "माँ आस्तिक नहीं थीं।"

मौसी बोली, "इससे क्या हुआ ? क्या फौजी कायदे से ईश्वर के दरबार में जाया जाता है ?" उन तीनों महिलाओं की

ओर देखकर मौसी ने पूछा, "आप लोग क्या कहती हैं ?" उन तीनों ने केवल लम्बी साँस खींची।

सेर्योझा इतना नीचे था कि वह कुछ भी देख नहीं पा रहा था। उसने बेंच पर चढ़ सिर ऊँचाकर कफिन के अन्दर झाँककर देखने की कोशिश की। उसने सोचा था कि उसके अन्दर परनानी को ही देखेगा। लेकिन ठीक परनानी तो थी नहीं, दूसरी ही कोई अजीब चीज उसमें सोयी थी। कुछ-कुछ परनानी-सी-ही लगती थी। फिर भी टूटा-फूटा-सा मुँह और शिरायें निकलीं, ठोड़ी...यह तो परनानी हो ही नहीं सकती। तब यह क्या है......क्या मनुष्य कभी इस तरह आँखें बन्द किये रह सकता है ? लोग नींद में भी इस तरह विचित्र ढंग से आँखें बन्द नहीं करते। और यह कितना लम्बा...किन्तु परनानी तो कद में छोटी थी।

चारों ओर ठण्ड, निराशा और नीरवता छाई थी। सभी जैसे किसी दुख से मुरझाये हुए अगल-बगल खड़े हो फुसफुसा कर न जाने क्या बोल रहे थे। सेर्योझा अचानक डर गया। अगर वह जिन्दा हो—तपाक से उछलकर उठ बैठे और "अरे! अरे !!" चिल्ला उठे तो कितनी भयानक बात हो......यह सोच सेर्योझा जी-जान से चिल्ला उठा।

सेर्योझा चिल्लाया और उसी दम जैसे ऊपर से, सूरज की रोशनी से एक जीवन्त परिचित स्वर ने उसके चीत्कार का प्रत्युत्तर दिया...लगा जैसे किसी गाड़ी का भोंपू...माँ उसे

झटककर खींचती हुई बाहर ले आयी। फाटक के पास एक लारी खड़ी थी। कितने ही लोग इधर-उधर घूम रहे थे। ताश्या मौसी लारी के सामने की सीट पर बैठी थी। इसी मौसी ने उस दिन करोस्तेलेव का सामान उनके घर पहुँचा दिया था। ताश्या मौसी 'ब्राइट शोर' कारखाने में काम करती थी और कभी-कभी करोस्तेलेव को लारी से ले जाती थी। माँ ने सेयोंझा को मौसी की बगल में बैठाकर कहा, "यहीं बैठे रहो," और दरवाजा बन्द कर दिया।

माँ के चले जाने पर मौसी ने उससे पूछा, "परनानी की अन्त्येष्टि देखने आये हो? शायद उसे तुम बहुत प्यार करते थे।"

"नहीं, मैं उसे एकदम नहीं चाहता था।"

"तो फिर आये क्यों? नहीं चाहते थे तो कब्र देखने नहीं आते।"

बाहर की रोशनी और इस बातचीत से उसका वह विचित्र भय, देह की सिहरन और दिल की धड़कन जरा कम हुई। लेकिन वह उस अँधेरी कोठरी का डरावना दृश्य यकायक भूल न सका। वह रह-रहकर सिहर उठता था, चारों ओर देख, मन ही मन न जाने क्या सोच अन्त में बोला, "अच्छा, ईश्वर के दरबार में उपस्थित होने का क्या मतलब है?"

मौसी हँसकर बोली, "कुछ नहीं, यह बातचीत करने का एक तरीका है।"

"लेकिन वे इस तरह बातें क्यों करते हैं ?"

"बूढ़े लोग इसी तरह बातचीत करते हैं। उनकी बातों पर कभी ध्यान मत देना। ये एकदम झूठी, फिजूल बातें हैं।"

इसके बाद दोनों ही कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। मौसी अपनी दोनों हरी आँखों को जरा सिकोड़कर भावपूर्ण ढंग से हँसकर बोली, "हाँ, सबको यहाँ एक न एक दिन आना होगा।"

यहाँ.......कहाँ ? क्या कह रहे हैं ये लोग ?....लेकिन और स्पष्ट रूप से वह कुछ भी जानना नहीं चाहता था। इसलिए फिर कुछ नहीं पूछा। इसके बाद जब उसने कफिन को उस अन्ध-कूप से निकाल बाहर लाते देखा तो नजर दूसरी ओर फेर ली। कफिन के ऊपर आवरण अभी तक रखा हुआ था, बस यही गनीमत थी। लेकिन उस कफिन का इसी लारी पर रखा जाना उसे अच्छा न लगा।

कब्रगाह पहुँचने पर उन्होंने कफिन को उतार लिया और भीतर ले चले। सेयोंझा और ताश्या मौसी लारी से नहीं उतरे। बाहर गाड़ी रखने की जगह लारी खड़ी रही। सेयोंझा ने कब्रगाह के भीतर चारों ओर देखा—केवल क्रास और एक-एक लाल तारा माथे पर चिपकाये लकड़ी के खम्भे खड़े थे। सेयोंझा ने और भी देखा—फाटक के बिलकुल नजदीक ही एक टीले के दरार से लाल चीटियाँ कतार बाँधकर आ-जा रही थीं। दूसरे बहुत-से टीलों पर छोटी-छोटी घास उग आयी

थीं। सेर्योझा अब सोचने लगा—अच्छा, इसी कब्रगाह में सबको एक दिन आना होगा, शायद मौसी ने यही कहा है।

कुछ देर बाद वे सब लौट आये। लारी उन लोगों को लेकर फिर घर की ओर चल पड़ी। सेर्योझा ने पूछा, "पर-नानी को क्या मिट्टी देकर ढक दिया गया है?"

ताश्या मौसी ने उत्तर दिया, "हाँ बेटे।"

घर लौटने पर सेर्योझा ने देखा कि पाशा मौसी उनके साथ नहीं लौटी है। लुकियानिच ने कहा, "पाशा शव ले जाने वालों को पहले की तरह माँस खिलायेगी। दिन भर रसोई बनाकर अपने साथ ले गयी है।"

नानी ने सिर से रूमाल खोल हाथ से बालों को झाड़ा। इसके बाद बोली, "उनके साथ इस विषय में बहस करने से क्या लाभ है? वह और वे तीनों महिलाएँ अब भात खाकर प्रार्थना करेंगी और इसी से यदि उन्हें शान्ति मिलती है तो मिलने दो।"

अब सभी स्वाभाविक स्वर में बातचीत करने लगे थे। यहाँ तक कि कभी-कभी हँसते भी थे। माँ फिर बोली, "सच-मुच पाशा में कितने ही कुसंस्कार हैं।"

कुछ देर बाद वे टेबुल के चारों ओर खाने बैठे। लेकिन सेर्योझा से खाया नहीं जाता। उसे जैसे उल्टी आ रही हो। सेर्योझा चुपचाप बैठा था और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें फाड़ कर बड़ों की ओर केवल देख रहा था। अब तक जो कुछ भी

हुआ था उन्हें जरा भी याद करना नहीं चाहता और न उन पर सोचना चाहता था। लेकिन कितने ताज्जुब की बात है! वे सारी बातें घूम फिर कर उसके दिमाग में आ ही जाती थीं……भूत के भय से शरीर की वह सिहरन……सर्द कोठरी का वह अँधेरा, ऊमस और मिट्टी की वह गंध—सब याद आ रहे थे। अचानक वह पूछ बैठा, "हम सभी एक दिन वहीं जायेंगे, यह क्यों कहा ?"

बड़ों ने बातचीत बन्दकर उसकी ओर देखा। करोस्तेलेव बोला, "यह बात किसने कही ?"

"ताश्या मौसी ने।"

"उसकी बात तुम मत सुनना, सब बातें क्या सुनी ही जाती हैं ?"

"लेकिन एक दिन हम सभी तो मरेंगे ही ?"

वे अचरज से उसकी ओर देख रहे थे! यह पूछकर मानो उसने भारी गलती की है। वे क्या कहते हैं, यह सुनने के लिए वह सबकी ओर देखता रहा। थोड़ी देर बाद करोस्तेलेव बोला, "नहीं, हममें से कोई भी नहीं मरेगा। तुम्हारी ताश्या मौसी की इच्छा हो तो वह मरे। लेकिन हम लोग नहीं मरेंगे। खासकर तुम तो कभी नहीं मरोगे यह बात मैं कसम खाकर कहता हूँ बेटा।"

"मैं कभी मरूँगा नहीं ?"

"नहीं, कभी नहीं।" करोस्तेलेव ने दृढ़ स्वर में हँसते हुए

उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा। सेर्योझा का दिल अब कुछ हल्का हो गया। तबीयत खुश हो गई। खुशी से उसका मन भर गया। अब वह हँसने लगा, लेकिन फिर उसे जोरों की प्यास लगी, प्यास तो उसे बहुत पहले ही से लगी थी। लेकिन केवल मौसी की फटकार से उस बात को अभी तक अनजाने ही भूल बैठा था। उसने कई गिलास पानी पी लिया। उसे बड़ा आनन्द मालूम हो रहा था। करोस्तेलेव जो कुछ कहता है वह तनिक भी झूठ नहीं होता। उसकी हरेक बात पर वह मन से विश्वास करता था। एक दिन वह मर जायेगा—यह सोचने से वह कैसे बचेगा, अथवा किस तरह मौज करेगा, खेलेगा? और जब करोस्तेलेव कहता है कि मैं कभी मरूँगा नहीं तब फिक्र किस बात की?

करोस्तेलेव की क्षमता

कई लोगों ने जमीन में एक पर एक कई गड्ढे खोद डाले। उन गड्ढों में लम्बे-लम्बे खम्भे बैठा उनकी जड़ों में मिट्टी भर दी और उनके सिरों पर तार बाँध दिया। सेर्योझा के घर के आँगन के ऊपर से होते हुये उस तार ने मकान के चारों ओर की दीवालों को घेर लिया। इसके बाद एक काला टेलीफोन उनके खाने के घर में छोटी टेबुल पर रख दिया गया। फार स्ट्रीट में शायद यही पहला और एकमात्र टेलीफोन था और वह भी करोस्तेलेव का। करोस्तेलेव के लिए ही उन लोगों ने

जमीन में गड्ढे बनाये, खम्भे बैठाये और तार बाँधकर यह सारा काम किया। दूसरे लोगों के पास टेलीफोन न होने से भी चल सकता था लेकिन करोस्तेलेव का काम टेलीफोन के बिना कैसे चल सकता था ?

रिसीवर हाथ में लेते ही एक लड़की जिसे तुम देख नहीं पाते, बहुत दूर से बोलती है, 'एक्सचेंज।' उसके बाद करोस्तेलेव अफसर की तरह हुक्म झाड़ता हुआ कहता—"ब्राइटशोर" अथवा "पार्टी कमेटी" अथवा "रिजनल स्टेट फार्म आफिस।" इसके बाद वह कुर्सी पर बैठ लम्बे-लम्बे पाँवों को हिलाते हुए टेलीफोन पर बातें करता रहेगा। इस तरह बात करते समय उसे कोई तंग नहीं कर सकता, यहाँ तक कि माँ भी नहीं।

कभी-कभी टेलीफोन की घंटी घनघनाकर बजते ही सेर्योझा दौड़ जाता और अपने नन्हे हाथों से रिसीवर उठा लेता, "हैलो !" और उधर से उसी वक्त एक आवाज करोस्ते-लेव को बुला देने को कहती। करोस्तेलेव को कितने लोग चाहते थे! लेकिन लुकियानिच, माँ अथवा मौसी को तो कोई एक बार भी बुला देने को नहीं कहता और उसे तो कभी कोई चाहता ही नहीं।

रोज खूब सबेरे करोस्तेलेव 'ब्राइटशोर' चला जाता था। ताश्या मौसी कभी-कभी दोपहर को खाने के लिए उसे घर ले आती थी। लेकिन अक्सर दोपहर को खाने के लिए घर आने का समय नहीं मिलता था। माँ "ब्राइटशोर"

में फोनकर उसे खाने के लिए बुलाती थी, लेकिन उधर से उत्तर मिलता था कि करोस्तेलेव कहीं किसी काम से गया है, लौटने में देर होगी।

ब्राइटशोर फार्म सचमुच बहुत बड़ा था। उस दिन करोस्तेलेव के किसी काम से करोस्तेलेव और ताश्या मौसी के साथ गाड़ी पर चढ़कर अगर वहाँ नहीं जाता तो वह जान भी न पाता। वे गाड़ी से चलते रहे, चलते रहे। लगता था फार्म के भीतर रास्ते का जैसे अन्त ही नहीं। दोनों तरफ विस्तृत खेत, मैदान, रास्ते के दोनों तरफ ऊँचे पहाड़ों की तरह चारे का ढेर दूर की झाड़ियों तक फैला हुआ था। दूर तक फैले हरे-भरे खेत, गेहूँ की बालों से लदकर नाचते से खेत हरे फीते की तरह अन्तहीन पथ गाड़ी के सामने आ, फिर उसे पीछे छोड़ देता है। दैत्याकार लारियाँ और ट्रैक्टर ट्रेलरों को खींचते हुए अंधाधुंध चले जा रहे थे। सेर्योझा पूछता, "यह कौन जगह है।" उत्तर मिलता, "ब्राइटशोर फार्म है ब्राइटशोर।"

फार्म के तीन विशाल मकान अलग-अलग इस विस्तृत भूमि के इधर-उधर खड़े थे। एक मकान के ऊपर एक विराट गुंबद था। दूसरे मकानों में कल-पुर्जे का कारखाना था। इन कारखानों में रात दिन काम चलता रहता था। चिमनी से दनादन आग की चिनगारियाँ निकलती रहती थीं। हथौड़े पीटने के भी विकट शब्द सुनायी पड़ रहे थे। जहाँ उनकी

गाड़ी रुकी थी वहीं लोगों ने बाहर आकर करोस्तेलेव से बातें की थीं।

करोस्तेलेव ने कारखाने में सब कुछ देखा सुना, कुछ प्रश्न किया, कितने ही सुझाव दिये, और फिर गाड़ी पर चढ़ चल दिया। सेर्योझा अब ठीक से समझ गया कि क्यों वह रोज इतना सबेरे यहाँ चला आता है। करोस्तेलेव के निर्देश के बगैर कोई भी काम करना उनके लिए संभव नहीं।

इसके अतिरिक्त फार्म के भीतर कितने प्रकार के पशु-पक्षी भी रहते थे। सूअर, भेड़, मुर्गी, हंस लेकिन अधिक गायें ही थीं। गर्मी पड़ने पर गायें मैदान में चरती थीं। बरसात के दिनों में रहने के लिए बाड़े उस समय भी मौजूद थे! लेकिन अभी गायें गोशाले में ही अपनी-अपनी जगह खड़ी थीं। सींग में लोहे की जंजीर बाँधकर हरेक गाय को एक-एक लकड़ी की खूँटी से बाँध दिया गया गया था। सामने के लम्बे हौज के अगल-बगल खड़ी हो गायें खुशी से पूँछ हिलाती हुई खा रही थीं। लेकिन उनका बर्ताव आपस में अच्छा नहीं था। थोड़ी-थोड़ी देर पर कोई न कोई दौड़कर आ जाता और उसी क्षण गोबर साफ कर देता। उनका यह बर्ताव देखकर सेर्योझा को बड़ी शरम आयी थी। करोस्तेलेव का हाथ पकड़ आँखें ऊपर उठाये बिना ही वह धीरे-धीरे चल रहा था। करोस्तेलेव गायों के बदन पर हाथ फेरता था, आदर करता था। लोगों को न जाने क्या निर्देश देता था। वह एक जगह फिसल भी गया,

लेकिन बुरा नहीं माना। निर्देश देकर आगे बढ़ गया।

एक महिला करोस्तेलेव के साथ किसी विषय पर बहस करने लगी।

करोस्तेलेव ने गम्भीर स्वर में केवल इतना ही कहा, "ठीक है, कोई बात नहीं, जाओ, जो करती हो करो।" लड़की उसी दम कहीं अपने काम पर चली गयी। नीली टोपी वाली एक दूसरी महिला के पास आकर करोस्तेलेव बोला, "इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मुझे क्या इन छोटी-मोटी बातों के लिए माथापच्ची करनी पड़ेगी?"

महिला सिटपिटा गई। वह दबी जबान में बोली, "मैं भूल गयी थी। यह गलती कैसे हो गयी, मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।"

इसी समय लुकियानिच कहीं से एक कागज हाथ में लिए उनके सामने आकर खड़ा हो गया। करोस्तेलेव के हाथ में एक कलम दे कागज उसके सामने करते हुए बोला, "कृपया इस पर दस्तखत कर दीजिये।"

करोस्तेलेव तब भी उस लड़की को फटकार रहा था। इस-लिए लुकियानिच से कहा, "ठीक है, बाद में होगा।"

लेकिन लुकियानिच अड़ गया, "नहीं, बाद में होने से नहीं चलेगा। आपके दस्तखत के बिना वे मेरी तनखाह कैसे देंगे? और पैसा न मिलने से लोगों का काम चल नहीं सकता।"

सेर्योझा अचरज में पड़ गया। यह क्या? करोस्तेलेव

दस्तखत नहीं करेगा तो किसी की तनख्वाह ही नहीं मिलेगी ?

इसके बाद सेर्योझा और करोस्तेलेव पीली तलैया से होकर गाड़ी पर बैठने के लिए जाने लगे कि ठीक उसी समय एक नौजवान दौड़कर उनके सामने आ गया। वह खूब बनाठना था। पाँवों में रबर के बूट जूते थे। चमड़े की सुन्दर बण्डी पहने हुए था जिसकी बटनें चमक रही थीं। करोस्तेलेव की ओर देखकर उसने घबड़ायी आवाज में कहा, "दिमित्री करोनियेविच, मैं अब क्या करूँ ? वे अब मुझे रहने को जगह नहीं देते।"

करोस्तेलेव गंभीर होकर बोला, "क्यों, तुमने शायद सोचा था कि उन्होंने तुम्हारे लिए नया मकान तैयार कर रखा है ?"

युवक फिर गिड़गिड़ाकर बोला, "तो मेरा क्या होगा ? मैंने ब्याह कर लिया है। रहने की जगह न मिलने पर तो सब कुछ चौपट हो जायेगा। आप अपना आदेश वापस कर कृपया मुझे रहने दीजिये।"

करोस्तेलेव और भी गंभीर होकर बोला, "यह बात तुम्हें पहले ही सोचनी चाहिये थी। दिमाग किस लिये है ? सोचा क्यों नहीं ?"

"आपसे मैं इन्सान के नाते अनुरोध कर रहा हूँ दिमित्री करोनियेविच। आप क्या मेरी हालत पर दिल से गौर नहीं करेंगे ? मैं ठहरा एकदम अनाड़ी। नये जीवन के बारे में कोई

जानकारी मुझे थी ही नहीं। इसलिये इस विषय की गंभीरता मैं समझ ही न सका।"

"अपने इलाका की उपेक्षा कर दूसरे इलाके में जा ज्यादा पैसा कमाने की जानकारी तो खूब हासिल की है!"करोस्तेलेव चलने के लिए मुड़ गया। लेकिन वह नौजवान भी खासा जिद्दी था।

"नहीं, नहीं; आप मुझ पर रहम कीजिये। मैंने गलती की, अब महसूस कर रहा हूँ, मुझे माफ कर एक बार फिर मौका दीजिये। मुझे काम पर रख लीजिये····"

"अच्छा, जाओ। लेकिन याद रखो, फिर ऐसी गलती होने पर कुछ भी न सुनूँगा। यही तुम्हारा आखिरी मौका है।

"उनकी बातों में आ यह काम छोड़ मैंने बड़ी गलती की है। उन लोगों ने मेरे लिए होस्टल में सोने की व्यवस्था कर देने का वादा किया था, वह कब होगा—भगवान ही जानें। मैं बिना कुछ सोचे राजी हो गया था, अब समझ रहा हूँ कि वह मेरी गलती थी।"

"स्वार्थी, बेवकूफ कहीं का! केवल अपने ही फायदे की बात सोची थी! जाओ, आखिरी मर्तबा माफ कर दिया। कल से काम पर आना। जाओ, अभी आँखों के सामने से हट जाओ।"

नौजवान इस बार मुस्कुराता हुआ बोल उठा, "अच्छा जा रहा हूँ।"

सिर पर रूमाल बाँधे थोड़ी दूरी पर खड़ी एक युवती की ओर बढ़कर युवक ने मुस्कुराते हुए कुछ इशारा किया। करोस्तेलेव उस युवती को देखकर जोर से बोल उठा, "याद रखना, तुम्हारे लिये नहीं, इसी तान्या की बात सोचकर मैंने तुम्हें माफ कर दिया है। वह तुम्हें प्यार करती है, समझे, यही तुम जैसे युवक के लिए बड़े सौभाग्य की बात है।" करोस्तेलेव ने मुस्कुराते हुए युवती की ओर देखा। वे दोनों ही एक दूसरे का हाथ पकड़े करोस्तेलेव की ओर कृतज्ञता एवं श्रद्धा की दृष्टि से देखते हुए चले गये।

करोस्तेलेव सचमुच कितना विचित्र आदमी था! चाहता तो उन्हें तकलीफ भी दे सकता था। करोस्तेलेव एक पूर्ण अधिकार सम्पन्न पुरुष ही नहीं दयालु भी था, दिल उसका कितना कोमल था! इसीलिए तो उसके होठों पर फिर से मुस्कुराहट भी दौड़ी। सेर्योझा अचरज से सोचने लगा—ऐसे सुन्दर आदमी के लिए हृदय गर्व और आनन्द से जरूर भर उठेगा? अब उसके सामने यह पानी की तरह साफ हो गया था कि दूसरे सभी लोगों से करोस्तेलेव अधिक बुद्धिमान और अच्छा है।

आसमान और धरती

गर्मी के दिन में आसमान पर तारे नहीं दिखलायी पड़ते। सेर्योझा जब सोने जाता और जब सोकर उठता तो उजाला

ही उजाला दिखलाई पड़ता। मेघ-छन्न या मुसलाधार वर्षा के दिन भी उजाला एकदम लुप्त नहीं होता, ऊपर से सूरज की रोशनी आती रहती है।

आसमान जब एकदम साफ रहता है, जब बादल का नाम तक भी नहीं रहता तब सेर्योझा को ठीक सूरज के ही समान एक स्वच्छ प्रकाशपिण्ड, शीशे के टुकड़े की भाँति दिखाई पड़ता था। वह शायद चाँद था, जबकि दिन में उसकी कोई जरूरत ही नहीं होती। कुछ देर तक आसमान पर दिखाई पड़ता है, फिर सूरज की धूप तेज होने पर कहीं छिप जाता है। तब सीमाहीन नीलाकाश पर सूरज का एकछत्र आधिपत्य कायम हो जाता है।

लेकिन जाड़े में दिन छोटा हो जाता है। दिन की रोशनी छिप जाती है और रात जल्दी ही आ पहुँचती है। रात में खाने के समय से बहुत पहले ही फार स्ट्रीट के हिमाच्छादित बगीचे और घरों की सफेद छतें जब तारों भरे आसमान के नीचे नीरव निर्जन बनकर सो जाती हैं उस समय आसमान पर असंख्य तारे जगमगा उठते हैं। छोटे-बड़े कितने ही तरह के तारे, बालू के कणों की भाँति छोटे-छोटे तारे भी आसमान पर रोशनी की रेखाएँ बिखेरते हुये टिमटिमाते रहते हैं। बड़े-बड़े नीले, सफेद और सुनहले तारे रोशनी बिखेरते हुए हँसते रहते हैं। लुब्धक तारे के चारों ओर आँख की पलकों की तरह प्रकाश की अनुपम छटा होती है। आसमान पर और भी

छोटे-बड़े तारे और तारका-धूलिकण—सब मिलकर एक अनोखा दृश्य उत्पन्न करते हैं जिसे आकाशगंगा कहते हैं।

सेर्योझा ने इसके पहले किसी दिन भी आकाश की ओर इस तरह टकटकी लगाकर तारों को नहीं देखा था। तारों के सम्बन्ध में उसकी ऐसी उत्सुकता पहले कभी न थी। वह नहीं जानता था कि अलग-अलग तारों के भी नाम होते हैं। इसके बारे में माँ ने उसे आकाशगंगा, लुब्धक, सप्तर्षिमण्डल, लाल मंगलग्रह--इत्यादि को पहचनवा दिया था। माँ ने कहा कि बड़े और बालूकणों जैसे छोटे तारों के भी अलग-अलग नाम हैं। और वे बहुत—हाँ बहुत दूर हैं इसलिये इतने छोटे दीखते हैं, नहीं तो बहुत बड़े दीखते। मंगलग्रह में तो यहीं की तरह शायद आदमी भी रहते हैं। सेर्योझा प्रत्येक तारे का नाम जानना चाहता था लेकिन माँ को तो सब याद थे नहीं। एक दिन माँ सब जानती थी। आज सब भूल गयी है। उसके बदले उसने चाँद की छाती पर पहाड़ दिखला दिया।

जाड़े में बहुत अधिक बर्फ गिरती है। लोग रास्ता साफ करते हैं, रास्ते के किनारे बरफ का ढेर लगा देते हैं। लेकिन फिर और ज्यादा बरफ गिरने लगती है और सभी रास्ते, बगीचे, मकान की छतें रूई की तरह सफेद बरफ से ढक जाते हैं। टट्टरों के किनारे खम्भे जैसे सिर पर बरफ की टोपियाँ पहने खड़े हों। पेड़-पौधे तो बरफ पड़ने के बाद लगता है, सफेद फूलों की माला पहने हुए हों।

सेर्योझा दिन भर बरफ से खेलता, घर बनाता, किला तैयार करता, युद्ध-युद्ध का खेल खेलता और फिर पहाड़ के नीचे बरफ के ऊपर स्लेज पर बैठ पहाड़ की ढालू पर उतर जाता। तब तक बांस की झाड़ी के पीछे दिन का प्रकाश मद्धिम हो आसमान को रंगीन बना एकदम विलीन हो जाता। धरती पर सन्ध्या का अँधेरा उतर आता। तब स्लेज को घसीटता हुआ सेर्योझा घर लौट आता, घर के सामने खड़ा हो आसमान पर विचरते तारों को देखता। सप्तर्षिनक्षत्रमण्डल आसमान के बीचोबीच अपनी लम्बी दुम फैलाये दिखाई देता। मंगल-ग्रह अपनी लाल आँख से जैसे बार-बार उसीको देख रहा हो। मङ्गलग्रह तो बहुत बड़ा है इसलिये मालूम पड़ता है वहाँ भी मनुष्य रहते हैं। सेर्योझा को लगता जैसे उसीकी तरह एक लड़का उसीकी तरह एक स्लेज हाथ में लिये खड़ा है, शायद उसका भी नाम सेर्योझा ·····यह कितनी अनोखी कल्पना थी·······वह अगर इसी क्षण वहाँ जा सकता तो कितना अच्छा होता। अपनी इस कल्पना की बात वह किससे कहे! जो सुनेगा वही हँसेगा, उसे चिढ़ायेगा, दिल्लगी करेगा और तब उसे बड़ा गुस्सा आयेगा। लेकिन किसी से बताये बिना भी तो अच्छा नहीं लगता। सिर्फ करोस्तेलेव से ही कहा जाय। वह घर में गया, इधर-उधर देखा। कोई न था, सिर्फ करोस्तेलेव था। फौरन उसने करोस्तेलेव से अपने मन की बात कह डाली। करोस्तेलेव कभी भी उसकी बात सुनकर हँसता नहीं,

मन से-हमदर्दी से, उसकी हरेक बात सुनता था। आज भी सब सुनकर वह जरा भी हँसा नहीं। थोड़ी देर तक कुछ सोचने के बाद बोला, "हाँ बिलकुल ठीक है। तुम्हारी तरह एक छोटा लड़का वहाँ जरूर है।" फिर न जाने क्यों वह सेर्योझा के कंधों को पकड़ उसकी ओर बड़ी गंभीर दृष्टि से देखने लगा। सेर्योझा ने अचरज से देखा—उसकी आँखों में आशंका की एक काली छाया फूट उठी थी।

जाड़े की शाम थी। खेलकूद के बाद थककर जाड़े से काँपता हुआ सेर्योझा घर लौटा तो देखा—चूल्हा जल रहा था और पूरा घर गरमा गया था। घर में बैठते ही उसकी कँपकँपी दूर हो गयी और वह गरमा गया। थोड़ी देर बाद मौसी आई। उसने उसके बूट जूते, मोजा, पायजामा—सब खोल दिया और जूतों को गरमाने के लिए चूल्हे के ऊपर ताक पर रख दिया। उसके बाद रसोईघर में खाने की टेबुल पर बड़ों के साथ ही वह खाने बैठ गया। गरम दूध होठों से लगाये वह बड़ों की बातें सुन रहा था और आनेवाले कल की कल्पना कर रहा था। आज बरफ का जो किला उसने बनाया था, कल किस तरह हमला कर उस पर कब्जा करेगा, मन ही मन यही सोच रहा था।""सचमुच, जाड़े का दिन बड़ा अच्छा होता है। लेकिन एक बहुत बड़ी मुश्किल भी है, यह जैसे जाना ही नहीं चाहता।

मोटी और वजनदार पोशाक पहने रहना कब तक अच्छा

लगे ! सर्द हवा के थपेड़ों से वह कभी-कभी अधीर हो उठता था। पाँवों में चप्पल पहन, मामूली कमीज-पैंट पहन बाहर निकल जाओ, तालाब में कूद खूब तैरो, घास के बिस्तरे पर हाथ-पाँव फैला सो जाओ, मछली पकड़ने जाओ—मिले या न मिले, मिट्टी खोद-खोदकर कीड़े निकाल उन्हें बंसी में बाँध दो और मछली पकड़ते-पकड़ते चिल्ला उठो, "शुरिक, देखो—तुम्हारा चारा खा गयी। बंसी में मछली फँस गई है, देखो-देखो।" लेकिन जाड़े में यह नहीं होता। सिर्फ ठण्ढक कँपानेवाली हवा और चारों ओर बर्फीला तूफान। ऐसा बदनसीब जाड़ा भला कब तक अच्छा लगे······

कुछ दिन बाद खिड़की के शीशे से वर्षा की तिरछी धार की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरने लगती हैं। बरफ के; बदले पचपच कीचड़ से सभी रास्ते ऊबड़-खाबड़ हो जाते हैं। जाड़े के बाद बसंतागमन के समय भी ऐसा ही होता है। नदी में बने बरफ के ढेरों में दरारें पड़ने लग जाती हैं। सेर्योभा दूसरे साथियों के साथ उसे देखने चला जाता। बर्फ के विशाल ढेर धीरे-धीरे गलने लग जाते हैं और नदी की धारा से टकरा लापता हो जाते हैं। इसके बाद नदी तट तक लबालब भर जाती है। सरपत के तटवर्ती पेड़ों का आधा हिस्सा पानी में डूब जाता है। उनकी शाखायें पानी से तनिक ऊपर अपने सिर कुछ ऊँचा किये खड़ी रहती हैं। चारों ओर सब कुछ नील हो उठता है···ऊपर आसमान, नीचे नदी की धारा—सब

नीले ही नीले दिखाई पड़ते हैं। सफेद और नीले बादल-दल नीले आसमान पर, नदी के नीले पानी के स्वच्छ दर्पण में तैरते से दिखाई पड़ते हैं, और फारस्ट्रीट से दूर खेतों में अनाज के पौधे कब इतने लम्बे और घने हो गये? सेर्योझा ने अब तक उधर ध्यान ही नहीं दिया था। कब उनके राई के खेतों में बालें फूट निकलीं इसका उसे पता ही न चला। वाह! अभी रास्ते पर चलते समय राई की बालें उसके सिर, आँख, मुँह का कोमल स्पर्श करते हुए कह रही थीं कि वे अब फूट गयी हैं! चिड़ियों के अंडे कब फूटे और कब बच्चे उड़ने लगे! नदी के उस पार मैदान में फूल मुस्कुरा रहे थे जिनके संग्रह के लिए घास काटनेवाली मशीन पहुँचाई गई थी। स्कूल बन्द हो गये थे। इस तरह बसन्त के बाद फिर ग्रीष्म आ पहुँचा। सेर्योझा बरफ और तारों की बात बिल्कुल भूल-सा गया।

एक दिन करोस्तेलेव सेर्योझा को गोद के पास खींचकर बोला, "सुनो, तुमसे एक जरूरी बात करनी है। अच्छा, बताओ तो, हमारे घर में छोटे लड़के या छोटी लड़की—किसका आना तुम्हें अच्छा लगेगा?"

सेर्योझा ने फौरन उत्तर दिया, "छोटे-से बच्चे का आना।"

"तुमने ठीक ही कहा है बेटा। लेकिन हर तरफ से हमें सोच विचार लेना चाहिये। एक लड़के की जगह दो लड़कों का होना जरूर अच्छा है। लेकिन एक बात और है, हमारे पास लड़का तो एक है ही। इसलिये अब एक छोटी लड़की की ही

जरूरत है, क्यों ?"

सेर्योझा ने कोई उत्साह नहीं दिखलाया। केवल इतना ही कहा, "ठीक है, तुम्हें जो पसन्द है वही हो। तब छोटी लड़की ही अच्छी है। लेकिन एक छोटा लड़का होता तो मैं उसके साथ खेल सकता था।"

लेकिन छोटी लड़की की तुम्हें देखभाल करनी होगी। देखना होगा ताकि कोई नटखट लड़का उसका बाल पकड़कर न खींचे, उसे रुलाये नहीं। तुम तो उसके बड़े भैया होगे न !"

सेर्योझा ने पूछा, "लेकिन लड़कियाँ भी बाल पकड़कर खींचती हैं और खूब जोर से खींचती हैं। कई बार तो वे इस तरह खींचती हैं कि लड़के भी रो पड़ते हैं।" लीदा ने एक दिन उसके बाल पकड़ जोर से खींचा था। यह आज वह करोस्तेलेव से कह सकता था। लेकिन शिकायत करना वह नहीं चाहता।

करोस्तेलेव ने जवाब दिया, "हाँ, बहुत-सी लड़कियाँ भी नटखट होती हैं—यह सच है। लेकिन हमारी लड़की तो बिलकुल नन्ही-सी होगी न ! इसलिये वह किसी के भी बाल खींच नहीं सकेगी।"

सेर्योझा थोड़ी देर कुछ सोचने के बाद बोला, "हो सकता है लेकिन''' एक छोटा-सा लड़का ही आये तो क्या हरज है ? लड़की से लड़का अच्छा रहेगा।"

"सच कहते हो ?"

"हाँ, लड़के कभी भी दूसरों को तंग नहीं करते। लेकिन

लड़कियाँ तो तुम्हें परेशान कर मारेंगी।"

'अच्छा, ठीक है। फिर कभी इस विषय पर हम बात करेंगे, क्यों ?"

"अच्छा !"

माँ एक ओर बैठी कुछ सी रही थी। उनकी बातें सुन कभी-कभी हँस पड़ती थी। सेर्योझा अचरज से देख रहा था माँ आजकल कैसी भद्दी चौड़ी पोशाक पहनती है, और यह भी सच है कि माँ दिन पर दिन मोटी होती जा रही थी। और उसके हाथ में कोई छोटी चीज थी जिसके चारों ओर फीते काढ़ रही थी। सेर्योझा ने माँ से पूछा, "वह क्या बना रही हो।"

"बच्चे के लिए टोपी बना रही हूँ। एक छोटा-सा लड़का या एक छोटी-सी लड़की तुम दोनों जिसे लाने का निश्चय करोगे उसी के लिए यह बना रही हूँ।"

गुड़िये की टोपी की तरह बिलकुल छोटी-सी टोपी की ओर देखकर सेर्योझा ने फिर अचरज से पूछा, "लेकिन उसका सिर क्या इतना छोटा होगा ?" इसके बाद मन ही मन वह सोचने लगा—कैसी ताज्जुब की बात है, इतना छोटा सिर होने पर तो बाल पकड़कर खींचने से पूरा सिर ही निकल आयेगा !

माँ बोली, "पहले तो इतना ही छोटा रहेगा, उसके बाद धीरे-धीरे बड़ा होगा। देख रहे हो न कि विस्तर कैसे धीरे-धीरे

बड़ा हो रहा है! तुम भी कैसे बड़े हो रहे हो! हमारा बच्चा भी वैसे ही बड़ा होगा।" माँ अब उस छोटी टोपी को हाथपर रख देखने लगी, उसका मन खुशी से खिल उठा। करोस्तेलेव ने उसके पास आकर उसके चमकीले बालों के नीचे ललाट को चूम लिया। सचमुच ही वे एक छोटा-सा लड़का लड़की लाने के बारे में गम्भीरता से सोच रहे थे, एक छोटा-सा बिस्तरा और रजाई खरीद लायी गयी। उस लड़का या लड़की के लिये वे सेर्योझा के नहाने के टब को ही इस्तेमाल करेंगे। बहुत दिन पहले वह उसी टब में बैठकर हाथ पाँव फैला मौज से नहाता था। अब वह उसके लिए बहुत छोटा हो गया था। लेकिन इतने छोटे सिर वाला लड़का इस टब में बैठ बड़े मजे में नहा सकता है।

सेर्योझा जानता था कि लोग कहाँ से लड़के ले आते हैं। अस्पताल से ही उन्हें खरीद कर लाया जाता है। अस्पताल ही बच्चों का कारखाना है और वहीं से लोग पसन्द कर बच्चा घर ले आते हैं। एक बार उसकी एक पड़ोसी महिला अस्पताल से दो-दो बच्चे ले आयी थी। वह दो बच्चे क्यों ले आयी—सेर्योझा तो यह सोचते ही अचरज में पड़ गया था। फिर दोनों बच्चे देखने में हूबहू एक ही तरह के थे। सिर्फ एक बच्चे की गरदन पर एक छोटा-सा तिल था लेकिन दूसरे को तो नहीं था। इसी तिल को देख उन्हें पहचानना पड़ता, एक ही बार एक ही तरह के दो बच्चे क्यों ले आयी, सेर्योझा की समझ में

कुछ भी नहीं आया। दोनों दो तरह के होते तो बहुत अच्छा होता।

करोस्तेलेव और माँ ने लड़के के लाने की पूरी तैयारी कर ली लेकिन लाने में वे इतनी देर क्यों कर रहे हैं? बिस्तरा तो तैयार ही है लेकिन इस बिस्तरे पर जो बच्चा सोयेगा उसको तो आज तक देखा ही नहीं। सेर्योझा एक दिन माँ से बोला, "तुम लोग अस्पताल जाकर बच्चा खरीद क्यों नहीं लाते?"

उसकी बात सुन माँ हँसने लगी। उफ, माँ कितनी मोटी हो गयी है! सेर्योझा अचरज से माँ की ओर देख रहा था। माँ हँसी रोककर बोली, "वहाँ अभी कोई बच्चा नहीं है। उन लोगों ने कहा है कि कुछ ही दिनों के अन्दर फिर बच्चा आयेगा।"

ठीक है अक्सर ऐसा होता ही रहता है। दूकान में जरूरत की चीज मांगो तो कभी-कभी वह नहीं मिलती। खैर, वे धीरज रखकर इन्तजार ही करेंगे, ऐसी कोई जल्दी तो है नहीं।

लेकिन माँ चाहे जो भी क्यों न कहे बच्चे बहुत धीरे-धीरे बड़े होते हैं। विक्तर को ही देखकर यह अच्छी तरह मालूम हो जाता है। विक्तर को आये तो कितने दिन हो गये लेकिन अभी भी उसकी उमर कुल अठारह महीने है! बड़ों के साथ कब खेल सकेगा? कितने दिनों के बाद? उनके घर में जो

छोटा बच्चा आयेगा वह भी तो विक्तर की तरह ही बहुत धीरे-धीरे बड़ा होगा, सेर्योझा के साथ वह कब खेल सकेगा, कौन जानें ?

और जब तक वह बच्चा बड़ा न हो जायेगा सेर्योझा को ही तो उसकी देखभाल करनी होगी; काम जरूर एकदम बुरा नहीं, बहुत जरूरी है। लेकिन करोस्तेलेव जैसा अच्छा और सरल समझता है, बात ठीक वैसी नहीं। लीदा के लिए विक्तर को बड़ा करना बड़ा कठिन हो रहा है। हर वक्त उसे गोद में लिये कभी हँसाकर, कभी रुलाकर और कभी सजा देकर भुलाये रखना क्या आसान बात है ? कुछ दिन पहले लीदा के माँ-बाप एक ब्याह के निमन्त्रण में गये थे और उसे विक्तर के साथ घर में ही रहना पड़ा था। लीदा उस दिन केवल रोती ही रही थी। विक्तर के न रहने पर तो वह खुशी से माँ-बाप के साथ जा सकती थी। विक्तर के साथ घर में रहना ठीक जेलखाने में बन्दी होकर रहना है—लीदा तो यही कहती थी।

तब तो उसे भी······अच्छा जाने दो······क्या हुआ करोस्तेलेव और माँ की इस काम में वह थोड़ी सहायता ही कर देगा। वे लोग काम पर चले जायेंगे, मौसी रसोई बनायेगी और सेर्योझा उस लाचार गुड़िये की भाँति छोटे सिर वाले बच्चे की देखभाल करेगा, उसे खाने को देगा, बिस्तरे पर सुला देगा, लीदा और वह बच्चों को लेकर एक साथ एक जगह आकर बैठेंगे। दोनों मिलकर बच्चों की देखभाल करेंगे और

बच्चों के सो जाने पर वे दोनों खेलेंगे भी।

एक दिन सबेरे जब वह सोकर उठा तो उन्होंने कहा कि माँ बच्चा खरीदने अस्पताल गयी है। उसका हृदय आनन्द और आशा से नाच उठा। उसने सोचा, आज सचमुच उसके जीवन का एक विशेष दिन है। माँ अभी फौरन एक बच्चा गोद में लिये लौट आयेगी और वह उसकी ओर दौड़ जायेगा। इसीलिये वह फाटक के सामने खड़ा हो रास्ते की ओर बेचैनी और आग्रह से देखने लगा। इसी बीच मौसी ने उसे पुकारकर कहा, "करोस्तेलेव तुम्हें फोन पर बुला रहा है।"

सेर्योझा दौड़कर घर में आ टेबुल के ऊपर से रिसीवर उठाते हुये बोला, "हैलो ?" उधर से करोस्तेलेव का प्रसन्न स्वर सुनायी पड़ा, "सेर्योझा, सुनो, तुम्हारे एक भाई हुआ है, सुनते हो ? भाई ! उसकी दोनों आँखें बड़ी सुन्दर और नीली हैं, समझे ? तुम खुश हुए न ?"

"हाँ, हाँ !" सेर्योझा ने हक्काबक्का होकर जवाब दिया। टेलीफोन और कुछ बोलता ही नहीं।

मौसी ने आँखें पोंछ कर कहा, "......तो बाप की तरह ही नीली आँखें हैं ! ईश्वर को धन्यवाद। आज सचमुच शुभ दिन है।"

सेर्योझा ने पूछा, "वे लोग जल्दी घर लौटेंगे तो ?"

लेकिन उसे यह सुनकर अचरज हुआ कि माँ और बच्चे के आने में एक सप्ताह या उससे भी अधिक समय लगेगा। माँ के

पास रहने का उसे आदी जो बनाना होगा! करोस्तेलेव रोज अस्पताल जाता था, लेकिन उसे एक दिन भी नहीं ले जाता। माँ को शायद अभी वह देख न सकेगा। माँ उसे लिख भेजती है, "हमारा बच्चा बहुत सुन्दर हुआ है सेर्योझा और बहुत चालाक भी।" माँ ने उसका एक अच्छा-सा नाम रखा है—अलेक्सी। ऐसे ल्योन्या कहकर पुकारेगी। माँ और भी लिखती है, वहाँ उसे जरा भी अच्छा नहीं लगता। घर चले आने की इच्छा होती है। उसे हम सबके लिए बड़ी चिन्ता हो रही है और सेर्योझा को प्यार का सन्देश भेजा है।

एक सप्ताह से भी कई दिन अधिक बीत गये, इसके बाद एक दिन करोस्तेलेव बाहर जाते समय उससे कह गया, "मैं अभी आ रहा हूँ, तुम इन्तजार करो, हम आज तुम्हारी माँ और बच्चे को ले आयेंगे।"

कुछ देर बाद ताश्या मौसी की गाड़ी में बैठ करोस्तेलेव हाथ में फूलों का गुलदस्ता लिये लौट आया। सभी उसी गाड़ी में बैठ परनानी जिस अस्पताल में मरी थी वहीं जा पहुँचे। फाटक के पास ही जो पहला मकान था उसके सामने पहुँचते ही उन लोगों ने माँ का प्रसन्नतापूर्ण स्वर सुना, "मित्या! सेर्योझा!"

एक खुली खिड़की से उनकी ओर देखती माँ हाथ हिला रही थी। सेर्योझा भी आनन्द से चिल्ला उठा, "माँ!" माँ फिर हाथ हिलाकर खिड़की से तुरत गायब हो गयी। करोस्तेलेव

बोला, "अब दो-एक मिनट के अन्दर ही वे बाहर आ जायेंगे।"

लेकिन दो-एक मिनट कहाँ; माँ आने में इतनी देर क्यों कर रही है ? वे कितनी देर तक रास्ते पर इधर से उधर टहलते रहे, चरमराते स्प्रिंगदार दरवाजे की ओर देखते रहे। एक छोटे-से पेड़ के नीचे बेंच पर कुछ देर बैठे रहे।

करोस्तेलेव अब अधीर होकर कह रहा था, "लगता है, तुम्हारी माँ के आने के पहले ही ये फूल झर जायेंगे।" ताश्या मौसी गाड़ी को गेट के बाहर रख उनके पास बैठकर बोली, "इस तरह देर तो होती ही है।"

थोड़ी देर बाद बगीचे का दरवाजा खोल माँ बाहर आयी। उसकी गोद में नीले कपड़े का एक बण्डल था जिसे वह दोनों हाथों से जकड़े हुये थी। दोनों माँ की ओर दौड़े, माँ बोल उठी, "सावधान, सावधान !"

करोस्तेलेव ने माँ के हाथों में गुलदस्ता दे दिया और उसकी गोद से उस नीले बण्डल को अपनी गोद में ले लिया। फिर बण्डल के एक ओर फीते को हटाकर करोस्तेलेव ने सेर्योझा को गुलाब के फूल-सा सुन्दर एक नन्हा-सा मुँह दिखलाया। हाँ, उसकी दोनों आँखें मुँदी हुई थीं, तो क्या यही ल्योन्या··· उसका भाई······अब तक उसकी आँखें फूल की पंखुरियों की तरह मुँदी हुई थीं। अब जरा मटकाकर आँखें खोलीं तो गहरी नीली आँखों की पुतलियाँ झलक उठीं। छोटा-सा मुँह

हिल-डुल गया! करोस्तेलेव कोमल स्वर में बोला, "उफ! अब तुम जागे!" इसके बाद उसे आदरपूर्वक जकड़ उसके कोमल गाल को चूम लिया।

माँ धमकाकर बोली, "मित्या। यह क्या कर रहे हो?"

"क्यों? दुलार न करूँ?"

"इस तरह करने से बच्चे को नुकसान पहुँच सकता है, समझे? अस्पताल में नर्सें नकाब लगा बच्चे के पास आती हैं। मेरे मित्या, फिर इस तरह दुलार मत करना!"

"अच्छा नहीं करूँगा।"

घर लौटने पर ल्योन्या को माँ के बिस्तरे पर सुला दिया गया। माँ ने उसकी देह पर से सभी कपड़े उतार दिये। सेर्योझा अब उसे अच्छी तरह देख पा रहा था। माँ ने कैसे कहा कि वह देखने में बहुत सुन्दर है? इसे क्या सुन्दर कहते हैं? इसका पेट कितना फूला हुआ है। हाथ-पाँव एकदम छोटे आदमी के हाथ-पाँव की तरह लगते ही नहीं। और नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव को यह बेमतलब हिला-डुला रहा है। गरदन तो दिखलायी ही नहीं पड़ती।

माँ उल्टे कहती है—बहुत चालाक है। लेकिन चालाकी का तो कहीं चिह्न हो नहीं। दाँत भी नहीं हैं, और यह लो मुँह बा अब रोना भी शुरू कर दिया।

माँ उसे आदरपूर्वक गोद में ले कहने लगी, "मेरे लाल! मेरे मुन्ना! भूख लगी है? अभी तुम्हें खाने को देती हूँ, अब मत

रोओ मेरे ......'

लेकिन माँ अब पहले की तरह मोटी नहीं रही। वह अब काफी झटपट उठती-बैठती। जोर से हँस-हँसकर बातें करती, करोस्तेलेव और मौसी को ऐसा-वैसा करने का आदेश देती और वे भी फौरन उसकी फरमाइश पूरी कर देते थे।

ल्योन्या का जाँघिया भीग गया था। माँ ने भीगा जाँघिया खोल सूखा पहना दिया और गोद में ले अपनी ब्लाउज की बटन खोल उसका छोटा-सा मुँह अपनी छाती से सटा लिया। ल्योन्या का लगातार रोना अचानक रुक गया। अपने नन्हे होठों से उसने माँ का चूचुक कसकर पकड़ लिया और इस तरह लोभी जैसा चूसने लगा जैसे अभी हो उसका दम घुट जायेगा।

सेर्योझा को लगा जैसे वह एक छौना हो!

सेर्योझा की आँखों की ओर देखकर करोस्तेलेव ने जैसे उसके मन का भाव ठीक-ठीक समझ लिया हो। इसलिये धीरे से बोला, "वह तो सिर्फ नौ दिन का शिशु है। सिर्फ नौ दिन की उसकी उमर है, फिर उससे और क्या उम्मीद कर सकते हो?"

सेर्योझा जैसे लजा गया। बोला, "हाँ, हाँ, ठीक ही तो।"

"देखना, कुछ ही दिनों में वह कैसा अच्छा लड़का हो जायेगा।"

लेकिन वैसा वह कब होगा? सेर्योझा केवल यही सोच

रहा था। कब वह उसे गोद में ले सकेगा ? जेली की तरह लप-लप इस छोटे-से बच्चे की देखभाल करने की जिम्मेदारी वह कैसे लेगा ? गोद में लेने लायक तो हो ! माँ भी तो कितनी सावधानी से, कितने यत्न से उसे गोद में लेती है। ल्योन्या भर पेट पीकर माँ के बिस्तरे के एक ओर खूब आराम से सो गया। सयाने लोग आजकल खाने के घर में बैठ, केवल उसी के बारे में बातचीत करते थे।

मौसी बोली, "अभी एक नर्स की जरूरत है। मैं अकेले सब कुछ कैसे सँभाल पाऊँगी ?"

माँ ने जवाब दिया, "नहीं, नर्स रखकर क्या होगा ! मैं खुद ही उसे सँभाल लूँगी। अभी तो मैं छुट्टी पर हूँ। अगर जरूरत हुई तो कुछ दिन बाद, शिशु-गृह में दे दूँगी। वहाँ ठीक से देखभाल होगी।"

सेर्योझा माँ की बात सुनकर मन ही मन बड़ा खुश हुआ। माँ ने ठीक कहा है, वही अच्छा होगा। उसे शिशु-गृह में देना ही अच्छा है। विक्तर को शिशु-गृह में क्यों नहीं रखा गया, लीदा तो रात-दिन इसी की शिकायत करती रहती है। सेर्योझा अब उनके बिस्तरे पर ल्योन्या के पास चुपचाप बैठ गया, इच्छा है—इस बार बहुत अच्छी तरह देखेगा। बच्चा अब शान्त सो रहा था, न हाथ-पाँव हिला रहा था न रोता ही था। वाह, आँखों की भौंहें तो सच्ची हैं हालाँकि बहुत छोटी हैं। उसकी देह का चमड़ा मखमल जैसा मुलायम है। सेर्योझा अब उसे हाथ से छू

कर देखने का लोभ संवरण न कर सका। उसकी देह पर हाथ रखा ही था कि माँ घर के अन्दर आ चिल्ला उठी, "यह क्या हो रहा है ?"

सेर्योझा चौंक उठा, उसने फौरन अपना हाथ हटा लिया। माँ फिर धमकाकर बोली, "फौरन बिस्तर से उतर जा, गन्दे हाथों से उसे क्यों छूता है ?"

सेर्योझा बिस्तर से डरते-डरते उतरकर बोला, "नहीं, गन्दा नहीं है, धोया हुआ है।"

माँ अब समझाकर बोली, "सुनो बेटा, अभी कुछ दिनों तक तुम उसे बिल्कुल मत छूना, समझे ? अभी तो बहुत छोटा है न। अचानक अगर तुम उसे गिरा दो तो क्या होगा......एक बात और, तुम अपने साथियों को भी इस घर में मत ले आना, समझे ? उनके रहने से ल्योन्या को कष्ट हो सकता है। आओ हम लोग अब बाहर चलें।" माँ ने आदर से, किन्तु दृढ़ स्वर में कहा।

सेर्योझा माँ के पीछे-पीछे चल पड़ा। वह चिन्तामग्न था। जैसा उसने सोचा था वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ। माँ ने फिर घर में जाकर खिड़की के ऊपर एक चादर लटका दी ताकि धूप की चमक बच्चे की देह पर न पड़े। इसके बाद घर से बाहर निकल धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया।

वास्का के मामा

वास्का के एक मामा थे। लीदा उनमें से किसी की भी बात पर विश्वास नहीं करती थी। कुछ कहो तो तुरन्त कह देती—सब झूठ है। लेकिन वास्का के मामा की बात पर वह चुप थी। क्योंकि वास्का के मामा की एक तस्वीर उनके खाने के घर में दो फूलदानियों के बीच टाँड़ पर रखी हुई थी। तसवीर में मामा एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठे थे। सफेद पोशाक और कड़ी धूप में ली गयी तसवीर में मामा का मुँह या पोशाक—कुछ भी ठीक से पहचान में नहीं आ रहा था। तसवीर में सिर्फ एक खजूर का पेड़ तथा दो काली छाया-रेखाएँ—एक उस पेड़ की और दूसरी मामा की, खूब साफ दिखलायी पड़ रही थीं।

मुँह न दिखलायी पड़े तो कोई नुकसान नहीं। लेकिन मामा की पोशाक कैसी थी यह भी तो समझ में नहीं आता। यही बड़े अफसोस की बात थी, वह सिर्फ मामा ही नहीं बल्कि समुद्री जहाज के एक कप्तान भी थे। कप्तान कैसी पोशाक पहनते हैं यही तो देखने की चीज थी। वास्का कहता था कि ओवाहू द्वीप के होनोलुलु में मामा की यह तसवीर खींची गयी थी, बीच-बीच में वह बहुत-सी चीजें पार्सल से भेजते रहते थे। वास्का की माँ कहती, "कोसत्या ने मुझे यह भेजा है—वह भेजा है।"

कपड़े-लत्ते के अलावा भी वह बीच-बीच में बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें भेजते थे। जैसे स्पिरिट के बोतल में घड़ियाल का बच्चा। देखने में यद्यपि मछली की तरह छोटा फिर भी था तो आखिर घड़ियाल ही। सैकड़ों साल तक वह स्पिरिट में ठीक ऐसा ही रहेगा, नष्ट नहीं होगा। अगर वास्का इसपर शेखी बघारता है तो इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है? दूसरे सभी के पास चाहे जितने खिलौने या मनचाही चीजें क्यों न हों वास्का के इस घड़ियाल के बच्चे ने उन सबको मात दे दी है। एक बार पार्सल में एक अपूर्व सुन्दर बड़ा-सा शङ्ख भेजा था। उसके ऊपर का रंग भूरा और भीतर का गुलाबी था। बड़े-बड़े होठों के समान गुलाबी धारियाँ थीं। उसके ऊपर कान रखने से लगता था जैसे बहुत दूर से मृदु झंकार आ रही हो। वास्का को कभी-कभी दया आती तो सेर्योझा को वह झंकार सुनने को देता। उस समय सेर्योझा उसे कान से सटाकर बड़ी-बड़ी आँखों को ऊपर की ओर किये सांस रोककर उससे निकलनेवाली मधुर झंकार को ध्यान से सुनता रहता। वह किसकी झंकार थी? कहाँ से आ रही थी? अथवा उसे सुनते ही उसका मन क्यों इतना चञ्चल हो उठता है? उस समय उसकी इच्छा होती थी केवल उसी झंकार को वह सुनता रहे।

वही मामा, वास्का के वही विचित्र मामा होनोलुलु तथा दूसरे द्वीपों को देख-सुनकर अब वास्का के साथ रहने आ रहे थे। वास्का ने एक दिन उदास स्वर में यह बता ही दिया जैसे

इसके मुकाबले की दूसरी कोई खबर ही नहीं थी। शुरिक भौचक्का-सा थोड़ी देर तक उसकी ओर देखने के बाद बोला, "कौन मामा ? वही कप्तान मामा ?" वास्का ने जवाब दिया, "तो और कौन मामा ? उनके अतिरिक्त तो और कोई मामा मेरे नहीं हैं।"

यह बात उसने इस तरह कही जैसे कप्तान मामा के अतिरिक्त तुम लोगों के अनेक मामा हो सकते हैं। लेकिन यह दूसरी बात है। वे कप्तान तो नहीं होंगे। सभी इसे एक स्वर से स्वीकार करने को बाध्य हो गये। सेर्योझा ने पूछा, "जल्दी ही आयेंगे क्या ?"

वास्का बोला, "और दो-एक सप्ताह के अन्दर आ जायेंगे। अच्छा तो अभी मैं खड़िया मिट्टी खरीदने के लिए बाजार जा रहा हूँ।"

"खड़िया मिट्टी क्या करोगे ?"

"माँ घर-आँगन में चूना पोतेगी।"

जरूर, जरूर, ऐसे मामा के आने से तो पुताई होनी ही चाहिये।

लीदा से अब चुप नहीं रहा जा रहा था, उसने कह ही तो डाला, "दुत, कोई नहीं आये—आयेगा, सिर्फ डींग हाँक रहा है !" कहकर झट से वह पीछे हटकर खड़ी हो गयी—इस आशङ्का से कि वास्का उसे मारेगा। लेकिन वास्का कुछ बोला नहीं। यहाँ तक कि 'बेवकूफ' कहकर भी कोई गाली न दी।

चुपचाप थैला हिलाते हुए लीदा की जैसे एकदम उपेक्षाकर वह चल पड़ा और लीदा बुद्धू की तरह केवल ताकती रह गई।

अब वास्का के घर की पुताई हुई। दीवाल पर नये सिरे से कागज चिपकाये गये। वास्का कागज के टुकड़ों में लेई लगा देता और उसकी माँ उन्हें चिपका देती। लड़कों ने बाहर से ही घर के भीतर झाँकना शुरू किया। वास्का ने डाँटकर उन्हें बाहर ही रहने का आदेश दिया। बोला, "खबरदार! अन्दर मत आना, तुम लोग सब बरबाद कर दोगे।"

वास्का की माँ ने घर का फर्श धो-पोंछकर चटाई बिछा दी, फर्श को साफ रखने के लिए वे चटाई पर से ही आया जाया करेंगे। वास्का की माँ उन लोगों की ओर देखकर बोली, "नाविक लोग सफाई बहुत पसंद करते हैं न!"

जिस घर में मामा सोयेंगे एलार्म घड़ी उसी घर की टेबुल पर रखी गयी। वास्का की माँ ने फिर कहा, "नाविक लोग सारा काम घड़ी की सूई देखकर ही करते हैं।"

इसके बाद वे वास्का के मामा के आने की प्रतीक्षा अधीर होकर करने लगे। मोड़ पर किसी गाड़ी के मुड़ते ही वे सांस रोक सोचने लगते शायद इसी में मामा स्टेशन से आ रहे हैं। लेकिन वह गाड़ी अपने रास्ते चली जाती, मामा नहीं आते। इससे लीदा को बड़ी खुशी होती। लीदा बड़ी ईर्षालु लड़की थी, दूसरों के दुख से उसे सुख मिलता था।

वास्का की माँ शाम को काम से लौट घर का कामकाज

खत्म कर सामने वाले फाटक के पास खड़ी हो पड़ोसियों के साथ अपने कप्तान भाई के सम्बन्ध में बातें करती। बच्चे उसके नजदीक खड़े हो उनकी बातों को ध्यान से सुनते। वास्का की माँ ने कहा, "स्वास्थ्य के लिए वह अभी एक स्वास्थ्य केन्द्र में है, वहाँ स्वास्थ्य-लाभ कर रहा है। छाती में गड़बड़ी है, उसे एक बहुत अच्छे सैनिटोरियम में भेजा गया है, इलाज पूरा होते ही वह यहाँ चला आयेगा।"

फिर एक दिन वास्का की माँ बोली, "मेरा भाई बहुत अच्छा गाता है। हमारे क्लब में कितना अच्छा गाता था···· कोजलोवस्की से भी अच्छा। लेकिन अब मोटा हो गया है, दम नहीं रख पाता। इसके अतिरिक्त तरह-तरह के पारिवारिक झंझटों में पड़ अब उसे गाना-बजाना नहीं आता।" इसके बाद अचानक आवाज धीमी कर, ताकि बच्चे न सुन पायें, फुसफुसाकर फिर कहने लगी,······"सभी लड़कियाँ ही हैं। सबसे बड़ी गोरी है, मझली काली और छोटी के बाल लाल हैं। बड़ी लड़की कोसत्या की तरह ही सुन्दर है। मेरा भाई समुद्र में जाकर भी क्या शान्ति से रह सकता था? भाभी का भाग्य अच्छा है कि सभी लड़कियाँ हैं। एक लड़के को आदमी बनाने से दस लड़कियों का भरन-पोसन ज्यादा आसान है।"

पड़ोसियों ने कनखियों से वास्का की ओर देखा। वास्का की माँ भी उसे देखकर बोली, "इस बार मेरा भाई कुछ सलाह

दे सकेगा। इस लड़के को किस तरह आदमी बनाऊँ—यह सोचते-सोचते कभी-कभी पागल हो जाने की नौबत आ जाती है।"

झेंका की मौसी एक लम्बी सांस खींचकर बोली, "बच्चे जब तक अपने पाँवों पर खड़े नहीं हो जाते उनको सम्भालना बड़ा मुश्किल काम है।"

अब पाशा मौसी की बारी थी, उसने कहा, "यह तो लड़के पर निर्भर है। हमारे लड़के की ही बात ले लो। वह तो सचमुच बड़ा अच्छा लड़का है। कभी भी परेशान नहीं करता।"

वास्का की माँ बोल उठी, "वह अभी भी तो बहुत छोटा है। उसकी बात छोड़ दो। छोटी उमर में सभी लड़के ऐसे ही होते हैं। कुछ बड़े हुए कि शरारत शुरू कर दी।"

इसके बाद कप्तान मामा एक दिन आधी रात को आ पहुँचे। सबेरे जब वे वास्का के बगीचे में गये तो देखा—मामा रास्ते पर खड़े थे—ठीक मूर्ति की तरह सफेद पोशाक पहने, सफेद पैंट, सफेद जूते। पीछे की ओर हाथ रखे खड़े-खड़े रेघा-रेघा कर बातें कर रहे थे। मामा को उन लोगों ने कहते सुना, "वाह कितनी सुन्दर जगह है। अपूर्व! गर्म देश से आकर विश्राम करने के लायक जगह है। पोल्या, तुम ऐसी सुन्दर जगह में रहती हो? सचमुच, तुम बड़ी खुशकिस्मत हो।"

वास्का की माँ ने उत्तर दिया, "हाँ, जगह बुरी नहीं है।"

मामा इधर-उधर देखकर इस बार अचरज से चौंककर बोले, "अरे ! यह क्या है ? चिड़ियों का घोंसला ! बर्च के पेड़ पर चिड़ियों का घोंसला ! पोल्या, तुम्हें याद है, हमलोगों की स्कूल की किताब में ठीक इसी तरह की एक तसवीर थी ? बर्च पेड़ की डाल पर चिड़ियों का घोंसला झूल रहा था।"

वास्का की माँ बोली, "हाँ, याद है। लेकिन इसे तो वास्का ने वहाँ बनाया है।"

"अच्छा, यह बात है ? बड़ा होशियार है तुम्हारा वास्का !"

वास्का सजधजकर माँ और मामा के पास चुपचाप खड़ा था। उसका सँवरना देख लगता था जैसे 'मई दिवस' हो।

वास्का की माँ ने मामा से कहा, "चलो खाना खा लो।"

मामा बोले, "बाहर की यह निर्मल हवा बहुत अच्छी लग रही है। और भी कुछ देर यहीं क्यों न रहें ?"

लेकिन वास्का की माँ जबर्दस्ती उन्हें घर में ले गयी।

मामा अपने लम्बे-चौड़े विशाल शरीर को एक तरह खींचते हुए ही सीढ़ियों पर चढ़ने लगे। उनका चेहरा देखने में बहुत सुन्दर लगता था। मुँह पर एक प्रकार की कोमलता झलकती रहती थी। ठोढ़ी दुहरी हो गई थी। मुँह का निचला भाग धूप से बादामी हो गया था। लेकिन ऊपरी भाग एक दम सफेद था। बादामी रंग जहाँ खत्म हो गया था वहाँ बिल्कुल साफ मालूम पड़ता था।

वास्का अब बाड़े के पास आकर खड़ा हो गया। सेर्योझा और शुरिक वहाँ खड़े-खड़े केवल झाँक रहे थे। वास्का उनकी ओर देख जरा रोबीली आवाज में बोला, "ऐ बच्चो, क्या चाहते हो तुम लोग ?"

उसकी बात सुन उन्होंने सिर्फ मुँह बिचका दिया।

वास्का इस बार जरा ऐंठ कर बोला, "जानते हो, मामा मेरे लिये एक घड़ी लाये हैं।" हाँ, ठीक ही तो! वास्का के बायें हाथ को कलाई पर एक घड़ी बँधी थी—सचमुच की घड़ी।

वास्का अपना हाथ कान पर रख घड़ी की टिक-टिक की आवाज कई मिनट तक सुनता रहा। फिर घड़ी की चाभी कई बार उमेठ दी।

सेर्योझा से अब रहा न गया। पूछ ही बैठा, "क्या हम लोग अन्दर आ सकते हैं ?"

वास्का जरा पिघल गया। आदेश के स्वर में बोला, "अच्छा, आ जाओ। लेकिन खबरदार, शोरगुल मत करना। मामा जब आराम करेंगे, परिवार के सब लोग जब बातचीत करने आयेंगे, तब चले जाना। आज उन लोगों की यहाँ एक परामर्श सभा होगी।"

सेर्योझा ने अचरज से पूछा, "सभा किस लिए ?"

"मेरे लिये क्या करना चाहिये, वे इस बात पर विचार करेंगे।"

वास्का अब घर के अन्दर चला। उन दोनों ने भी चुप-

चाप उसका अनुसरण किया। कप्तान मामा जिस घर में खाने बैठे थे उसी घर के दरवाजे के एक ओर दोनों चुपचाप खड़े हो गये। बीच-बीच में झाँक भी लेते थे। कप्तान मामा ने रोटी के एक टुकड़े में मक्खन लगा दिया। अंडे के बरतन में एक अंडा रखा, इसके बाद चम्मच की नोक से उसे धीरे से फोड़ दिया और छुरी की नोक पर नमक के बरतन से नमक निकाल उस अंडे पर छिड़क दिया। इसके बाद इधर-उधर देखते हुए शायद कुछ खोजने लगे और साथ ही उनकी भौंहें भी सिकुड़ गयीं। जरा संकोच के साथ धीरे से बोले, "पोल्या, मुझे एक तौलिया दोगी ?"

वास्का की माँ तुरन्त उठकर बगल वाले कमरे में गयी और उनके लिए एक साफ तौलिया ले आयी। उसे धन्यवाद देकर मामा ने तौलिये को अपनी दोनों जाँघों पर बिछा खाना आरम्भ किया। रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े कर वे खाते थे। मालूम ही नहीं पड़ता कि वह चबा रहे थे या सीधे निगले जा रहे थे। वास्का के मुँह पर ऐसा भाव झलक रहा था जैसे उसके भारी भरकम मामा तौलिया के अभाव में खा ही नहीं सकते—यह उसके लिए बड़े गर्व की बात थी।

वास्का की माँ ने तरह-तरह की खाने की चीजें टेबुल पर रख दी थीं—मामा एक-एक कर सब में से तोड़-तोड़ खा रहे थे। लेकिन वे इतना धीरे-धीरे चबा रहे थे कि मालूम ही नहीं पड़ता कि कुछ खा रहे हों। वास्का की माँ शिकायत कर रही

थी, तुम कुछ खाते तो है ही नहीं! अच्छा नहीं लगता क्या?"

मामा बोले, "खाना तो गजब का बना है। लेकिन मुझे तो नपा तुला खाना खाना पड़ता है, इसलिये, कुछ ख्याल मत करना बहिन।"

मामा ने वोद्का नहीं पी, बोले, "मेरे लिये यह पीना मना है। दिन में सिर्फ एक बार एक गिलास ब्राण्डी पी सकता हूँ।"

तर्जनी और अँगूठे से ग्लास का आकार विनोदपूर्ण ढंग से दिखा मामा फिर बोले, "वह भी दोपहर के वक्त खाने से पहले पीऊँगा जिससे आसानी से हजम हो जाय। इससे अधिक पीना मना है।"

खाना-पीना खत्म होने के बाद मामा ने वास्का को अपने साथ घूमने चलने के लिए बुलाया। वे अपनी सफेद और सुन-हली टोपी पहन तैयार हो गये। वास्का ने शुरिक सेर्योझा से कहा, "अब तुम लोग घर जाओ।"

मामा बोल उठे, "उनको भी अपने साथ ले लें। वाह, दोनों लड़के कितने सुन्दर हैं! शायद भाई-भाई हैं?"

शुरिक बोला, "नहीं, हम भाई-भाई नहीं हैं।

वास्का भी बोला, "ये दोनों भाई-भाई नहीं हैं।"

मामा बोले, "सच! मैंने तो समझा कि दोनों भाई-भाई के अलावा और कुछ हो ही नहीं सकते। कुछ हद तक दोनों एक-से हैं। हाँ, एक काला दूसरा गोरा है। अच्छा, भाई न

हुए तो न सही! उससे क्या हुआ आओ, तुम लोग भी चलो घूमने।"

उन्हें रास्ते से जाते हुए लीदा ने देखा। वह भी उनके पीछे दौड़ गई होती। लेकिन वास्का ने इस तरह मटकी मारी कि वह मुँह घुमाकर दौड़ती-कूदती दूसरी ओर चली गयी।

इसके बाद वे जंगल में घुसे। मामा पेड़-पौधों, जंगल-झाड़ियों को देख आनन्द से विभोर हो गये। खेतों से गुजरते समय चारों ओर सुनहली फसल देख मामा मुग्ध हो गये! लेकिन, सच कहने में क्या है, मामा की यह मुग्धता देख वे तंग आ गये। मामा से तो वे समुद्र और द्वीपों की कहानियाँ सुनना चाहते थे।

लेकिन जो भी हो, मामा बड़े मजे के आदमी थे। उनके सीने पर झूलते हुए सोने के तमगे सूरज की रोशनी में कैसे चमक रहे थे! मामा के साथ-साथ वास्का चल रहा था। सेर्योझा और शुरिक कभी आगे और कभी उनके पीछे दौड़ते हुए चल रहे थे और अचरज से उन्हें सिर से पाँव तक देख रहे थे। वे नदी के किनारे आये। घड़ी की ओर देख मामा इस बार बोले, "आओ, स्नान कर लें।"

वास्का भी अपनी घड़ी देख सयाने की तरह बोला, "हाँ-हाँ, क्यों नहीं।"

इसके बाद उन्होंने साफ गरम बालू पर अपने कपड़े उतार रख दिये। मामा के कोट खोलने पर सेर्योझा और शुरिक ने

निराश होकर देखा कि मामा जहाजियों की धारीदार कमीज की जगह एक मामूली सफेद कमीज पहने हुए थे।

वह सफेद कमीज दोनों हाथों से उतार देने पर वे भौंचक्का हो उनकी तरफ देखते रह गये। अरे यह क्या! कंधे

से कमर तक मामा की पूरी देह में ये नीले रंग के अजीब-अजीब नक्शे क्यों बने हैं? और जब वे सीधा खड़े हुए तो उन्होंने देखा कि वे सिर्फ ऐसे वैसे नक्शे नहीं, बल्कि चित्र और

बड़े बड़े अक्षर हैं।

मामा के सीने पर एक मछली की तरह दुम और लम्बे-लम्बे बालों वाली मत्स्यकन्या का चित्र बना था। बायें कंधे की ओर से एक अठगोड़वा जानवर घुटने के बल चलता हुआ जैसे उसी लड़की की ओर बढ़ा आ रहा था। अठगोड़वा के बाल घने थे और मनुष्य की तरह ही दोनों आँखें बड़ी भयानक लगती थीं। मत्स्यकन्या अठगोड़वे की ओर दोनों हाथ बढ़ाकर और मुँह उसकी ओर फेर जैसे उससे विनती कर रही हो कि मुझे मत पकड़ो। ओह! कैसा भयानक चित्र था और बायें कन्धे पर न जाने क्या लम्बा-लम्बा लिखा था। कंधे से हाथ के दूसरी तरफ नीले अक्षरों में न जाने क्या लिखा था। बदन जैसे दिखलाई ही नहीं पड़ता था। बायें हाथ के ऊपर दो कबूतर आमने-सामने चोंच से चोंच भिड़ाये बैठे थे और उनके ऊपर माला और मुकुट अंकित थे। हाथ के नीचे तीर-धनुष का चित्र और उससे भी नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में 'मास्या' लिखा हुआ था। शुरिक सेर्योझा की ओर देख कर बोला, "वाह, कैसा शानदार है", सेर्योझा ने लम्बी सांस छोड़ते हुए कहा, "हाँ सचमुच बड़ा शानदार है।"

मामा अब पानी में कूद तैरने लगे। पाँवों को धीरे-धीरे चलाते हुए वे तैर रहे थे, भींगे बालों समेत हँसते हुए एक बार खड़ा हो नाक झाड़ी। फिर धार की उल्टी दिशा में तैरने लगे।

वे मन्त्रमुग्ध हो मामा का अनुसरण करने लगे।

वाह! मामा कितना सुन्दर तैरते हैं। अपने भारी शरीर के साथ पानी पर जैसे आसानी से खेल रहे हों। पुल के किनारे तक तैरते चले गये, इसके बाद चित्त होकर कितनी देर तक पानी पर कितना हल्का बनकर तैरते रहे। पानी में सिर्फ उनके दोनों पाँव धीरे-धीरे चल रहे थे। साथ ही वह मत्स्य-कन्या भी पानी में हिलडुल रही थी। लगता था जैसे वह जिन्दा हो और नाच रही हो। कुछ देर बाद मामा तट पर आ बालू पर लेट गये। उनके होठों पर संतोष की मुस्कान खेल रही थी। उन्होंने अब अचरज से देखा—मामा की पीठ पर नरमुण्ड, हड्डी, चाँद, तारे, आकाश तथा न जाने कितने प्रकार के चित्रों का मेला लगा हुआ था। गोद में लम्बी पोशाक पहने लड़की बैठी हुई थी। ऐसे ही अजीब-अजीब चित्र उनकी समूची पीठ पर छाये हुए थे। शुरिक ने साहस बटोरकर प्रश्न किया—"तुम्हारी पीठ पर यह सब क्या है?"

मामा जरा हँसकर अब उठ बैठे। दोनों हाथों से बालू झाड़ते हुए बोले, "जब मैं बहुत छोटा और बुद्धू था ये मुझे उन्हीं दिनों की याद दिला देते हैं। देखते हो न, एक समय मैं ऐसा बुद्धू था कि सारे शरीर को ही इन चित्रों से भर दिया था। लेकिन अफसोस है कि ये इस जीवन में मिटेंगे नहीं।"

शुरिक ने फिर पूछा, "यह सब क्या लिखा है?"

"यह जानकर अब क्या होगा? उनका कोई विशेष अर्थ

नहीं है। मनुष्य की अनुभूति और काम ही सच्ची चीज है। क्यों वास्का, यही बात है न ?"

"हाँ।"

सेयोझा पूछ बैठा, "अच्छा समुद्र ! समुद्र कैसा होता है ?"

मामा बोले, "समुद्र ! समुद्र की बात क्या पूछते हो—उसके बारे में मैं और क्या कहूँ, समुद्र समुद्र ही है। उसकी तरह सुन्दर और कुछ भी नहीं। लेकिन कितना सुन्दर है—यह जानने के लिए उसे अपनी ही आँखों से देखना पड़ेगा।"

शुरिक ने पूछा, "अच्छा, समुद्र में तूफान उठने पर उसका रूप बड़ा भयानक होता है ?"

मामा ने उत्तर दिया, "समुद्र में तूफान भी बहुत सुन्दर लगता है। उसमें सब कुछ सुन्दर ही सुन्दर····" वे समुद्र सम्बन्धी एक कविता गुनगुनाते हुए पायजामा पहनने लगे।

इसके बाद घर लौटने पर वे आराम करने चले गये और लड़के वास्का की गली में आ मामा की देह पर अंकित उन विचित्र चित्रों की आपस में आलोचना करने बैठ गये।

कालिनिन स्ट्रीट का एक लड़का बोला, "बारूद से वे ऐसा बनाते हैं। पहले नक्शा बना उसके ऊपर बारूद घिस देते हैं। मैंने एक किताब में पढ़ा है।"

एक दूसरा लड़का बोला, "लेकिन बारूद कहाँ मिलता है, बताओ ?"

"दूकान में मिलता है।"

"तुम्हें जैसे दे ही देंगे ! सोलह साल से कम उमर रहने पर दूकान में तुम्हें एक सिगरेट तो देंगे नहीं, बारूद देंगे।"

"तो फिर हम शिकारियों के पास से उसे प्राप्त कर सकते हैं।"

"नहीं, वे भी तुम्हें नहीं देंगे।"

"अगर दें ?"

"और अगर न दें ?"

इस बार एक तीसरा बोल उठा, "पुराने जमाने में बारूद से यह सब होता था। अब तो मामूली नीली स्याही या चीनी स्याही से ही हो सकता है।"

"स्याही से बनाने पर क्या वह हमेशा रहेगा ?"

"हाँ, रहेगा, चीनी स्याही देने से वह अधिक दिनों तक बना रहेगा।"

सेयोंझा उनकी बातें सुनते-सुनते ओवाहू द्वीप के होनोलुलु की तसवीर की कल्पना मन ही मन करने लगा। उसी खजूर के पेड़ और सूरज की सुनहली रोशनी वाली तसवीर की। और खजूर के उसी पेड़ के नीचे सफेद पोशाक में जहाज के कप्तान तस्वीर खिंचवाने के लिए खड़े हैं, वह जैसे सब कुछ स्पष्ट देख रहा है। एक दिन मैं भी उसी तरह तस्वीर खिंच-वाऊँगा, सेयोंझा सोचता रहा।

वे तो बारूद और काली स्याही के गुण-अवगुण की बहस में लगे थे ? और सेयोंझा सोच रहा था, संसार का सब कुछ

उसके सामने उपस्थित है, वह होनोलुलु में कप्तान हुआ है—इस बात पर वैसा ही विश्वास उसे है जैसा कभी इस बात पर था कि वह कभी मरेगा नहीं। सब कुछ करने की कोशिश करेगा, सब कुछ इसी जीवन में देख लेगा जिसका कभी अन्त न होगा।

शाम के वक्त वास्का के मामा को फिर एक बार देखने के लिए उसका मन उतावला हो उठा। लेकिन मामा तभी से विश्राम ही कर रहे थे। सारी रात जागकर आये थे न! वास्का की माँ व्यस्त-सी ब्राण्डी खरीदने जाते समय पाशा मौसी को देखकर बोली, "मेरा भाई ब्राण्डी के अलावा और कुछ नहीं खाता। इसी से ब्राण्डी लाने जा रही हूँ।"

सूरज डूब गया। वास्का के रिश्तेदार आने लगे। मकान में बिजली बत्ती जल उठी। रास्ते से खिड़की के पर्दे के अलावा वास्का के घर के अन्दर का कुछ भी दिखलायी नहीं पड़ता। शुरिक के पुकारने से सेर्योझा बहुत खुश हुआ। शुरिक के बगीचे में एक नींबू का पेड़ था। उस पर चढ़ने से वास्का के घर के भीतर का सब कुछ देखा जा सकता था। सेर्योझा को साथ ले वहाँ जाते हुए शुरिक ने कहा, "जानते हो, वे सोकर उठते ही व्यायाम करते हैं। इसके बाद मूँछ-दाढ़ी बना स्प्रे से कोई सुगंधित चीज समूचे शरीर पर छिड़कते हैं। उनका खाना-पीना अब हो गया है ··आओ, इस गली से चलें। नहीं तो लीदा अगर देख लगी तो वह पीछे लग जायेगी।"

तिमोखिन के तरकारीवाले बगीचे को वास्का के बगीचे अलग करता हुआ नींबू का पुराना पेड़ टट्टर से सटकर खड़ा था। टट्टर वास्का के बगीचे से सटा हुआ था, किन्तु टट्टर की लकड़ी इतनी सड़ी हुई थी कि उसपर चढ़ने की कोशिश करते ही वह चरमरा कर टूट जायगी। नींबू के पेड़ में एक गढ़ा था, हपोई चिड़ियों ने गरमी में उसी में अपना बसेरा बनाया था। और आजकल शुरिक बड़ों की आँखों में धूल झोंक कारतूस का बक्स, खुर्दबीन और न जाने क्या-क्या अंटसंट उसमें छिपाकर रखता था। खुर्दबीन से वह कभी-कभी पेड़ या टट्टर का कोई हिस्सा जलाकर मजा लेता था। अब दोनों ही नींबू के पेड़ की एक टेढ़ी डाल पर चढ़ गये। शुरिक ने कसकर दोनों हाथों से पेड़ का तना पकड़ लिया और सेर्योझा शुरिक को कसकर पकड़ बैठ गया।

मरमर ध्वनि करते सिहरते और सुगंध बिखेरते नये-नये पत्ते उनके सिर पर डोल रहे थे। सूरज डूब चुका था, फिर भी उसकी लालिमा से क्षितिज अभी भी रंजित दिखलायी पड़ रहा था, लेकिन पेड़ के नीचे अँधेरा घना हो चुका था। सेर्योझा की आँखों के सामने हरे-हरे पत्तों के साथ एक डाल अनवरत डोल रही थी। हाँ, वास्का के घर का सब कुछ साफ दिखलायी पड़ रहा था। बिजली-बत्ती जल रही थी। परिवार के सब लोगों के बीच पंच की तरह मामा बैठे थे। सेर्योझा यहीं से उनकी बातें सुन रहा था।

वास्का की माँ दोनों हाथों को हिला-हिलाकर कह रही थी, "रास्ते में उसके उस दुर्व्यहार के लिए उन लोगों ने मुझसे पचीस रुपये जुर्माना लेकर ही दम लिया।"

एक महिला के हँस उठने पर वास्का की माँ झँझलाकर बोली, "इसमें हँसने की कौन-सी बात है! फिर एक दो महीने बाद सिनेमा हाल का शो-केस तोड़ दिया, जिसके चलते मुझे पचास रुपया जुर्माना देना पड़ा।"

एक महिला बोली, "सयाने लोगों के साथ भी अकसर मार-पीट करता है। सिगरेट की आग से रजाई जलाकर एक बार तो घर में ही आग लगा दी थी।"

कप्तान मामा ने पूछा, "सिगरेट खरीदने का पैसा उसे कहाँ से मिला ?"

वास्का दोनों घुटनों के बीच मुँह रखकर चुपचाप बैठा था। मामा उसकी ओर देख धीरे से बोले; "अरे शैतान कहीं का, सिगरेट खरीदने के लिए पैसे कहाँ से मिलते हैं तुम्हें, बताओ ?"

वास्का ने साँस लेते हुए उत्तर दिया, "पैसे मुझे माँ देती है।"

मामा वास्का की माँ की ओर देखकर बोले, "क्या बात है पोल्या ? मैं तो कुछ समझ ही नहीं पा रहा हूँ।"

वास्का की माँ ने रोना शुरू कर दिया। मामा फिर वास्का से बोले, "अच्छा, अपने स्कूल की रिपोर्ट का खाता दो, देखूँ।"

वास्का ने एक कागज लाकर मामा को दिया। उन्होंने

पन्ने पर पन्ने उलट कर देखा। उनकी दोनों भौंहें झुँझलाहट से सिकुड़ उठीं। इसके बाद दबी आजाज में बोले, "पाजी कहीं का, निरे गधे हो।"

इसके बाद रिपोर्ट का खाता टेबुल पर पटक जेब से रूमाल निकाल हवा करने लगे। कुछ देर रुककर फिर कहने लगे, "हाँ, सचमुच लड़का एकदम बिगड़ गया है। अगर इसका भला चाहो तो तुम्हें सख्त बनना पड़ेगा पोल्या! इस पर कड़ाई से शासन करना होगा। मेरी नीना को देखो। मेरी लड़कियों को उसने बड़ी खूबी से शिक्षा दी है। वे कितनी आज्ञाकारिणी हैं और कितना सुन्दर पियानो वजाना सीखती हैं। इसका एकमात्र कारण यही है कि नीना उन पर कड़ी नजर रखती है।"

सभी साथ-साथ बोल उठे, "लड़कियों की बात दूसरी है। लड़कों की बनिस्पत लड़कियों को शिक्षा देना आसान है।"

जिस महिला ने रजाई की बात कही थी वही इस बार मामा की ओर देखकर बोली, "जानते हो कोसत्या, यदि माँ उसे पैसे न दे तो वह उसके थैले से निकाल लेगा।"

वास्का की माँ अब और जोर से रोने लगी।

वास्का बोला, "अगर माँ के थैले से पैसे न लूँ तो किसके थैले से लूँ? दूसरों के थैले से?"

मामा इस बार गुस्से से लाल हो उठे, बोले, "जाओ, निकल जाओ यहाँ से।"

इधर शुरिक ने फुसफुसाकर सेर्योझा से कहा, "देखो-देखो, उसे मामा जरूर मारेंगे।"

वे जिस डाल पर बैठे थे वह मड़मड़ाकर टूट गयी। सेर्योझा और शुरिक एक दूसरे को पकड़े हुए साथ-साथ जमीन पर गिर पड़े। शुरिक जमीन पर लेटे ही लेटे बोल उठा, "ऐ रोना मत।"

इसके बाद दोनों उठ बैठे और धूल झाड़ने लगे। डाल टूटने की मड़मड़ाहट की आवाज सुनकर वास्का ने उधर देखा और सब कुछ समझ गया। वह चिल्लाया, "ठहरो, तुम्हें अभी मजा चखाता हूँ।"

खिड़की की रोशनी में दिखाई पड़ा—एक सफेद छाया वास्का के पीछे खड़ी धीरे से कह रही थी, "अपनी सिगरेट मुझे दो तो गोबरगणेश!"

सेर्योझा और शुरिक ने बगीचे से लँगड़ाते भागते हुए पीछे मुड़कर देखा—वास्का ने सिगरेट का पैकेट मामा के हाथ में थमा दिया। मामा ने उसे फाड़कर फेंक दिया और वास्का की गरदन पकड़ उसे घसीटते हुए घर के अन्दर ले गये।

दूसरे दिन सबेरे वास्का के दरवाजे पर ताला झूलता दिखलायी पड़ा। लीदा ने बताया कि वे सभी खालव सामूहिक खेती में अपने किसी सम्बन्धी के पास चले गये हैं। दिन भर कोई नहीं लौटा। दूसरे दिन सबेरे वास्का की माँ अकेले

लौटी। रोते-रोते दरवाजे पर ताला लगा अपने काम पर चली गयी। वास्का उसी रात मामा के साथ चला गया। अब नहीं लौटेगा। मामा उसे आदमी बनाने के लिए नाखिमोव नौ-स्कूल में भर्ती करा देंगे। माँ के बैग से पैसे निकालने और सिनेमा का शो-केस तोड़ने का वास्का को कैसा अच्छा फल मिला!

मौसी से भेंट होने पर वास्का की माँ ने कहा, "सम्बन्धियों के चलते ही यह सब हुआ। उन्होंने उस दिन वास्का के खिलाफ इस तरह शिकायत की जैसे वह सचमुच ही अपराधी हो। असल में वह इतना खराब लड़का नहीं था। सिर्फ कभी-कभी कुछ शैतानी कर बैठता था। मुझे तो कई बार उसने मदद भी की थी। काफी लकड़ियाँ काट लाता था। घर की दीवालों पर कागज साटते समय अगर वह मेरी मदद न करता तो क्या मैं इतना कर पाती? और अब मेरे बिना उस पर क्या बीतती होगी! मुझसे दूर बेचारा क्या करता होगा, कैसे होगा, कौन जाने?" वास्का की माँ ने फिर रोना शुरू कर दिया। रोते-रोते कहने लगी, "उनका लड़का तो नहीं है न, इसलिए उनका क्या जाता है? जाड़े के समय गले में फोड़ा होगा ही, उस समय कौन उसकी देखभाल करेगा, कौन सेवा-सुश्रूषा करेगा?"

इसके बाद से सिर पर टोपी पहने किसी लड़के को देखते ही वास्का की माँ रोने लगती। सेर्योझा और शुरिक को बुला-बुलाकर वास्का के बारे में कितनी बातें करती, उसे बचपन

की तसवीर दिखलाती थी। मामा ने उसे जितनी तसवीरें दी थीं, वे सब भी उन्हें दिखलाती। समुद्री बन्दरगाह, केले के बगीचे, कितने ही पुराने महल, जहाजघाटों पर खड़े कितने ही नाविक, हाथी की पीठ पर सवार, समुद्र की लहरों को चीरती जाती अग्नि-बोट, पायल पहने काली नर्तकी, मोटी गरदन और घुँघराले बालों वाले काले-काले लड़के—लड़कियाँ तथा न जाने……ऐसी ही कितनी ही तसवीरें वे जी-भर अचरज से देखते रह जाते। सभी चित्र कितने सुन्दर और कितने विचित्र थे! प्रायः सभी तसवीरों में असीम नील सागर नीले आकाश की गोद में एकाकार होकर मिल गया था जिन पर सागर की तरंगें आनंद से नाच रही थीं और फेन के साथ अठखेलियाँ कर रही थीं। फेनों की उज्ज्वलता मोतियों की तरह चमक रही थी। गुलाबी रंग के उस शंख को कान से लगाते ही मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती थी, जैसे एक परियों के देश से मदहोश बनाने वाले गीतों की स्वर लहरी आ रही हो।

वास्का का बगीचा आजकल एकदम खाली है, सूना है। राजा विहीन राज्य की भाँति। कोई भी अब वहाँ दिन भर खेल सकता था, बोलनेवाला कोई नहीं, डाँटनेवाला कोई नहीं। बगीचे का मालिक आज कितनी दूर—उस अज्ञात परियों के देश में चला गया था……सेर्योझा भी एकदिन जायेगा, जरूर जायेगा!

मामा के दर्शन का फल

कालिनिन स्ट्रीट और फार स्ट्रीट के बीच एक गुप्त सम्बन्ध कायम हो गया था। गुप्त रूप से बातचीत चलने लगी थी। शुरिक उधर आने-जाने लगा था। वह हमेशा व्यस्त रहता और सभी खबरें सेर्योझा को दे जाता था। तेज धूप में जलते उसके मोटे-मोटे पाँव धीरे-धीरे चलते थे और उसकी दोनों काली-काली आँखें चौकन्ना हो चारों ओर दौड़ती रहती थीं। कोई नयी बात सूझने पर शुरिक की आँखें केवल दायें-बाएँ चकित होकर देखती रहती थीं और ठीक उसी समय अगर उसके पिता तिमोखिन या उसकी माँ वहाँ आ जाती तो वे ताड़ लेते कि फिर कोई नया षड्यन्त्र इसे सूझा है। माँ चिन्ता में पड़ जाती और पिता चाबुक मारने का डर दिखलाते, क्योंकि शुरिक के विचार सदा ही हानिकारक होते थे। इसीलिए उसके माता-पिता को इतनी दुश्चिन्ता थी। अपने एक मात्र बेटे को वे स्वस्थ, सबल देखना चाहते थे, उसे हिफाजत से रखना चाहते थे।

लेकिन शुरिक इसकी परवाह नहीं करता। कालिनिन स्ट्रीट के लड़के जब गोदना गुदाते हैं तब चाबुक का भय कौन करे? गुप्त रूप से ही लड़कों ने दो दलों में बँटकर इसकी सारी व्यवस्थाएँ बखूबी कर लीं। शुरिक और सेर्योझा से ही उन लोगों ने वास्का के मामा के गोदनों के विषय में सब कुछ

मालूम कर लिया था। शरीर के किन-किन अंगों पर कैसे-कैसे चित्र थे, सब कुछ जानकर पहले उन्होंने नक्शा तैयार किया। फिर शुरिक और सेर्योझा को इस योजना में शामिल करने से इन्कार कर दिया। इसीलिये इनसे कह दिया, "तुम्हारे जैसे बच्चों के लिए यह सब नहीं है, समझे?" ओह, कितने धोखेबाज निकले! यह तो सरासर अन्याय है!

आखिर वे करेंगे क्या? किसी को यह बात बता भी तो नहीं सकते। इसके अलावा संसार के अर्थात् फार स्ट्रीट के किसी भी आदमी को वह इस बारे में कुछ भी नहीं बतायेंगे, यह प्रतिज्ञा भी कर डाली थी। क्योंकि फार स्ट्रीट में ही तो वह मशहूर बातूनी लड़की लीदा भी रहती थी जिसके पेट में कोई भी बात नहीं पच सकती, चारों ओर बकती फिरेगी। लीदा के सुनते ही बात बड़ों के कान तक पहुँच जायेगी और उसके बाद जो बीतेगी उसकी कल्पना न करना ही अच्छा है। स्कूल में खबर पहुँची नहीं कि मास्टरों की सभा, माता-पिता की आवश्यक बैठकें, सब जगह हाजिरी देते-देते जान पर नौबत आ जायेगी। हँगामा मच जायेगा और चारों ओर एक गड़बड़ी पैदा हो जायेगी। इसीलिए कालिनिन स्ट्रीट के लड़कों ने फार स्ट्रीट के लड़कों के साथ और अधिक सम्पर्क बनाये रखना नहीं चाहा। लेकिन शुरिक को खदेड़ देना इतना आसान नहीं था। उसने उनकी बनाई तसवीरें देखी थीं। शुरिक ने सेर्योझा से कहा, उन लोगों

ने बहुत-से नये चित्र बनाये हैं। हवाई जहाज, पहाड़ी झरना आदि बनाये हैं। कितने ही आदर्श वाक्य भी लिखे हैं। इन चित्रित कागजों को तुम्हारी देह पर रख एक पिन से उन्हें चुभाये जाने से सभी चित्र तुम्हारी देह पर बखूबी उतर आयेंगे।"

शुरिक की बात सुन सेर्योझा चौंक उठा। पिन चुभायेंगे? पिन!

लेकिन शुरिक अगर पिन का चुभाना बर्दाश्त कर सकता है, तो वह क्यों नहीं करेगा? उसे भी बर्दाश्त करना होगा। इसलिए मानो कुछ हुआ ही नहीं ऐसा निर्भीक भाव दिखाते हुए सेर्योझा बोला, "हाँ, बिलकुल ठीक है।"

लेकिन कालिनिन स्ट्रीट के उस्ताद लड़के उन दोनों को गोदने के लिए राजी न हुए। उन्होंने कितनी, मिन्नतें कीं, लेकिन उनकी बात कौन सुने? केवल बोले, "तंग मत करो। तुम लोग बच्चे हो, इस सबसे क्या होगा? जाओ, घर जाओ।" दोनों को ही उन लोगों ने डरा-धमका कर भगा दिया।

उनका दिल एकदम टूट गया। लगता है, अब कोई आशा ही नहीं है। शुरिक ने जी-जान से कोशिश कर उनके दल के आरसेन्ती को अपनी ओर मिलाया।

आरसेन्ती सभी की दृष्टि में एक आदर्श बालक था। पढ़ने-लिखने में खूब तेज था। क्लास में सबसे अधिक नम्बर पाता था और रहता भी था खूब साफ-सुथरा। सभी उसे

प्यार करते थे। उसमें सबसे बड़ा गुण यह था कि वह न्याय-अन्याय समझता था।

थोड़ा हँसी-मजाक के बाद उन दोनों को अपने दल में ले आकर आरसेन्ती ने कहा, "आखिर इनका भी तो कुछ हक है। इनके हाथों में कम से कम एक-एक अक्षर अर्थात् इनके नाम का पहला अक्षर ही लिख दो। तुम्हारा क्या ख्याल है शुरिक ?"

शुरिक बोला, "नहीं, केवल एक अक्षर से तो काम नहीं चलेगा।"

पाँचवीं श्रेणी का हट्टा-कट्टा छात्र वालेरी बोल उठा, "तब भाग जाओ यहाँ से। एक अक्षर क्यों, कुछ भी नहीं लिखा जायेगा तुम लोगों के हाथों पर।"

शुरिक नाराज हो चला गया, लेकिन कुछ ही देर बाद लौटकर आया और बोला, "अच्छा, एक ही अक्षर पर हम राजी हैं। लेकिन अक्षर खूब सुन्दर ढंग से आधुनिक तरीके से लिखना होगा। जैसे-तैसे लिख देने से काम नहीं चलेगा।" निश्चय हुआ कि यह काम अगले दिन वालेरी के घर किया जायेगा क्योंकि उसकी माँ घर पर नहीं थी।

शुरिक और सेर्योझा वादे के अनुसार अगले दिन वालेरी के घर पहुँचे। वालेरी की बहन लारिस्का दरवाजे के सामने बैठ सिलाई कर रही थी। किसी के आने पर "घर में कोई नहीं है" यही कहने के लिए वह वहाँ बैठी थी। उनके

गुसलखाने के पास छोटे-से आँगन में लड़के इकट्ठा हुए थे। पाँचवीं यहाँ तक कि छठी श्रेणी के भी लड़के आये थे। उनके साथ एक मोटी-ताजी गलफुल्ली लड़की भी आई थी। उसका निचला होंठ पीला, मोटा और लटका हुआ था। बहुतों का कहना था कि इस होंठ के चलते ही वह खूब गम्भीर मालूम पड़ती थी। उसका नाम था कापा। वह कैंची से पट्टियों को काट-काट टूल पर रखती जा रही थी। कापा उनके स्कूल की स्वास्थ्य कमेटी की एक सदस्या थी। वह सफेद कपड़े को टूल पर सजाकर रखती जा रही थी।

छोटे से गुसलखाने के दरवाजे के अन्दर एक बेंच पर तरह-तरह की तस्वीरें रखी थीं। लड़के तसवीरों को देख रहे थे—अपने-अपने लिए पसन्द कर रहे थे। झगड़ने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि एक चित्र को जितनी बार चाहो, व्यवहार कर सकते हो। शुरिक और सेयौझा दूर से ही उन चित्रों को देख दंग रह गये। इच्छा होने पर भी नजदीक जाकर उन्हें छू नहीं पा रहे थे। क्योंकि ये लड़के उनसे बहुत बड़े थे और इनके बदन में ताकत भी उनसे बहुत ज्यादा थी।

आरसेन्ती हाथ में किताबों का बण्डल लिये स्कूल से सीधे यहाँ आ गया था। घर लौटने पर उसे लेख लिखना होगा, भूगोल कैसे पढ़ा जाता है यह सीखना होगा, इसलिये उसने सबसे पहले अपना काम खत्म कर देने को कहा। पढ़ने

का आग्रह देख दूसरे लड़के उससे सहमत हो गये। आरसेंती ने बण्डल रख दिया और हँसते हुए बेंच पर बैठ कमीज उठा पीठ उघार दी। सभी बड़े लड़कों ने उसे घेर कर खड़े सेयोंझा और शुरिक को धक्का देकर वहाँ से हटा दिया। वे इतने पीछे पड़ गये कि उछल-कूद कर भी कुछ देख नहीं पा रहे थे। लड़के इतनी देर तक चिल्ल-पों मचाये हुए थे। अब चुप हो गये। एक विचित्र सूनापन छा गया। केवल कागज की खड़खड़ाहट सुनाई पड़ रही थी। कुछ देर बाद वालेरी की बोली सुनाई पड़ी। वह कह रहा था। "कापा, लारिक्सा के पास से एक साफ तौलिया ले आओ तो।"

कापा उसी वक्त दौड़कर एक तौलिया ले आई। लड़कों के सिर के ऊपर से वालेरी के पास फेंक दिया।

सेयोंझा ने उछल कर कुछ देखने की कोशिश करता हुआ शुरिक से पूछा, "तौलिया क्या करेंगे?"

सामने खड़े लड़कों के बीच से सिर घुसा देखने की जी-जान से कोशिश कर शुरिक बोला, "शायद खून बह रहा है, इसीलिए।" एक लम्बा लड़का त्योरी चढ़ा शुरिक की ओर देख धमका उठा, "ऐ शरारत मत करो।"

इसके वाद फिर शांति छा गई। क्या हो रहा था, वे क्या कर रहे थे कुछ भी पता नहीं चलता था। यह घोर सन्नाटा जैसे आज खत्म ही नहीं होगा। सेयोंझा जैसे थक गया था। अब उसे अच्छा नहीं लगता था। बाहर जा एक फतिंगा पकड़,

वालेरी के आँगन और लारिस्का की ओर देखता रहा। हाँ, आखिर उन लोगों ने फिर बातचीत शुरू की। थोड़ी ही देर बाद भीड़ को चीरता हुआ आरसेन्ती बाहर निकल आया।

उफ यह क्या ? वह तो पहचान में ही नहीं आ रहा था। कंधे से कमर तक बैगनी हो गया था। और कितना भयानक दिखलाई पड़ रहा था। उसकी सफेद छाती, सफेद पीठ कहीं चली गयी ? उसकी कमर में वही तौलिया बँधा था। उसमें जगह-जगह स्याही और खून के धब्बे दिखलाई पड़ रहे थे। उसका चेहरा कैसा फीका दिखलाई पड़ रहा था। फिर भी वह मुस्करा रहा था। सचमुच आरसेन्ती बड़ा बहादुर लड़का था। वह अब कापा के पास आया और तौलिया खोल उसे फेंकते हुए बोला, "मजबूती से पट्टी बाँध दो।"

कोई बोल उठा, "इन दोनों नन्हे बच्चों को पहले दे दो, नहीं तो ये भारी गड़बड़ी पैदा करेंगे।"

वालेरी आगे बढ़कर बोला, "कहाँ हो बच्चो ? तुम लोगों ने अपना इरादा बदल तो नहीं दिया ? अच्छा, तब जल्दी से आ जाओ।" इरादा बदल क्यों जायेगा ? आरसेन्ती खून और स्याही से लथपथ होकर भी हँस रहा था, यह देख कर भी क्या पीछे हटा जा सकता था ? सेयोंझा सोचने लगा, एक ही तो अक्षर है, उतना समय थोड़े ही लगेगा। शुरिक के पीछे-पीछे वह बढ़ चला। बड़े लड़के आरसेन्ती को घेरे हुए कापा का पट्टी बाँधना बड़े गौर से देख रहे थे। वालेरी बेंच

पर बैठा हुआ था।

शुरिक ने उससे पूछा, "मुझे भी तौलिये की जरूरत पड़ेगी ?"

"नहीं, तौलिया के बिना ही तुम्हारा काम हो जायेगा। देखें, हाथ आगे बढ़ाओ तो।" शुरिक का हाथ पकड़ वालेरी पिन गड़ाने लगा।

"उफ !"........

"अगर उफ करना है तो चले जाओ।" वालेरी ने धमकाया और फिर पिन गड़ाते-गड़ाते बोला, "समझ लो कि एक काँटा निकाले दे रहा हूँ। तब और नहीं दुखेगा।"

शुरिक दाँतों को दबाये बैठा रहा। फिर मुँह से एक बार भी "उफ" न निकाली। सिर्फ पैर पटकता रहा। हाथ को फूँकता रहा। शुरिक के हाथ पर एक पर एक खून के दाग उभरने लगे। वालेरी ने हाथ को और जोर से पकड़ लिया और पिन की नोक से कटे हुए चमड़े को और भी उधेड़ना शुरू किया। शुरिक फिर उछल पड़ा और जी-जान से गोदने को फूँकता रहा। खून के छींटे निकलते रहे। उफ शुरिक कितना साहसी है! सेर्योझा अचरज से सोच रहा था। उसका चेहरा काला पड़ गया था, शुरिक तो जरा भी आह-उफ नहीं कर रहा है। मैं भी आह-उफ नहीं करूँगा। अब तो भागने का भी कोई उपाय नहीं। लोग हँसेंगे, खिल्लियाँ उड़ायेंगे और शुरिक भी मुझे डरपोक कहेगा।

वालेरी अब टेबुल पर रखी स्याही की शीशी में रूई डुबो उसे उन खून की रेखाओं पर लगाने लगा। कुछ देर बाद बोला, "जाओ, हो गया। अब कौन आयेगा?"

सेर्योझा ने बहादुर की तरह आगे बढ़ हाथ बढ़ा दिया।

यह घटना गरमी के अन्त में हुई थी। उस समय सभी स्कूल खुले थे। सूरज की रोशनी से दिन गरम और सुनहले हो उठे थे। अब हेमन्त था। नील आसमान धीरे-धीरे धुँधला होता जा रहा था। सर्द हवा किसी तरह भी घर में न आने पाय इसलिए मौसी ने खिड़कियों के छेदों तक में कागज चिपका दिया था।

सेर्योझा बिस्तरे पर लेटा था। बिस्तरे के पास दो कुर्सियाँ पड़ी थीं। एक पर खिलौनों का ढेर था और दूसरी पर बैठ कर वह कभी-कभी खेला करता था। लेकिन कुर्सी पर बैठे-बैठे क्या खेला जा सकता था? टैंक किधर से घूमेंगे, शत्रुओं के पीछे हटने के लिए जगह जो नहीं है। कुर्सी के किनारे तक जाकर ही तो रुक जायेंगे। वही तो इसकी सीमा है। और वहीं लड़ाई का भी अन्त हो जायगा।

वालेरी के घर से आने के दिन से ही सेर्योझा बीमार था। स्याही लगा बाँया हाथ फूल गया था, जोरों का दर्द हो रहा था, रोशनी में आते ही आँखों के सामने अँधेरा छा गया। सिगरेट का धुँआ नाक में घुसते ही उलटी कर दी। बाहर घास पर लम्बा हो लेट गया। बायें हाथ में बड़ी जलन और

पीड़ा थी। शुरिक और एक दूसरे लड़के ने उसे घर पहुँचा दिया था। पूरी बाँह की कमीज पहने रहने के कारण मौसी कुछ भी देख न सकी। किसी से कुछ कहे बिना ही वह घर में जा बिस्तरे पर लेट गया।

इसके बाद उल्टी के साथ जोरों का बुखार आया। मौसी ने डरकर स्कूल में माँ को फोन कर दिया। माँ उसी दम आ पहुँची। डाक्टर भी आया। इसके बाद कमीज-पैंट उतार लिये। पट्टी खोल डाली। हाथ की हालत देखते ही वे सिहर उठे। सेर्योझा से प्रश्नों की झड़ी लगा दी। लेकिन सेर्योझा ने कोई जबाब नहीं दिया। बुखार की अधिकता से वह अजब-अजब सपने देखने लगा। भयंकर सपने एक विराट मूर्त्ति लाल कुर्ता पहने, नंगे दोनों लाल हाथ, उनमें स्याही की दम घुटाऊ दुर्गन्ध, लकड़ी का एक बड़ा-सा तख्ता इस पर एक कसाई मांस काट रहा था, और उसके चारों ओर खून से सने सभी लड़के गन्दी-गन्दी बातें कर रहे थे। सपने में ही वह न जाने क्या-क्या बकता रहा। खुद भी नहीं समझ रहा था कि वह क्या बक रहा है। उसका बकना सुन सारी बातें बड़ों की समझ में आ गईं।

सेर्योझा को सभी प्यार करते थे। यह सच है, लेकिन अब तो वालेरी से भी अधिक, बहुत अधिक, यंत्रणाएँ यही लोग दे रहे थे! खासकर डाक्टर ने तो उसके दोनों हाथों को पेनिसिलिन की सुइयाँ चुभा-चुभाकर एकदम झँझरी

बना दिया। डाक्टर के इस अत्याचार से हुए दर्द से भी बढ़ कर अपमान और अभिमान से वह फफक-फफककर रोने लगा। डाक्टर ने सिर्फ इतनी ही यंत्रणा देकर उसे रिहाई नहीं दी। एक दिन वह सफेद पोशाकवाली एक लड़की को, जो नर्स थी, उसके पास भेज दिया। उसने आते ही एक विचित्र यंत्र से उसकी उँगली में छेद कर बहुत-सा खून निकाल लिया। तिस पर भी जले पर नमक छिड़कने की तरह डाक्टर उसकी खिल्लियाँ उड़ा रहा था, कभी-कभी उसके सिर में तमाचे भी लगा देता था, यही सबसे असह्य उपहास था।

इस प्रकार दिन पर दिन सेर्योफा को उनका अत्याचार सहन करना पड़ा। अब खेल भी अच्छा नहीं लगता। बिस्तरे पर लेटे-लेटे वह अपनी बदकिस्मती की बात सोचता रहता था। इन सभी मुसीबतों का मूल कारण वह ढूँढ़ निकालना चाहता था।

वह सोच रहा था—गोदना गुदाने के कारण ही मुझे बीमार होना पड़ा। अगर वास्का के मामा से मुलाकात न हुई होती तो मैं गोदना नहीं गुदवाता और वास्का के मामा उसके घर नहीं आते तो उन विचित्र चीजों को जीवन में कभी देख भी न पाता। हाँ, सचमुच ही वे न आये होते तो यह सब भयानक घटनाएँ न होतीं और न मैं बीमार ही पड़ता। लेकिन उसे वास्का के मामा पर तो उतना क्रोध नहीं हो रहा था! किस प्रकार एक घटना से दूसरी घटना घट जाती है, यह

तो उसका सिर्फ एक नमूना है। मुसीबत कहाँ से आ टपकेगी कोई कह नहीं सकता।

वे सब उसे खुश रखना चाहते थे। माँ ने उसे एक जलचर भरा हौज दिया जिसमें छोटी लाल मछलियाँ थीं। उस में छोटे-छोटे हरे पौधे भी थे। एक छोटे बक्से से चूरन निकाल उस मछली को खाने के लिए देना पड़ता था।

माँ बोली, "वह पशु पक्षियों को बहुत प्यार करता है। इस मछली से भी उसे आनन्द मिलेगा।"

यह सच बात थी कि वह पालतू पशु-पक्षियोंको बहुत प्यार करता था। पालतू बिल्ली जाइका और काग उसे बहुत अच्छे लगते थे। लेकिन मछली तो पाली नहीं जाती! जाइका का शरीर कितना नरम और ऊन की तरह गरम था। उसके साथ खेलने में बड़ा मजा आता था। बूढ़ा और अनमना न होने तक उसके साथ खेला जा सकता है और काग भी बड़े मजे का था। हमेशा खुश ही नजर आता था। सेर्योझा को वह बड़ा प्यार करता था। कमरे में वह इधर-उधर उड़ता रहता था। कभी चोंच में चम्मच ले भाग जाता था, फिर सेर्योझा के बुलाने पर उसके पास आ जाता था। लेकिन मछली अपनी पूँछ हिलाने के अलावा और क्या कर सकती थी? काग की तरह मजेदार कैसे होगी? वह तो एकदम बेकार—किसी काम की नहीं—माँ यह सब क्यों नहीं समझती?

अभी सेर्योझा अपने साथी बच्चों को जी-जान से अपने

पास देखना चाहता था। शुरिक ने बाहर से एक बार पुकारा "सेर्योझा, कैसे हो ?"

सेर्योझा ने तपाक से उठकर बैठते हुए कहा, "आओ, भीतर आओ।"

शुरिक का सिर सिर्फ खिड़की के तख्ते के ऊपर से दिखलायी पड़ा। "वे मुझे अन्दर नहीं आने देते ! जल्दी से अच्छे होकर बाहर आओ।"

सेर्योझा ने चञ्चल होकर पूछा, "इतने दिनों से क्या कर रहे थे तुम ?"

"बाबूजी ने मुझे एक बैग खरीद दिया है। उसे लेकर अब स्कूल जाना होगा। मुझे स्कूल में भर्ती कर लिया है। जानते हो, आरसेन्ती भी तुम्हारी तरह बीमार पड़ गया है। लेकिन और कोई बीमार नहीं पड़ा, मुझे भी कुछ नहीं हुआ और वालेरी को बहुत दूर एक दूसरे स्कूल में भर्ती कर दिया गया है। अभी उसे बहुत दूर पैदल जाना पड़ता है।"

इतनी खबरें इकट्ठी हो गयी थीं !

शुरिक फिर बोला, "अच्छा, आज चलूँ जल्दी से स्वस्थ होकर बाहर आओ तो····" आखिरी बात बहुत दूर से सुनाई पड़ी, जरूर मौसी आँगन में आ गयी थी।

काश, उसकी तरह सेर्योझा भी दौड़कर बाहर जा सकता; शुरिक के साथ रास्तों पर घूम सकता ! बीमार पड़ने से पहले के दिन सचमुच कितने आनन्द के थे और अब·········उसे क्या-क्या

था ......और अब वह क्या खो बैठा है, क्या नहीं था उसे—इस तरह अकेले सोये-सोये सारी बातें उसे याद आ रही थीं........

बुद्धि के परे

आखिरकार बिस्तर से उठने और टहलने की उसे इजाजत मिली। फिर न कुछ हो जाय—इस भय से वे उसे घर से बहुत दूर या किसी दूसरे के घर जाने नहीं देते। सबेरे जब उसके सभी साथी स्कूल चले जाते—सिर्फ उसी समय उसे बाहर जाने दिया जाता। शुरिक की उमर अभी सात वर्ष पूरी नहीं हुई थी फिर भी उसे स्कूल जाना पड़ रहा था, उसके माँ-बाप ने गोदने की उस भयानक घटना के बाद ही उसे स्कूल में भर्ती कर दिया। जब-तब बाहर जा अब शरारत नहीं कर सकेगा। इसके अतिरिक्त मास्टरों की आँखों के सामने भी रहेगा। अपने से छोटों के साथ खेलने में सेर्योझा को अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन आँगन में आते ही उसने देखा—सिर पर फटी टोपी रखे अजीब चेहरे का एक आदमी उनके खपड़ैले घर के पास लकड़ी के ढेर पर बैठा था। उसका मुँह एकदम सूखा हुआ और बदन का कुर्ता सैकड़ों जगह फटा हुआ था। सिगरेट का एक छोटा-सा टुकड़ा वह पी रहा था। सिगरेट का टुकड़ा इतना छोटा था कि लगता था जैसे उँगलियों के बीच से ही धुआँ

निकल रहा है। उसकी उँगली कहीं जल न जाय दूसरे हाथ में गुदड़े-चिथड़े से पट्टी बँधी थी। उसका जूता फीते के बदले रस्सी के टुकड़े से बँधा था। उसे सिर से पैर तक क्षणभर देखने के बाद सेर्योझा ने पूछा, "तुम करोस्तेलेव के पास आये हो?"

उसने पूछा, "करोस्तेलेव कौन है? मैं किसी करोस्तेलेव को नहीं जानता।"

"तो क्या लुकियानिच को चाहते हो?"

"उसे भी मैं नहीं जानता।"

"उनमें से कोई भी घर नहीं है, केवल मैं और मौसी...... अच्छा, तुम्हें तकलीफ नहीं होती?"

"कहाँ?"

"उँगली जो जली जा रही है।"

"उफ!" पिछली बार की तरह एक कश खींच सिगरेट का टुकड़ा जमीन पर फेंक उसे पाँव से मलकर आग बुझा दी।

सेर्योझा ने फिर पूछा, "तुम्हारा वह हाथ......वह भी पहले ही जल गया था क्या?"

उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। इसकी ओर कातर दृष्टि से देख सिर्फ मुँह बिचका लिया। सेर्योझा अचरज से सोचने लगा—वह मेरी ओर इस तरह क्यों देख रहा है।

अब उसने पूछा, "अच्छा, तुम लोग यहाँ कैसे हो? मजे में हो तो?"

"हाँ, मजे में हैं।"

"यहाँ चीजें अच्छी मिलती हैं ?"

"कैसी चीजें ?"

"अच्छा, तुम्हारे पास क्या सभी चीजें हैं, बोलो तो ?"

"मेरी एक साइकिल है। इसके अलावा खिलौने तो हैं ही। जैसा भी खिलौना चाहो, मिल सकता है। हाँ ल्योन्या को सिर्फ झुनझुना है और कोई खिलौना नहीं।"

"अच्छा, तुम्हारे कपड़े-लत्ते कहाँ रखे हैं, बताओ तो बेटे ? मान लो, कोट और सूट के कपड़े की बात कह रहा हूँ।"

यह सब तो हमारे यहाँ विशेष कुछ नहीं। वास्का की माँ के पास बहुत हैं।

"वास्का की माँ कौन है ? कहाँ रहती है वह ?"

वे और कितनी बातें करते कौन कह सकता है। ठीक उसी क्षण सदर दरवाजा खुलने की आवाज हुई। लुकियानिच अन्दर आते ही उस आदमी को देखकर बोला, "कौन हो तुम ? क्या चाहते हो ?"

वह झट से उठकर खड़ा हो गया और बेचारे की तरह करुण दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। इसके बाद बोला, "मैं काम खोज रहा हूँ हुजूर।"

"मकान के भीतर घुसकर काम खोजा जाता है ? कहाँ रहते हो तुम ?"

"रहने की जगह नहीं है अभी।" अस्पष्टरूप से उसने उत्तर

दिया ।

"पहले कहाँ रहता था ?"

"बहुत दिन पहले ही वह घर उजड़ गया ।"

"तो जेल से छूटकर आ रहे हो शायद ?"

"हाँ, एक महीना पहले छूटा हूँ ।"

"जेल क्यों गया था ?"

कुछ देर चुप रह वह बोला, "उनके ख्याल से मैंने अपनी और पराये की चीज में कोई फर्क न समझा । लेकिन विश्वास कीजिये हुजूर, मैंने कुछ किया नहीं था, भूल से वे मुझे पकड़ ले गये थे ।"

"अच्छा, छूटने पर तुम अपने घर न जाकर इधर-उधर क्यों मारे-मारे फिर रहे हो ?"

"घर गया था लेकिन मेरी स्त्री ने मुझे अपने घर में घुसने नहीं दिया । उसने एक दूसरे आदमी से—एक दूकानदार से—शादी कर ली है । इसीलिये मैं खानाबदोश की तरह दर-दर मारा फिर रहा हूँ । मेरी माँ—बहुत दूर —चिता में रहती है । सोचता हूँ, उसी के पास चला जाऊँ ।"

सेर्योझा अचरज से उस आदमी की बातें सुन रहा था । यह जेल में था । किताब में उसने जेल की तस्वीर देखी है··· मजबूत लोहे की छड़ों से घिरा हुआ जेलखाना···ढाल-तलवार हाथ में लिये लम्बी-लम्बी मूँछ-दाढ़ी वाले पहरेदार जेलखाने के फाटक पर।····फिर इस आदमी की माँ भी है ! माँ जरूर

इसके लिये बहुत रोती होगी ! बेचारी माँ····लड़का अगर लौट कर माँ के पास जाये तो वह न जानें, कितनी खुश होगी। वह इसके लिए पोशाक बनवा देगी, जूते का फीता भी खरीद देगी।

लुकियानिच ने पूछा, "चिता में····वह तो बहुत दूर है। अच्छा, तो अभी क्या करोगे, सुनूँ ? ईमानदारी से काम करोगे तो ? या, फिर उसी तरह अपनी और पराये की चीज में कोई फर्क नहीं रखोगे ?"

"अपनी यह लकड़ियाँ मुझे चीरने दीजिये," लम्बी साँस खींचते हुए वह बोला।

"अच्छा ठीक है।" लुकियानिच ने उसी खपड़ैल पर से एक आरी लाकर उसके हाथ में दे दी। मौसी उनकी बातें सुन कुछ देर पहले ही से, आँगन में एक किनारे आकर खड़ी थी। न जाने क्यों, मौसी ने अचानक मुरगियों को बाड़े में घुसने के लिए चिल्लाकर पुकारना शुरू कर दिया। हालाँकि उनके सोने का समय अभी भी हुआ नहीं था—फिर भी मौसी ने उन्हें उनके बाड़े में घुसा दरवाजे में ताला लगा दिया और चाभी अपनी जेब में रख ली। इसके बाद फुसफुसाकर बोली, "इस आदमी पर जरा नजर रखना। देखना कहीं आरी ही लेकर चम्पत न हो जाय।"

उसी वक्त सेर्योझा उसके आसपास चक्कर लगाने लगा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में न जाने कैसा एक विचित्र कौतुहल,

सन्देह, भय और करुणा भरी थी। इस आदमी के साथ और कुछ बातें करने का उसे साहस नहीं होता। इस आदमी का जीवन कितना रहस्य और विचित्रताओं से भरा था, यही सोचता हुआ वह उसकी ओर थोड़ी श्रद्धा से देख रहा था। वह आदमी भी कुछ बोलता नहीं था। बड़े उत्साह से लकड़ी पर आरी चलाता जा रहा था। बीच-बीच में थोड़ी देर बैठ कर सिगरेट का धुआँ छोड़ने लगता था।

दोपहर का खाना खाने के लिए सेयोंझा घर में चला गया। माँ और करोस्तेलेव आज घर में नहीं थे। वे तीनों खाने बैठ गये। खाने-पीने के बाद लुकियानिच ने मौसी से कहा, "इस आदमी को मेरा पुराना एक जोड़ा जूता दे देना।"

मौसी बोली, "तुम खुद उसे अभी कई दिन पहन सकते हो। उस आदमी को तो जूता है ही।"

"वही जूता पहन कर वह चिता तक पहुँच जायेगा?"

"अच्छा, देखा जायगा। कल का बहुत-सा खाना बचा है, कुछ खाने को दे दूँ।"

लुकियानिच विश्राम करने चला गया। मौसी ने खाने की टेबुल पर से मेजपोश हटा लिया। सेयोंझा ने अचरज से पूछा, "मेजपोश हटा क्यों लिया?"

मौसी बोली, "देखते नहीं, कितना गन्दा है वह, मेजपोश हटाकर ही उसे खिलाया जायगा।"

इसके बाद मौसी ने शोरबा गरम कर रोटी के कई टुकड़े ले

उस आदमी को बुलाकर कहा, "लो, यह खा लो।"

उसके आगे बढ़ आने पर मौसी ने हाथ-पाँव धोने के लिए पानी उड़ेल दिया। एक छोटे-से तख्ते पर दो बर्तनों में साबुन रखे थे। एक गुलाबी दूसरा भूरा काला। उस आदमी ने भूरा काला कपड़े धोनेवाला साबुन ले हाथ धोया। गुलाबी साबुन से हाथ-मुँह धोया जाता है, लगता है, बेचारा यह जानता भी नहीं, शायद मेजपोश या आज के शोरबे की तरह गुलाबी साबुन भी उसके लिए नहीं था। वह कितना निरीह और सीधा-सादा मालूम पड़ता था, वह कुछ विचित्र ढंग से कुछ सतर्कता के साथ रसोई घर से होता हुआ गया, जैसे उसके पाँवों के भार से फर्श धस जायगा—यह सोच डर रहा हो। लेकिन पाशा मौसी की निगाह उसी पर लगी हुई थी। इसके बाद खाने बैठा तो अपने बदन पर हाथ फेरकर क्रूस का चिह्न बना लिया। सेर्योझा ने देखा—मौसी इससे खुश हुई है। उसे बहुत-सी शोरबा और रोटियाँ देते हुए बोली, "लो, भरपेट खा लो।"

वह देखते ही देखते सारा शोरबा और रोटी के तीन टुकड़े निगल गया। मौसी और थोड़ा शोरबा और एक छोटे से ग्लास में थोड़ा वोदका देते हुए बोली, "अब वोदका भी पी सकते हो। खाली पेट पीने से लोग बीमार पड़ते हैं।"

बहुत खुश हो ग्लास को मुँह के पास ले जाकर वह बोला, "भगवान आपका भला करे।" इसके बाद एक ही क्षण भर में

ही ग्लास की पूरी वोद्का घट-घट पी ली और खाली ग्लास टेबुल पर रख दिया। सेर्योझा उसे तारीफ की नजर से देख रहा था और सोच रहा था सचमुच यह आदमी कितना फुर्तीला है। वह अब धीरे-धीरे खाने लगा और मौसी के साथ जमकर बातचीत शुरू हो गयी। उसकी घरवाली ने उसे निकाल दिया था—यह बात मौसी को बताते हुए वह बोला, "जानती हैं, मेरे पास बहुत-सा सामान था। सिलाई कल, ग्रामोफोन, बरतन, किसी चीज की कमी न थी। लेकिन उसने मुझे एक भी चीज नहीं दी। मुझे देखते ही बोली, 'जहाँ से आये हो वहीं लौट जाओ। मेरी जिन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो?' मैंने उससे बड़ी मिन्नत करते हुए कहा, 'केवल ग्रामोफोन दे दो मुझे। वह तो हम दोनों ही के पैसे से खरीदा गया था।' फिर भी उसने नहीं दिया। उसने मेरा सूट काट अपनी पोशाक बना ली। मेरा कोट दूकान में बेच दिया।"

"पहले कैसे रहते थे? बहुत सुखी थे?" मौसी ने पूछा।

"हाँ, बिलकुल कपोत-कपोती की तरह। हम दोनों के बीच गहरा प्यार था। वह मेरे लिये एकदम पागल थी। लेकिन आज सब कुछ बदल गया है। उसने एक बदनसीब से शादी कर ली है; देखने में एकदम बदसूरत है, नाटा-सा एक दूकानदार है।"

इसके बाद वह अपनी माँ की कहानी कहने लगा। माँ उसे जेलखाने में क्या-क्या भेजती थी यह भी बताया। उसके दुख-

दर्द की कहानी सुनकर लगता था, मौसी तो एकदम नरम पड़ गयी थी। अब कई टुकड़े मांस और चाय ला दी। इसके बाद एक सिगरेट भी दिया।

वह फिर कहने लगा "माँ के पास जा रहा हूँ। उसके लिए अगर कुछ ले जा सकता तो अच्छा होता। काश, ग्रामोफोन ले जा पाता।"

सेर्योझा ने सोचा—सचमुच बेचारा ग्रामोफोन पाकर कितना खुश होता। माँ-बेटा गाना सुन सकते थे।

मौसी तसल्ली देकर बोली, "तुम काम-धंधा शुरू करो, देखना सब ठीक हो जायेगा। फिर सब हो जायगा।"

"सब समझता हूँ, लेकिन जो घटना हो गयी है उससे तो मुझे काम मिलना भी बड़ा मुश्किल है।" मौसी ने शायद उसके दुख से दुखित हो एक लम्बी सांस खींची। वह फिर कहने लगा, "मैं बहुत कुछ हो सकता था, दूकानदार भी हो सकता था, लेकिन कुछ किये बिना ही जीवन का मूल्यवान समय नष्ट कर दिया। अभी अफसोस हो रहा है।"

"इसमें तो तुम्हारा ही कसूर है। ऐसा क्यों किया ?"

"उसे याद कर अब क्या लाभ होगा ? जो होना था, हो गया। अच्छा, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं बाहर जाकर लकड़ी चीरना खत्म करूँ।"

वह फिर आँगन में लौट आया। लेकिन बूँदा-बाँदी शुरू हो जाने से मौसी ने सेर्योझा को बाहर नहीं जाने दिया।

सेर्योझा अचानक पूछ बैठा, "यह आदमी ऐसा क्यों है ?"

"वह जेल में था न। सब कुछ तो सुना ही है।"

"जेल क्यों गया था ?"

"कोई खराब काम किया होगा। अच्छा काम करने पर तो कोई जेल जाता नहीं।"

लुकियानिच दोपहर का समय खत्मकर फिर आफिस जाने की तैयारी कर रहा था। सेर्योझा ने उसके पास आकर पूछा, "अच्छा, खराब काम करने पर लोग जेल ले जाते हैं ?"

"हाँ, इस आदमी ने दूसरे की चीज चुरा ली थी। मान लो, मैंने मेहनत कर पैसा कमाया और उससे कोई चीज खरीदी, और कोई दूसरा आदमी आ बिना कुछ कहे चुपचाप उसे उठा ले गया। यह क्या अच्छा काम हुआ ?"

" नहीं।"

"निश्चय नहीं, यह तो सरासर अन्याय हुआ।"

"तो फिर आदमी अच्छा नहीं ?"

"जरूर नहीं है।"

"तो फिर मौसी से क्यों अपना पुराना जूता उसे दे देने को कहा ?"

"उसके बिना उसे तकलीफ हो रही थी न, इसलिये।"

"तो जो बुरा काम करता है उसके लिए तुम्हें अफसोस क्यों होता है ?"

"हाँ....नहीं...यह बात तुम क्या जानो....वह बुरा आदमी

है, मुझे अफसोस इसलिये नहीं है। उसका फटा जूता देख, इसके बाद उसे खाली पाँव चलना पड़ेगा—यही सोच उसके लिए अफसोस हुआ। इसके अतिरिक्त, किसी को बुरा समझ कर ही हमेशा तुम उससे घृणा नहीं कर सकते। पर हाँ, इतना जरूर है कि अगर वह चोर न होता तो खुश हो उसे बहुत अच्छा जूता देता। अच्छा, अब मैं चला।" लुकियानिच जल्दी से चला गया।

सेर्योझा सोच रहा था लुकियानिच ऐसी विचित्र बातें कहता है जिनका कुछ मतलब ही समझ में नहीं आता। खिड़की के पास खड़ा हो बूँदा-बूँदी की ओर देखता वह सोच रहा था लुकियानिच की बातों का क्या मतलब हो सकता है। अचानक उसने देखा — वह आदमी फटी हुई धोती सिर पर रखे, एक जोड़ा जूता हाथ में लिए रास्ते से जा रहा था।

कुछ देर बाद माँ ल्योन्या को गोद में लिए लौटी। सेर्योझा ने उसी क्षण माँ के पास जाकर प्रश्न किया, "अच्छा माँ, तुम्हे याद है एक बार स्कूल के एक लड़के ने कापी चुरा ली थी? उसे क्या पकड़कर जेल ले जाया गया था?"

"क्यों, जेल क्यों ले जाते?" माँ ने अचरज से पूछा।

"लेकिन क्यों, उसे जेल में क्यों नहीं ले गए?"

"वह तो बच्चा था न। कुल आठ वर्ष तो उसकी उमर थी।"

"तो क्या, छोटे लड़कों को यह काम करने दिया

जाता है ?"

"कौन काम ?"

"चोरी।"

"नहीं, बच्चे भी चोरी नहीं करेगें। मैंने उसे खूब डाँटा था, इसीलिए वह फिर कभी चोरी नहीं करता। लेकिन तुम यह सब क्यों सोच रहे हो, बताओ तो ?"

सेर्योझा ने अब माँ को जेल से लौटे उस आदमी की सारी कहानी सुना दी। सब कुछ सुन माँ बोली, "हाँ, कितने ही आदमी इस तरह के होते हैं। तुम जब और बड़े होगे तब तुम्हारे साथ इस विषय पर और बातें करूँगीं, क्यों ? अभी मौसी के पास से रिफू करने वाली सुई ले आओ तो।"

सेर्योझा सुई लाकर फिर बोला, "उसने चोरी क्यों की ?"

"काम करना शायद उसे अच्छा नहीं लगा।"

"लेकिन क्या, वह जानता नहीं था कि चोरी करने पर जेल जाना होगा ?"

"जरूर जानता था।"

"तो फिर ? उसका भी डर नहीं हुआ ? जेलखाना तो बड़ा भयानक स्थान है, क्यों माँ ? "

माँ अब तंग आकर बोल उठी, "बहुत हो गया. यह सब बातें अब बंद करो। मैंने तुम्हे कह दिया कि अभी यह सब जानने लायक तुम नहीं हुए हो। कोई दूसरी बात सोचो, इस विषय में अब मैं एक भी बात सुनना नहीं चाहती, समझे ?"

सेर्योझा माँ के नाराज चेहरे की ओर देख चुप हो गया। इसके बाद रसोई-घर में जा एक ग्लास में थोड़ा-सा पानी उड़ेल लिया। मुँह नीचेकर उस पानी को एक ही घूँट में पी जाने की कोशिश की लेकिन पानी छलक जाने से उसकी कमीज भीग गई। पीछे का कालर भी भीगकर सिमसिमा गया। पीठ पर पानी लुढक गया। लेकिन भीगी कमीज की बात उसने किसी से भी नहीं कही। कहते ही सब मिलकर उसे बकना शुरू करेंगे और इस बात को लेकर बेमतलब ही हो-हल्ला मच जायगा। रात को सोने जाने के पहले ही उसकी कमीज देह में ही सूख गई।

वह सो गया है — ऐसा समझ बड़ों ने खाने के घर में खूब जोर-जोर से बातें शुरू कीं।

करोस्तेलेव ने कहा, "हर बात का हाँ 'या ना' साफ-साफ जवाब वह सुनना चाहता है। दोनों में से कोई एक कह देने से ही बेचारा ठीक-ठीक समझ नहीं सकता।" लुकियानिच बोला, "मैं तो उस वक्त भाग कर बच पाया। उसके हजारों सवालों का जवाब कौन दे ?"

माँ बोली, "बच्चों के हरेक सवाल का जवाब नहीं देना चाहिए। जिसे वह नहीं समझेगा उस पर उससे बहस क्यों की जाय ? उससे क्या लाभ होगा; बल्कि उसका उलटा ही फल होगा। उसके मन पर बेमतलब दबाव पड़ता है और अनाप-शनाप सोचने लग जाता है। कोई अगर बुरा काम करे

तो उसे सजा मिलेगी – बस, सिर्फ इतना जानना ही उसके लिए काफी है। मैं तुम लोगों से अनुरोध करती हूँ, उसके साथ इन सब बातों पर कभी भी बहस मत करना।"

लुकियानिच अब प्रतिवाद के स्वर में बोला, "कौन उसके साथ बहस करने गया था? उसी ने तो प्रश्नों की झड़ी लगा दी।"

पास के अँधेरे घर से सेर्योझा ने धीमी आवाज में पुकारा "करोस्तेलेव।" सभी उसी दम शांत हो गये।

करोस्तेलेव ने उत्तर दिया, "हाँ बेटा आ रहा हूँ"—और घर में घुस गया।

सेर्योझा ने पूछा, "अच्छा, दूकानदार किसे कहते हैं?"

करोस्तेलेव ने स्नेह-सिक्त स्वर में उत्तर दिया, "अभी तक सोये नहीं मुन्ना! लो,मैं तुम्हारे पास बैठता हूँ, फ़ौरन सो जाओ।"

सेर्योझा उसी तरह बड़ी-बड़ी आँखों से अपने प्रश्न का उत्तर सुनने की आशा में टिमटिमाती रोशनी में देखता रहा। करोस्तेलेव ने उसके मुँह के पास आकर खूब चुपके (जिससे उस घर से माँ न कुछ सुन पाये) उसके प्रश्न का उत्तर उसके कान में दे दिया।

परेशानी

सेयोंझा फिर बीमार पड़ा। वह अचानक टानसिल की यंत्रणा से परेशान हो उठा। डाक्टर ने आकर कहा, "गिल्टी हो गई है।" फिर डाक्टर का अत्याचार शुरू हुआ। काड-लिवर खाना, गले में पुळटिश लगाना, टेम्परेचर लेना, डाक्टर के निर्देशानुसार सब कुछ चलने लगा। काला-सा मलहम एक कपड़े के टुकड़े में लगा उसके गले में चिपका दिया गया। पुल-टिश के ऊपर तिरछा एक चिपचिपा फीते से ऊपर से रूई देकर दोनों कानों की बगल से पट्टी बाँध दी गयी। सिर ठीक एक तख्ती में लगी काँटी की तरह हो गया, इधर-उधर घुमाया नहीं जाता। उफ! इस तरह जिन्दा रहना होगा।

हाँ, इसबार वे हमेशा बिस्तरे पर लिटाये नहीं रखते थे। बुखार न होने पर और वर्षा न होने पर उसे कभी-कभी बाहर जाने दिया जाता था। लेकिन बहुत कम। क्योंकि रोज ही उसे थोड़ा बहुत बुखार रहता था, बाहर बूँदा-बाँदी होती रहती। उसके लिए रेडियो हमेशा ही खुला रहता था! लेकिन रेडियो कितना सुने? उसे सुनते-सुनते तो कान बहरे हो गये।

और बड़े इतने आलसी कि मत पूछो! जब भी तुम उन्हें एक किताब पढ़कर सुनाने को कहो या कोई किस्सा सुनाने कहो तभी वे कह बैठेंगे कि उन्हें बहुत काम है। लेकिन मौसी जब रसोई बनाती है तो सिर्फ दोनों हाथ ही काम करते हैं,

जीभ तो कोई काम करती नहीं। तो फिर क्यों रसोई बनाते समय मौसी उसे किस्सा नहीं सुना सकती ?

माँ को ही ले लो। वह जब स्कूल में रहती है या ल्योन्या के भीगे कपड़े बदलती रहती है अथवा स्कूल का खाता देखती रहती है तो बात दूसरी है। लेकिन जब वह आईने के सामने घंटों खड़ी हो बाल सँवारती रहती है और आईने की तरफ मंद-मंद मुसकुराती रहती है तो क्या कहें — कि वह काम में बहुत व्यस्त है ? उस समय अगर सेर्योझा उससे अनुरोध करता, "माँ, एक कहानी सुनाओ।" तो वह कह देती, "थोड़ा ठहर जाओ। देखते हो न मैं व्यस्त हूँ।"

"आज इस तरह क्यों बाल सँवार रही हो माँ ? सेर्योझा माँ की लम्बी बेणी की ओर देख पूछा।"

"रोज-रोज एक ही तरह का अच्छा नहीं लगता, इसीलिए"

"अच्छा क्यों नहीं लगता ?"

"यों ही"

"और इस तरह तुम मुसकुरा क्यों रही हो ?"

"यों ही।"

"यों ही क्यों, कोई कारण क्यों नहीं है ?'

"ओह, सेर्योझा मुझे तंग मत करो बेटा।"

अचरज से उसने सोचा उसने माँ को तङ्ग कब किया ? कुछ देर चुप रहकर फिर बोला, "अच्छा, जो हो, मुझे एक कहानी पढ़कर सुनाओ न माँ ?"

"अच्छा शाम तक इन्तजार करो, तब मैं पढ़ूँगी।"

लेकिन सेर्योझा जानता है कि माँ शाम को घर लौटने पर ल्योन्या को खिलायेगी, करोस्तेलेव के साथ गप लड़ायेगी और फिर स्कूल के खातों को लेकर देखने बैठ जायगी। फिर कौन कहानी पढ़ता है।

दिन भर का काम-काज खत्म कर शाम को थोड़ा आराम करने के ख्याल से मौसी सेर्योझा के कमरे में आ चिन्तित-सी बैठ गयी। बैठते ही झट से रेडियो बन्दकर सेर्योझा ने कहा, "एक कहानी सुनाओ मौसी!"

"दुत, कौन-सी कहानी सुनोगे? सभी तो तुम्हें याद हैं।"

"कोई बात नहीं फिर भी एक सुनाओ।"

सचमुच, मौसी भी कितनी आलसी थी। खैर, आखिर मौसी ने कहानी कहना शुरू किया। अच्छा, तो फिर सुनो, "ब-हु-त-बहुत दिन पहले की बात है। एक था राजा और एक थी रानी। उन्हें एक कन्या भी थी। एक दिन क्या हुआ कि..........।"

सेर्योझा ने चौंककर पूछा, "क्या वह बहुत सुन्दर थी?"

वह जानता था कि वह बहुत सुन्दर होगी ही। सभी यही जानते हैं। फिर मौसी क्यों न कहेगी। कहानी कहते समय एक भी बात छोड़नी नहीं चाहिए।

मौसी फिर कहने लगी, "हाँ, बहुत सुन्दर थी। इतनी सुन्दर कि....इसके बाद एक दिन राजकुमारी ने ब्याह करने का निश्चय

किया। देश-देश से कितने ही राजकुमार उससे ब्याह करने आये······"

कहानी सुपरिचित कायदे से बढ़ती गई। सेर्योझा ध्यान से सुनने लगा। उसकी बड़ी-बड़ी, सुन्दर आँखें कौतूहल और स्नेह से भर उठी थीं। उसे उस कहानी की हरेक बात मालूम थी, लेकिन इससे क्या हुआ, कहानी कभी पुरानी होती है।

जिस कहानी का अन्त नहीं, यह वही कहानी थी। इसलिये उसे हमेशा सुनते भी अच्छा लगता था। इस कहानी की हर बात वह समझता था—ऐसी बात नहीं, हां अपनी समझ के अनुसार ठीक ही समझ लेता था, जैसे घोड़े के दोनों पाँव जमीन में गड़ गये—इसके बाद फिर वह उछलकर चल पड़ा। इसके बाद उसकी जंजीर काट दी गयी।

धीरे-धीरे संध्या बीत गई। अँधेरा घना हो गया। घर में भी अँधेरा छा गया। मौसी की कहानी की लगातार आवाज को छोड़ और कुछ भी सुनायी नहीं पड़ता। जैसे उसे और मौसी के अलावा दुनिया में और कोई है ही नहीं। फार स्ट्रीट के इस मकान के चारों ओर नीरवता छा गई।

आखिर कहानी खत्म हो गयी। बहुत आरजू-मिन्नत करने पर भी मौसी दूसरी कहानी सुनने को राजी न हुई। एक लम्बी साँस खींच वह फिर बड़बड़ाती रसोई घर में चली गयी।

अब वह एक दम अकेला रह गया था। अब वह क्या करे? तबीयत अच्छी नहीं रहने से खिलौनों से खेलने में भी मन नहीं लगता। तस्वीर देखना भी अच्छा नहीं लगता। मकान में काफी जगह नहीं होने से साइकिल भी चढ़ी नहीं जा सकती। बीमारी की अपेक्षा नीरवता ही उसे अधिक खलती थी। वह अब उठता था। चारों ओर जैसे अँधेरा ही अँधेरा हो।

लुकियानिच हाथ में एक बंडल लिए लौटा। न जाने क्या खरीद लाया था। बंडल खुलते ही भूरे रंग का एक बक्स निकल आया। सेर्योझा उत्सुकता से उसे देखता रहा। धीरज रख इन्तजार करने लगा—लुकियानिच कब उसे खोलता है। लुकियानिच सूते को इतना धीरे-धीरे क्यों खोल रहा था? एक छूरी से उसे झट से काट भी तो सकता था। लेकिन नहीं, वह निपुण हाथों से उसे खोल रहा था, शायद वह फिर किसी काम में आ जाय। काट देने पर तो बरबाद हो जायगा।

सेर्योझा अधीर हो उत्सुकतापूर्वक उस बड़े और सुन्दर बक्से की ओर देख रहा था। लेकिन बक्स खुलने पर उसमें से एक जोड़ा रबड़-सोल जूता निकला। हूबहू ऐसा ही न होने पर भी करीब इसी तरह का एक जोड़ा जूता उसे भी था। लेकिन वह उसे जरा भी अच्छा नहीं लगता था। अब लुकियानिच के जूते की ओर देखना भी अच्छा नहीं लगता। झँझलाकर उसने पूछा, "क्या है वह?"

"देखते नहीं, एक जोड़ा बूट जूता है। जवान ऐसा जूता

नहीं पहनते, सिर्फ बूढ़े ही पहनते हैं, समझे ?"

"तो तुम बूढ़े हो ?"

"इसे पहनने से बस वही हो जाऊँगा।"

जूते पहनकर लुकियानिच बोला, "वाह, खूब आराम मिल रहा है।" इसके बाद मौसी को दिखाने चला गया। सेर्योझा ने खाने के घर में जा कुर्सी पर खड़ा हो बत्ती जलाने के लिए स्वीच दबायी।

बोतल में मछलियाँ बेवकूफ की तरह तैर रही थीं। सेर्योझा की छाया बोतल पर पड़ते ही मछलियाँ ऊपर आ कुछ चारा पाने की आशा में मुँह बाने लगीं।

सेर्योझा अचरज से सोचने लगा—वे क्या अपने शरीर का तेल पी सकती हैं ? यह सोच उसने काडलिवर की शीशी खोल कई बूँद दवा उसमें उड़ेल दी। मछलियाँ पूँछ के सहारे खड़ी हो मुँह बाने लगीं लेकिन काडलिवर नहीं पिया। और कई बूँद उड़ेलते ही वे दूसरी ओर भाग गयीं।

तो ये भी काडलिवर पसन्द नहीं करतीं।

सचमुच, अब उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। हर क्षण एक-सा, ऊबाने वाला। इस नीरवता को भंग करने के लिए अब शरारत करने की उसकी इच्छा हो रही थी। एक छुरी ले दरवाज़े पर जहाँ का रंग उड़ता जा रहा था, वहाँ खरोंचने लगा। ऐसा करना उसे बहुत अच्छा लगता था यह बात नहीं। फिर भी कुछ तो करना ही होगा। इस बार उसने मौसी

की जम्पर बुनने की ऊन की गोली ले उसे खोल डाली, फिर लपेटना चाहा। लेकिन वैसा कर न सका। वह जानता था—वह शरारत कर रहा है और पाशा मौसी ने देख लिया तो उसे जरूर फटकारेगी और तब वह रोयेगा। सचमुच उसने मौसी की फटकार खायी और रोया भी। फिर भी इस शरारत में उसे मजा आ रहा था, सूनापन कुछ दूर हो रहा था। मौसी बड़बड़ायी, वह रोया—आखिर कुछ तो हुआ।

इसके बाद जब माँ ल्योन्या के साथ लौटी तो सूनापन बिल्कुल भंग हो गया, घर में जैसे जान आ गयी। ल्योन्या रोने लगा, माँ ने बड़े प्यार से उसका भीगा हुआ जांघिया बदल दिया। इसके बाद उसे नहलाया। अब ल्योन्या पहले की तरह छोटा नहीं था। देखने में आदमी की तरह लगता था, हाँ, मोटा कुछ ज्यादा हो गया था—अभी वह दोनों हाथों से झुनझुना पकड़ लेता था और उसे ले अपने मन-मुताबिक खेलता था। दिन भर उसके लिए सेर्योझा को कुछ भी तो करना नहीं पड़ता।

रात में सबसे अन्त में करोस्तेलेव घर लौटता था। उस वक्त हर आदमी किसी न किसी काम से उसे बुलाता था। सेर्योझा के साथ बात शुरू ही की, या कोई कहानी सुनाने को राजी हुआ ही कि उसी दम टेलीफोन की घंटी टनटन बज उठी। और माँ तो हमेशा उसे जिस-तिस के चलते तंग करती ही रहती थी। घुमा - फिराकर एक न एक बात कहती ही,

दूसरों का काम खत्म होने तक इन्तजार भी नहीं करती। सोने के पहले ल्योन्या रोना शुरू करेगा, और तब माँ किसी दूसरे को नहीं, करोस्तेलेव को ही बुलाती, बच्चे को गोद में ले गाना गा उसे सुलाने के लिए। उस समय सेर्योझा की भी दोनों आँखें मूँद जाना चाहतीं। इस तरह करोस्तेलेव के साथ बातें करने की उसकी आशा पर पानी फिर जाता। फिर करोस्तेलेव को कब समय मिलेगा, कौन कह सकता है ?

फिर भी कभी-कभी शाम को ल्योन्या जब सवेरे सो जाता, और माँ स्कूल के खाते देखने में लग जाती, तब करोस्तेलेव उसके पास बिस्तर पर बैठ उसे कहानियाँ सुनाता। पहले पहल वह इतने सुन्दर ढङ्ग से कहानी नहीं कह सकता था, वह जानता ही नहीं था कि कहानी कैसे कही जाती है। लेकिन सेर्योझा ने जब उसे कहानी कहना सिखला दिया तो उसके बाद से अब वह बड़ी खूबी से कहानी सुनाता था। बड़े सुन्दर ढङ्ग से कहना शुरू करता, "एक था राजा, एक थी रानी……" सेर्योझा ध्यान से सुनता और कहीं भूलचूक होने पर उसे सुधार देता। इसी तरह कहानी सुनते-सुनते वह न जाने कब सो जाता।

मनहूस दिन जब कटना नहीं चाहते, जब किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता, तब सिर्फ शरारत करना चाहता था। उस समय भी करोस्तेलेव का सुन्दर हँसमुख चेहरा, उसके दोनों मजबूत हाथ और उसका गंभीर, स्नेह भरा स्वर, सब

कुछ उसे बड़ा अच्छा लगता था। करोस्तेलेव को वह दिन पर दिन बहुत प्यार करता जा रहा था। सिर्फ ल्योन्या और माँ ही नहीं, सेर्योझा भी करोस्तेलेव का प्रिय है, यह सोचना भी उसे बड़ा अच्छा लगता था और यही सोचते-सोचते वह निद्रा की गोद में सो जाता।

होल्मोगोरी

होल्मोगोरी···होल्मोगोरी···

माँ और करोस्तेलेव आजकल जब बातचीत करने बैठते, सेर्योझा को केवल एक यही विचित्र शब्द सुनना पड़ता।

"होल्मोगोरी चिट्ठी भेज दी है ?"

"वहाँ काम का दबाव कम होने से, मैं सोचता हूँ, राज-नीतिक अर्थनीति की परीक्षा दे दूँगा।"

"होल्मोगोरी से एक चिट्ठी मिली है। लिखा है, लड़कियों के स्कूल में एक जगह खाली है।"

"होल्मोगोरी में सब इन्तजाम हो गया है।"

इसे फिर होल्मोगोरी क्यों ले जायेंगे ? कीड़ों ने तो काट-काट खोखला बना दिया है।" (दराज की बात हो रही थी)।

होल्मोगोरी···होल्मोगोरी···होल्मोगोरी! यही एक शब्द सुनते-सुनते उसके कान बहरे हो गये थे। यह जगह है कहाँ ? शायद बहुत दूर, बहुत ऊँचे पहाड़ पर, जैसा चित्र में दिख-

लायी पड़ता है।* कितने लोग चढ़ते-चढ़ते एकदम पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाते हैं। एक पहाड़ पर लड़कियों का स्कूल है। बच्चे पहाड़ के नीचे स्लेज पर चढ़ जाते रहते हैं। सेर्योझा ने लाल पेन्सिल से एक नक्शा भी बना लिया। इसके बाद एक 'होल्मोगोरी-होल्मोगोरी' गाना बना लिया और उसे गुन-गुनाकर गाने भी लगा।

वे दराज की बात कर रहे थे, तो शायद हमलोग वहीं जाकर रहेंगे। शानदार बात है। पृथ्वी पर इससे सुन्दर और कुछ हो नहीं सकता। झेंका, वास्का चले गये हैं। अब हमलोग भी जा रहे हैं। हमेशा एक जगह न रहकर इस तरह दूसरी जगह जाने पर लोग उसे संभ्रान्त भी समझते हैं। एक दिन उसने मौसी से पूछा, "होल्मोगोरी क्या बहुत दूर है ?"

"हाँ, बहुत दूर।" मौसी एक गंभीर सांस खींचकर बोली।

"हमलोग वहाँ रहने जा रहे हैं ?"

"मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकती सेर्योझा। क्या व्यवस्था हुई है, मैं नहीं जानती।"

"अच्छा, वहाँ क्या ट्रेन से जाना होता है ?"

"हाँ, ट्रेन से।"

इसके बाद उसने माँ और करोस्तेलेव से पूछा, "हमलोग होल्मोगोरी जा रहे हैं न ?" उन्हें उसे बहुत पहले ही यह बत-

* Holmogory=Holm—पहाड़, gora—पर्वत।

लाना चाहिये था, शायद भूल गये थे। उन्होंने उत्तर दिये बिना कनखियों से एक दूसरे की ओर देखा। इसके बाद उससे आँख बचाने के लिए दूसरी ओर मुँह फेर लिया। सेर्योझा कोशिश करने पर भी उनसे आँख न मिला सका।

भौचक्का हो उसने पूछा, "हम जा रहे हैं। यही न ?"

"यह क्या, जवाब क्यों नहीं देते ?"

थोड़ी देर बाद माँ कुछ सोचकर बोली, "तुम्हारे बाबूजी की वहाँ बदली हुई है सेर्योझा।"

"हमलोग क्या, उनके साथ वहाँ जा रहे हैं ?"

उसका सवाल एकदम सीधा था और सीधा जवाब पाने के लिए ही वह चंचल हो उठा।

लेकिन माँ पहले ही की तरह घुमा-फिराकर बोलने लगी।

"उन्हे अकेले कैसे जाने दें, कहो ? अकेले जाने से कितनी तकलीफ होगी, जानते हो ? काम से लौटने पर देखेंगे—घर सूना है। सब पराये, कोई उन्हें खाना देने के लिए बैठा नहीं मिलेगा, कोई बात करने वाला नहीं होगा। तुम्हारे बाबू जी की हालत उस समय कैसी होगी बताओ तो ?" कुछ देर चुप रहने के बाद माँ ने असली बात कह डाली—

"इसीलिये मैं भी तुम्हारे बाबूजी के साथ जा रही हूँ।"

"और मैं ?"

करोस्तेलेव छत की ओर क्यों देख रहा है। वह इस तरह चुप क्यों है ? माँ कुछ बोले बिना उसके सवाल का जवाब न

दे सिर्फ उसे कसकर पकड़ दुलार क्यों कर रही है ? वह इस सबका कुछ मतलब ही नहीं समझ रहा था। अब वह एक अज्ञात आशंका से सिहर दोनों पाँव पटक चिल्लाने लगा—"और मैं ! मैं नहीं जाऊँगा ?"

उसे दुलार करना छोड़ माँ धमकाकर बोली, "ओह, कहती हूँ, इस तरह पाँव मत पटको। ऐसा नहीं करते समझे ? फिर कभी ऐसा मत करना। तुम जाने की बात कहते हो ? लेकिन बताओ तो, अभी कैसे जाओगे ? इतनी लम्बी बीमारी से उठे हो, अभी तो अच्छी तरह स्वस्थ भी नहीं हुए। जरा-सा असंयम होने से फिर बुखार आ जायेगा। वहाँ हमलोग एक नयी दुनिया में जायेंगे। क्या होगा, पता नहीं। इसके अलावा वहाँ की आबहवा तुम्हें बर्दाश्त होगी या नहीं, इसमें भी संदेह है। वहाँ जाने पर तुम फिर बीमार पड़ोगे। और वहाँ बीमार पड़ने पर तुम्हें घर में किसके पास छोड़ हमलोग काम पर जायेंगे ? डाक्टर ने भी कहा है कि तुम्हें अभी वहाँ ले जाना ठीक नहीं होगा।

माँ की बातें खत्म होने के पहले ही सेर्योझा फफक फफक कर रोने लगा। उसकी दोनों बड़ी-बड़ी आँखों से आँसुओं की बूँदें झरझर कर गिर रही थीं। वे खुद जायेंगे, उसे साथ नहीं ले जायेंगे ! रोते-रोते वह माँ की अन्तिम बातें सुन भी नहीं सका।

माँ तब भी कहती जा रही थी, "तुम यहाँ मौसी के पास

रहना। कुछ भी फिकर मत करना बेटा !" लेकिन वह जैसा था वैसा ही रहना नहीं चाहता। हरगिज नहीं चाहता। करोस्तेलेव और माँ के साथ जाना चाहता था।

रोते-रोते वह फिर बोला, "मैं होल्मोगोरी जाऊँगा।"

"सुनो बेटा, ज्यादा रोओ मत, अब चुप रहो। होल्मोगोरी जाकर क्या होगा ? वहाँ नया कुछ भी नहीं है।"

"हाँ है।"

"माँ के साथ क्या इस तरह बात की जाती है ? माँ क्या कभी झूठ बोलती है ? यहाँ क्या तुम जिन्दगी भर पड़े रहोगे ? बुद्धू कहीं का, चुप रहो। और मत रोओ········ बहुत हुआ। जाड़े भर यहाँ रहो ! इसके बाद बसन्त या गरमी में बाबूजी आकर तुम्हें वहाँ ले जायेंगे। फिर तो हम सभी एक साथ रहेंगे, तुम्हें छोड़कर हम लोग ही अधिक दिन कैसे रह सकते हैं ? तुम तो सब जानते हो।"

हाँ, वह सब जानता था। लेकिन अगली गरमी तक अगर वह पूर्ण स्वस्थ न हो सका ! इसके अतिरिक्त, पूरे जाड़े भर इस तरह इन्तजार करते रहना क्या मामूली बात थी ? जाड़ा तो शुरू हो गया था। लेकिन इसके खत्म होने में अभी बहुत देर थी·····वे लोग चले जायेंगे और वह यहाँ पड़ा रहेगा, इसकी वह कल्पना ही नहीं कर सकता। वे उसे छोड़कर कहीं बहुत दूर रहेंगे और उसकी चिन्ता नहीं करेंगे, जरा भी नहीं करेंगे। वे ट्रेन पर चढ़कर वहाँ जायेंगे लेकिन

उसे साथ नहीं ले जायेंगे। अपमान, दुख और निराशा की उसे एक विचित्र अनुभूति होने लगी। सिर्फ एक ही बात से वह अपने मन का गहरा दुख प्रकट करने की कोशिश करने लगा। बार-बार यही कहता, "मैं होल्मोगोरी जाऊँगा, मैं होल्मोगोरी जाऊँगा।"

माँ करोस्तेलेव की ओर देखकर बोली, "मित्या एक ग्लास पानी दो तो। लो, सेर्योझा पानी पीलो। नहीं-नहीं, कहती हूँ, अब मत रोओ। रोने से कोई फायदा नहीं। डाक्टर कहता है तुम्हें हम लोग न ले जायें यही ठीक है। बुद्धू की तरह मत रोओ.......चुप रहो, अब चुप हो जाओ। याद नहीं है, कितनी बार छोड़कर मैं इम्तहान देने गयी हूँ? मेरे बिना तब तो तुम अच्छी तरह रहते थे। याद नहीं हैं वे सब बातें? कहो तो, फिर आज ऐसा क्यों कर रहे हो? अब तो कितने बड़े भी हो गये हो। अपनी ही भलाई के लिए हमें छोड़कर तुम कुछ दिन रह नहीं सकते?"

माँ उसके मन की बात कैसे समझेगी। सब कुछ दूसरे ही किस्म का जो है। अभी वह कितना छोटा, कितना नादान था। जब वह वहाँ नहीं थी, तब वह उसे भूल ही गया था। माँ तो तब अकेले ही गई थी। और आज वह करोस्तेलेव को भी साथ ले जा रही है। इसके बाद वह अचानक एक दूसरे ही सोच में पड़ गया। वे लोग क्या, ल्योन्या को भी ले जायेंगे? यह तो उसे अब तक याद ही न

था। भर्रायी आवाज में उसने फिर पूछा "और ल्योन्या ?"

माँ ने गुस्से से लाल होकर जवाब दिया, "वह तो बिलकुल बच्चा है, उसे न ले जाने से कैसे चलेगा ? यह क्या तुम नहीं जानते ? मेरे बिना वह कैसे रह सकता है। इसके अलावा वह तो तुम्हारी तरह बीमार नहीं है, उसका टॉंसिल तो फूला हुआ नहीं है, उसे बुखार भी नहीं है।"

सेर्योझा ने सिर झुकाकर फिर रोना शुरू किया। इस बार चुपचाप, असहाय की तरह रो रहा था। ल्योन्या भी रहता तो वह सब कुछ बर्दाश्त कर सकता था। सिर्फ उसे ही यहाँ छोड़कर वे चले जा रहे हैं। क्या वे सिर्फ मुझे ही नहीं चाहते ?

परियों की कहानी में उसने पढ़ा था, "भाग्य भरोसे छोड़ दिया।" वे भी उसके साथ ठीक वैसा ही कर रहे थे। माँ के आघात के विरुद्ध उसके मन में जो भावना थी उसके साथ हीनता का भाव मिल गया। यह विचित्र अनुभूति जीवन भर उसे व्यथित करती रहेगी। वह बहुत-सी बातों में ल्योन्या से भी बुरा था, माँ ने तो यह कह ही दिया है। उसका गला फूला हुआ है, बुखार आता है, इसीलिए वे लोग ल्योन्या को तो साथ ले जा रहे हैं लेकिन उसे यहाँ छोड़ते जा रहे हैं।

करोस्तेलेव आह भर कमरे से बाहर चला गया। फिर फौरन लौटकर बोला, "सेर्योझा, आओ, हम लोग जरा बाहर

चलें।"

माँ चिल्ला उठी, "इस ठंड में? लगता है, फिर वह बिस्तरा पकड़ेगा।"

करोस्तेलेव ने कंधे फड़काकर कहा, "बीमारी तो लगी ही है, क्या किया जाय? आओ सेयोंझा। चले आओ।"

सिसकता हुआ वह करोस्तलेव के पीछे-पीछे चल पड़ा। उसके गले में मफलर बाँध, कोट पहना उसका नन्हा-सा हाथ अपनी सबल मुट्ठी में दबाये करोस्तेलेव बगीचे की ओर चला। जाते-जाते उसने कहा, "तुम तो जानते हो सेयोंझा, इच्छा न रहने पर भी मनुष्य को कई बार बहुत कुछ करना पड़ता है। मैं क्या होल्मोगोरी जाना चाहता हूँ? तुम्हारी माँ क्या जाना चाहती है? हम में से कोई भी जाना नहीं चाहता। वहाँ जाने का अर्थ है हमारे जीवन की सभी योजनाओं का मिट्टी में मिल जाना, लेकिन इच्छा न रहने पर भी हमें जाना पड़ रहा है। इसीलिए हम लोग जा रहे हैं। कितनी ही बार मेरे जीवन में ऐसी घटना हुई है।"

"क्यों जाना पड़ रहा है?"

"जिन्दगी ही ऐसी है बेटा।" करोस्तेलेव गंभीर और उदास होकर बोला। सेयोंझा को जैसे बहुत तसल्ली मिली। तो करोस्तेलेव भी दुखी है! करोस्तेलेव ने फिर कहना शुरू किया, "वहाँ फिर से हमें नया घर, नयी दुनिया बसानी होगी। इसके अलावा ल्योन्या तो है ही। उसे एक शिशु-

गृह में दे देना होगा। और अगर शिशु-गृह दूर हुआ तो उसके लिए एक धात्री रखनी पड़ेगी। वह भी कोई मामूली बात नहीं है। इसके अलावा मुझे इम्तहान देना होगा। जिन्दगी में अगर तरक्की करनी है तो इम्तहान दिये बिना कोई चारा नहीं। देखते हो न, हमारे जीवन में कितनी मजबूरियाँ हैं ! तुम्हें तो सिर्फ एक बात माननी होगी, कुछ दिन के लिए यहाँ रहना होगा। हमारे साथ जाने पर अभी तुम्हें बहुत तकलीफ उठानी पड़ेगी, तुम फिर बीमार पड़ जाओगे।"

उसे यह सब कहकर वे क्यों भुलावा दे रहे थे ? वह तो उनके साथ सब दुख-सुख समान भाव से सहना चाहता ही था। वे लोग जो करेंगे, वह भी वही करना चाहता था। करोस्तेलेव की स्नेहिल सान्त्वना भी उसे इस चिन्ता से मुक्त न कर सकी कि वे उसे केवल बीमार समझकर ही छोड़े नहीं जा रहे थे बल्कि उसे एक बोझ समझ ऐसा कर रहे थे। लेकिन वह अच्छी तरह समझता था कि अगर किसी को भी दिल से प्यार किया जाय तो वह कभी भी बोझ नहीं बन सकता। तो उसे सचमुच प्यार करते हैं या नहीं अब यही सन्देह उसे परेशान करने लगा।

अब वे बगीचे में पहुँच गए। बगीचा कितना निराला, कितना शांत था।

पेड़ों के पत्ते जमीन पर झरे पड़े थे। नंगे पेड़ों की डालों

पर चिड़ियों के घोंसले काले ऊन के गोलों की भांति दिखलाई पड़ रहे थे। झरे पत्तों के ऊपर से सेर्योझा के जूते मचमचा रहे थे। वह करोस्तेलेव का हाथ पकड़े चल रहा था। कुछ देर दोनों ही एकदम चुप रहे। अचानक सेर्योझा एक सांस खींच अपने मन की बात कह बैठा, "जो भी हो, एक ही बात है।"

"क्या एक ही बात है?"

सेर्योझा ने जवाब नहीं दिया। करोस्तेलेव थोड़ा ठहर झट से बोल उठा, "सिर्फ अगली गर्मी तक बेटा।"

सेर्योझा कुछ बोल न सका—लेकिन उसका मन बोल उठना चाहता था—मेरी जो खुशी, मैं सोच सकता हूँ, उमड़ती धारा में रोते-रोते डूब सकता हूँ, लेकिन किसी से भी कुछ फायदा नहीं। तुम लोग बड़े हो, तुम्हें अधिकार है। तुम लोग अपनी मर्जी से, जो चाहो करोगे। मुझे यहां छोड़ जाने का निश्चय किया है तो वही करो, मेरी कोई बात मत सुनो।

अगर उसकी जुबान से आवाज निकलती तो वह यही कहता। लेकिन बड़ों के असीम अधिकार के सामने वह असहाय था, निरुपाय था, यही सोच उसके मुँह से बात न निकली।

उस दिन से सेर्योझा एकदम चुप रहता। "क्यों?" यह प्रश्न भी वह अभी किसी से नहीं करता। आजकल वह अकेले ही मौसी के घर में सोफे पर बैठा रहता, पांव हिलाता और मन ही मन भुनभुनाता रहता। उसे अभी भी अधिक बाहर जाने नहीं दिया जाता। शरदऋतु के साथ-साथ उसकी

बीमारी भी बढ़ रही थी।

करोस्तेलेव आजकल प्रायः दिनभर घर से बाहर ही रहता था। अपना काम दूसरे को समझा देने के लिए खूब तड़के ही चला जाता। लेकिन तब भी वह सेर्योझा को भूलता नहीं था। एक दिन सोकर उठते ही उसे बिस्तरे के पास टेबुल के ऊपर मकान बनाने का सामान दिखाई पड़ा। दूसरे दिन एक भूरी बंदरिया देखी। सेर्योझा उस बंदरिया को बहुत प्यार करता था। वह जैसे उसकी छोटी बहन हो। सचमुच वह देखने में जैसे राजकुमारी की तरह सुन्दर थी। दोनों हाथों से उसे पकड़ वह कहता "अच्छा तो सुनो।" मन ही मन वह होल्मोगोरी गया और उसे भी साथ ले गया! उसे चूमता, प्यार करता और उसके कानों में फुसफुसाकर न जाने क्या कहता। रोज रात को उसे अपने बिस्तरे के पास ही सुला देता।

विदा की बेला में

इसके बाद एक दिन बहुत से लोग आ खाने के घर और माँ के घर का सारा सामान भी बाँधने लगे। माँ ने पर्दा और तस्वीरों को उतार लिया। कुछ देर बाद फर्श पर केवल एकाध चीजें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। सूने घर देखने में बड़े भद्दे से लगते थे। सिर्फ मौसी का घर और रसोईघर ही पहले की तरह सुन्दर और भरे-पूरे दीखते थे। पूरा मकान ही जैसे

बिलकुल बेजान मालूम पड़ता था। कुर्सियाँ एक पर एक रखी थीं। उनकी टाँगें उठी हुई थीं। किसी दूसरे समय ऐसा होने से कितने मजे से आँख मिचौली खेली जाती, लेकिन आज नहीं।

लोग काम खत्मकर काफी रात गये चले गये। सभी उसके बाद थककर लेट गये। ल्योन्या भी रोज की तरह रो-धो कर सो गया। मौसी और लुकियानिच लेटे-लेटे काफी रात तक फुसफुसाकर बातें करते रहे। हाँ, बीच-बीच में नाक भी झाड़ लेते। इसके बाद वे भी शान्त हो गये, थोड़ी देर बाद लुकियानिच की नाक से घड़घड़ाहट की और मौसी की नाक से मीठी-सीठी की-सी आवाज निकलने लगी।

करोस्तेलेव खाने के घर में बैठा कुछ लिख रहा था। अचानक पीछे एक लम्बी सांस लेना सुनते ही मुड़कर देखा सेर्योझा अपनी रात की लम्बी पोशाक पहने खाली पाँव खड़ा था। उसके गले में पट्टी बँधी थी। करोस्तेलेव ने अचरज से धीरे से पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हो बेटा ?"

सेर्योझा करुण स्वर में बोल उठा, "तुम मुझे ले चलो। दयाकर मुझे भी साथ ले लो। मुझे छोड़ मत जाओ, छोड़ मत जाओ.........." अब वह फूट-फूटकर रोने लगा। दूसरे लोग जाग न जायँ इसलिये रोने की आवाज दबाने की कोशिश की, करोस्तेलेव ने उसे नजदीक खींच दोनों हाथों से पकड़कर कहा, "देखो बेटा, इस ठंड में फर्श पर खाली पाँव टहलना तुम्हारे

लिये मना है—यह तो तुम जानते ही हो। तुमने मुझे वचन भी दिया था कि फिर कभी ऐसा नहीं करोगे।" सेर्योझा उसी तरह रोते-रोते बोला, "मैं होल्मोगोरी जाऊँगा।"

करोस्तेलव बोला "उफ! तुम्हारे पाँव कितने सर्द हैं।" रात की लम्बी कमीज से पाँवों को ढकते हुये सीने से चिपका लिया। अब वह जाड़े से थर-थर काँप रहा था। "और कोई उपाय न होने से क्या किया जा सकता है, बेटा बताओ तो तुम स्वस्थ भी तो नहीं हो।" "मैं फिर कभी बीमार न पड़ूँगा .... मुझे सिर्फ ले चलो।" "तुम जब बिल्कुल अच्छे हो जाओगे तो मैं आकर तुम्हें ले जाऊँगा बेटा।"

"सचमूच ले जाओगे तो?"

"आज तक तुमसे कभी झूठ बोला हूँ?" सचमुच करोस्तेलेव आज तक उससे कभी झूठ नहीं बोला था। लेकिन सभी बड़ों की तरह अगर वह भी कभी-कभी झूठ बोले? शायद इस बार झूठ कह उसे भुलावा देने की कोशिश कर रहा था।

सेर्योझा ने करोस्तेलेव की मजबूत गरदन को अपने दोनों नन्हे-नन्हे हाथों से पूरी ताकत से पकड़ अपना मुँह छिपा लिया। उसकी चौड़ी सुन्दर छाती ही जैसे उसके लिए सबसे बड़ी और निरापद जगह थी। यही आदमी उसकी एकमात्र आशा या भरोसा था, यही आदमी उसे दिल से प्यार करता था—आदर करता था।

करोस्तेलेव उसे गोद में ले घर के एक कोने से दूसरे कोने तक चहलकदमी करता हुआ कितने प्यार भरे शब्दों में कितनी ही बातें उसके कानों में कहता जा रहा था।

"मैं आकर तुम्हें ले जाऊँगा। मैं और मेरा मुन्ना ट्रेन पर चढ़कर जायेंगे......ट्रेन फुर्र से हवा की तरह हमें लेकर उड़ जायगी......कितने लोग होंगे उस ट्रेन में......थोड़ी देर बाद ही देखोगे कि तुम्हारी माँ अधीर होकर स्टेशन पर हमारा इन्तजार कर रही है......इञ्जन सीटी बजा फिर दनदनाता चल पड़ेगा। कितना मजा आयेगा बेटा?"

सेर्योझा करोस्तेलेव के सीने में मुँह छिपाये सोच रहा था—मुझे ले जाने के लिए उसे समय नहीं मिलेगा। माँ को भी फुर्सत नहीं मिलेगी। कितने ही लोग करोस्तेलेव के पास आयेंगे-जायेंगे। टेलीफोन पर उसे हमेशा उलझाये रहेंगे।

करोस्तेलेव के काम का क्या अन्त होगा? साथ ही उसे इम्तहान भी तो देना है। रोज-रोज ल्योन्या को सुलाना होगा। इतने काम के बीच वे मुझे एकदम भूल जायेंगे और मैं यहाँ केवल इन्तजार करूँगा—कब मुझे ले जायेंगे......उस इन्तजार का शायद अन्त नहीं होगा......

करोस्तेलेव अभी भी कहता जा रहा था, "जानते हो, वहाँ सचमुच ही एक जंगल है और उस जंगल में बेर के अनगिनत पेड़ और कुकुरमुत्ते हैं।"

"उस जंगल में भेड़िया भी रहता है?"

"यह ठीक से मालूम नहीं। भेड़िया है या नहीं, यह पता लगाकर तुम्हें चिट्ठी लिखकर बता दूँगा, क्यों? वहाँ एक पहाड़ी नदी है, हम दोनों वहाँ नहाने जायेंगे, तुम्हें तैरना सिखला दूँगा।"

काश, सचमुच, ऐसा हो पाता। लेकिन उसका मन तो सन्देहों से भरा था।

"हम दोनों नदी में मछली पकड़ेंगे। वाह, देखो, देखो, बाहर कैसी सुन्दर बर्फ पड़ रही है।"

अब वह सेर्योझा को गोद में ले खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। बाहर धुनी हुई रूई की तरह बर्फ पड़ रही थी। मन्द-मन्द हवा में हल्के डैनों की तरह बर्फ के टुकड़े आकर खिड़की से धीरे से टकरा रहे थे। सेर्योझा उधर खोया-सा देख रहा था। उसने अपना रोगी मुँह करोस्तेलेव के मुँह से सटा दिया। करोस्तेलेव ने उसे सीने से चिपका कर कहा, "जाड़ा तो आ ही गया। अभी तुम दिन भर बाहर खेल सकोगे, स्लेज पर चढ़ बर्फ के ऊपर इधर-उधर दौड़ सकोगे। फिर देखना, कितनी जल्दी-जल्दी तुम्हारा समय कट जायगा।"

"हाँ····लेकिन····।" सेर्योझा ने उदास होकर कहा, "मेरी स्लेज की रस्सी बहुत पुरानी हो गयी है। एक नयी रस्सी लगा दोगे?"

'ठीक, ठीक, अच्छी याद दिला दी। कल ही नयी रस्सी

लगवा दूँगा।" हाँ, तुम मुझसे एक वादा करो। बोलो, फिर रोओगे तो नहीं ? रोने से तुम्हें नुकसान पहुँचता है, तुम्हारी माँ भी बेचैन हो जाती है, जानते हो न ? इसके अलावा क्या मर्द कभी रोते हैं ? तुम्हारा रोना मुझे अच्छा नहीं लगता। बोलो, फिर कभी रोओगे तो नहीं ?"

"नहीं" ......सेर्योझा मुँह छिपाये ही धीरे से बोला।

"वादा किया तो ?"

"हाँ।"

"अच्छा, तो वादा याद रखना। भले आदमियों की एक बात। मर्दों की ज़ुबान कभी बदलती नहीं, जानते हो न ?"

करोस्तेलेव उसके नन्हें-से थके शरीर को गोद में लिये धीरे-धीरे मौसी के घर में गया और बिस्तरे पर उसे सुला ऊपर से अच्छी तरह चादर ओढ़ा दी। सेर्योझा एक लम्बी सांस खींच थोड़ी ही देर में गाढ़ी नींद में सो गया।

करोस्तेलेव उसके निद्रा-मग्न सुन्दर मुँह की ओर कुछ देर तक देखता रहा। खाने के घरकी धुँधली रोशनी में दिखायी दिया — उसका चेहरा कितना फीका, पीला पड़ गया था। कुछ देर बाद वह धीरे से कमरे से बाहर निकल आया।

रवानगी के दिन

सबेरा हुआ। आकाश मेघाच्छन्न था, धूप नहीं, कुहासा भी नहीं। जमीन पर बर्फ गलकर पानी बन चुकी थी, सिर्फ एक पतला गलीचा-सा चमक रहा था। आकाश का रङ्ग भूरा हो गया था, पाँवों के नीचे मिट्टी जरा भीगी-भीगी लगती थी। ऐसे दिन में स्लेज चलाना असम्भव था, आँगन में निकलने की भी इच्छा नहीं हो रही थी।

करोस्तेलेव ने अपने कथनानुसार स्लेज में नयी रस्सी बाँध दी थी। सेर्योझा के सोकर उठते ही बरामदे के एक कोने में स्लेज खड़ी दिखायी दी लेकिन करोस्तेलेव कहाँ गया? माँ ल्योन्या को सजा रही थी, उस सजावट का जैसे अन्त ही नहीं। कुछ देर बाद माँ उसकी ओर देख मुस्कुराकर बोली, "देखो, इसकी नाक कितनी छोटी हो गयी है!"

सेर्योझा ने अच्छी तरह देखा, एकदम साधारण नाक थी। विचित्र या सुन्दर कुछ भी तो नहीं! माँ ऐसा कह रही थी, इसका एकमात्र कारण यही था कि वह ल्योन्या को सचमुच प्यार करती है! माँ पहले मुझे भी कितना प्यार करती थी! आज मुझे नहीं, सिर्फ उसे ही प्यार करती है।

सेर्योझा उदास मौसी के पास रसोई घर में आया। मौसी में हजारों ऐब थे, बुरी आदतें थीं। लेकिन वह फिर भी उसे प्यार करती थी, उसकी बातें मन से सुनती थी। मौसी

के पास आकर उसने पूछा, "क्या कर रही हो मौसी ?"

"देखते नहीं ? मांस के कटलेट बना रही हूँ।"

"इतना क्या होगा ?"

बेसन में डुबोये मांस के टुकड़े पूरी टेबुल पर बिखरे हुये थे।

"इस वक्त हम सभी मिलकर खायेंगे और बाकी वे लोग रास्ते में खाने के लिए साथ ले जायेंगे।"

"वे क्या अभी ही चले जा रहे हैं ?"

"ठीक इसी वक्त नहीं, शाम को जायेंगे।"

"और कितने घंटे बाकी हैं ?"

"अभी बहुत देरी है, शाम होने पर रवाना होंगे। दिन में नहीं जायेंगे।"

मौसी और कुछ न कह कटलेट तलने लगी। सेर्योझा टेबुल के कोने पर सिर रख न जाने क्या सोचने लगा...... लुकियानिच मुझे प्यार करता है......अब से और भी अधिक प्यार करेगा.......उसके साथ मैं नौका से घूमने जाऊँगा....... इसके बाद नदी में डूब जाऊँगा। इसके बाद वे मुझे परनानी की तरह मिट्टी में सुलाकर दफना देंगे। करोस्तेलेव और माँ जब यह खबर सुनेंगे तो दुखी होंगे और कहेंगे—उसे क्यों अपने साथ नहीं ले आये.......लड़का अपनी उमर के ख्याल से कितना ज्यादा चालाक था......कितना अच्छा था। ल्योन्या से हजारों बातों में अच्छा था, कभी रोता नहीं था, हमें परे-

शान नहीं करता था। नहीं, नहीं परनानी की तरह अपने को दफनाने नहीं दूँगा। मुझे वहाँ डर जो लगेगा! अकेले वहाँ कैसे सोया रहूँगा! मैं यहीं अच्छी तरह रह सकूँगा। लुकियानिच मुझे कितना सेब, चाकलेट ला-लाकर देगा, इस प्रकार एक दिन मैं कितना बड़ा हो जाऊँगा.......कप्तान बनूँगा......तब माँ और करोस्तेलेव एक दिन गरीब हो जायेंगे। करोस्तेलेव एक दिन मेरे पास आकर कहेगा, "तुम अपनी लकड़ी काटने दो मुझे।" तब मैं मौसी से कहूँगा, "उसे कल का बासी खाना दे दो खाने के लिए।"

यही सब विचित्र बातें सोचते-सोचते अचानक सेर्योझा को माँ और करोस्तेलेव के लिए इतना अफसोस हुआ कि वह उसी वक्त रो पड़ा। मौसी उसकी ओर देखकर बोली, "हे भगवान!" सेर्योझा को उसी वक्त याद आया—उसने करो-स्तेलेव से वादा किया था कि वह फिर कभी रोयेगा नहीं। वह झट से बोल उठा, "मैं फिर नही रोऊँगा।"

इसी समय अपना काला बैग हाथ में लिए नानी आ पहुँची और रसोईघर में प्रवेशकर पूछा, "मित्या घर में नहीं है?"

मौसी ने जवाब दिया, "गाड़ी की व्यवस्था करने बाहर गया है। आवारकिव कितना ओछा आदमी है, करोस्तेलेव को गाड़ी नहीं देता।"

नानी बोली, "अच्छा कैसे नहीं है? लारी तो दी है। उसकी

गाड़ी की सामूहिक खेती में जरूरत है। और सामान लेकर लारी से ही जाने में तो सुविधा होगी।

पाशा मौसी ने कहा, "सामान के लिए तो अच्छा है लेकिन एक गाड़ी रहने पर जच्चा-बच्चा को खूब आराम होता।"

नानी उदास होकर बोली, "आज कल के लोग बड़े विचित्र होते हैं। अपने जमाने में हम लोग गाड़ी या लारी पर बच्चों को लेते ही नहीं थे। हम लोग भी तो बाल बच्चेवाले थे बेटी। माँ बच्चे को गोद में ले ड्राइवर के पास बैठ खूब आराम से जा सकती है।

सेर्योझा आँखें मलता हुआ उनकी बातें सुन रहा था। भावी निश्चित विदाई की चिन्ता से उसका मन खिन्न हो गया था। गाडी या लारी चाहे जिससे भी हो, वे लोग थोडी देर में उसे छोड चले जायेंगे।

लेकिन वह उन्हें जी-जान से प्यार करता है। फिर भी वे लोग उसे छोड़कर चले जायेंगे।

नानी फिर बोली, "मित्या इतनी देर तक क्या कर रहा है ? मैं तो उसी से भेंट करने आयी हूँ।"

मौसी बोली, "क्यों, आप उनके जाने के समय आयेंगी नहीं ?"

"नहीं, मुझे फिर सम्मेलन में जाना होगा।" नानी अब माँ के पास चली गयी।

फिर सभी चुप। दिन और भी मेघाच्छन्न हो उठा, तूफानी

हवा चलने लगी। टट्टरें हवा के धक्के से हिल रही थीं। तूफानी हवा के साथ-साथ फिर बर्फ भी गिरने लगी। सेर्योझा ने मौसी से पूछा, "और कितने घंटे बाकी हैं ?"

"अभी भी बहुत देर है।"

खाने के घर में एक ओर सामान बाँध कर रखे थे। माँ और नानी वहीं बैठ बातें कर रही थीं। नानी बोली, "ओह, कहो तो, मित्या इतनी देर क्यों कर रहा है ? मुझसे उसकी फिर कभी मुलाकात होगी या नहीं, कौन जाने !" सेर्योझा नानी की बात सुन सोचने लगा मालूम पड़ता है, नानी भी डर रही है कि कहीं मित्या फिर लौटकर न आये, शायद सदा के लिए चला जाय !

सेर्योझा ने देखा, दिन का प्रकाश कुछ धीमा पड़ गया था। थोड़ी ही देर बाद शायद बत्ती जल उठेगी। कितनी जल्दी-जल्दी समय बीत रहा है आज, पास के कमरे में ल्योन्या रो उठा, माँ झटके से कह सेर्योझा को प्रायः धकियाते हुए ही उधर दौड़ पड़ी। जाते समय उसकी ओर एकटक देख स्नेह भरे स्वर में बोली, "खेलते क्यों नहीं सेर्योझा ?" हाँ खेल सकता, तो वह खुद ही खुश होता। उस बन्दरिया के साथ खेलने की उसने बड़ी कोशिश की। इसके बाद खेल वाला दालान भी तैयार करने की कोशिश की। लेकिन किसी में भी मन जो नहीं लगता। आज उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

रसोईघर का दरवाजा खुलने की आवाज के साथ ही भारी पाँवों की आहट सुनायी पड़ी और करोस्तेलेव का स्वर सुनायी पड़ा, "एक घंटे में लारी आयेगी। तबतक चलो हम-लोग खा-पी लें।" नानी ने उसे देखकर पूछा, "तो फिर गाड़ी न मिल सकी ?"

"नहीं। बोले, अभी उन्हें जरूरत है। रहने दो, लारी में अच्छी तरह चले जायेंगे।"

करोस्तेलेव की आवाज सुन दूसरे दिनों की भाँति ही सेर्योझा का मन खुशी से भर उठा, इच्छा हुई—इसी वक्त जाकर उसकी गोद में बैठ जाये। लेकिन तभी मन ने फिर रोका, नहीं थोड़ी देर बाद ही तो वे चले जायेंगे......तब फिर किस लिए......खिन्न-सा फिर वह खिलौनों को इधर-उधर करने लगा।

करोस्तेलेव उसकी ओर देख अप्रतिभ-सा क्षमा चाहने की मुद्रा में बोला, "क्या खबर है सेर्योझा ?"

इसके बाद वे खाने बैठे। झटपट खाकर उठ गये। नानी चली गयी, अब चारों ओर खूब अँधेरा हो गया। करोस्तेलेव टेलीफोन पर किसी से विदाई की बातें कर रहा था! सेर्योझा उसके घुटनों के सहारे चुपचाप खड़ा था। टेलीफोन पर बातें करते हुए करोस्तेलेव अपनी लम्बी उँगलियाँ उसके कोमल बालों में घुसाकर सहला रहा था।

इसी समय तिमोखिन घर में आकर बोला, "हाँ, सब कुछ

तैयार है न ? मुझे एक कुल्हाड़ी दो तो। बर्फ न काटने से फाटक खुलेगा ही नहीं।"

लुकियानिच भी उसके साथ बर्फ काटने गया। माँ ल्योन्या को बिस्तरे से उठा जल्दी-जल्दी गुदड़ी में लपेटने लगी।

करोस्तेलेव ने कहा, "इतना परेशान क्यों हो रही हो ? अभी भी बहुत समय है।'

इसके बाद करोस्तेलेव, लुकियानिच और तिमोखिन—तीनों मिलकर बँधे सामान को ढो-ढोकर ले जाने लगे।

उनके जूतों में बर्फ घुस गयी थी। लेकिन कोई भी आज बर्फ झाड़कर घर में प्रवेश नहीं करता। मौसी भी आज इसके लिए उन्हें कुछ नहीं कह रही थी। पूरा फर्श ही पानी से भीग गया था। घर में इधर-उधर तमाम टुकड़े बिखरे पड़े थे। मौसी उपदेश देती हुई इस घर से उस घर में घूम रही थी।

माँ ने ल्योन्या को गोद में लिये उसके पास आकर एक हाथ से उसे अपनी ओर खींचते हुए ज्यों ही उसका सिर अपनी गोद में रखने की कोशिश की, वह दूर हट गया। माँ उसे छोड़कर जा सकती है तो फिर उसे इस तरह पकड़ती क्यों है ?

सारा सामान लारी पर लाद दिया गया। कमरे सूने दिखलायी पड़ने लगे। फर्श पर इधर-उधर एकाध टुकड़ा

कागज या दवा की खाली शीशियाँ बिखरी दिखलायी पड़ रही थीं। सामान से भरे ये घर कितने सुन्दर दिखलायी पड़ते थे, और अभी तो लगता है, जैसे पूरा मकान ही पुराना और भद्दा हो। लुकियानिच मौसी के हाथ में एक कोट दे बोला, "लो, यह पहन लो, बाहर भीषण ठंड है।"

सेर्योझा अचानक जैसे किसी आतङ्क से सिहर उठा और दौड़कर उसके पास जाकर बोला, "मैं भी बाहर जाऊँ ?"

मौसी आहिस्ते से बोली, " हाँ, जरूर जाओ, आओ, तुम्हें कोट पहना दूँ।"

माँ और करोस्तेलेव ने भी अपने कोट पहन लिये थे। करोस्तेलेव सेर्योझा को गोद में उठा स्नेह से चूमने लगा। थोड़ी देर बाद बोला, "कुछ दिनों के लिए बिदाई दो बेटा। जल्दी से जल्दी अच्छे हो जाओ। हमारी जो बात हुई है, याद रखना, क्यों ?"

माँ भी अब अचानक उसे चूम कर रोने लगी। रोते-रोते ही माँ बोली, "मुझे बिदाई नहीं दोगे सेर्योझा ?' सेर्योझा झटपट बोल उठा, 'बिदाई !' लेकिन वह अभी करोस्तेलेव की ही ओर देख रहा था, करोस्तेलेव फिर बोला, 'मेरे अच्छे बेटे।"

माँ अब भी रो रही थी, आँखें पोछती हुई वह मौसी और लुकियानिच से बोली, "तुम लोगों ने जो कुछ किया उसके

लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।"

मौसी बोली, "इसमें धन्यवाद देने की क्या बात है!"

"सेर्योझा को देखना।"

"इसके लिए तुम बिलकुल फिकर मत करो।" अब मौसी भी रोने लगी। रोते ही रोते बोली, "एक मिनट के लिए हम सभी को एक साथ बैठना होगा न! आओ..."

लुकियानिच चारों ओर देखकर बोला, "कहाँ बैठेंगे?"

मौसी ने कहा, "हे भगवान! अच्छा, आओ, न हो तो हमारे घर में ही आ जाओ!"

सभी मौसी के घर में जा कुछ देर तक सिर झुकाये चुप-चाप बैठे रहे। इसके बाद मौसी ही सबसे पहले उठकर बोली, "भगवान तुम्हारा मंगल करें।"

अब वे सीढ़ी से उतर बाहर आये। इस समय बाहर बर्फ गिर रही थी और चारों ओर उजाला ही उजाला दिखलायी पड़ रहा था। फाटक खोल दिया गया था। बाहर भी शीशेवाली एक बत्ती छत से लटका दी गयी थी। सामान से लदी लारी बाहर भूत की तरह खड़ी थी, तिमोखिन कन-भास के परदे से सामान को अच्छी तरह ढक रहा था। शुरिक भी अपने बाप की मदद कर रहा था। वास्का की माँ, लीदा, अड़ोस-पड़ोस के बहुत से लोग उन्हें बिदाई देने के लिए घर के सामने आकर खड़े थे।

सेर्योझा को लग रहा था जैसे वह जीवन में पहली बार

उनको देख रहा हो। सभी कुछ उसे बड़ा विचित्र, अन-जान-सा लगता था। उनकी बातचीत भी बिलकुल दूसरे ढंग की थी।

आँगन को भी अपना आँगन कहने की हिम्मत नहीं होती। यहाँ जैसे वह कभी रहा ही नहीं। इन लड़कों के साथ कभी खेला भी नहीं·······इस लारी पर भी कभी चढ़ा नहीं·······इनमें से कुछ भी जैसे उसके पास कभी था ही नहीं, और होगा भी नहीं, क्योंकि आज उसे छोड़ दिया गया है।

तिमोखिन बोला, "आज गाड़ी चलाना भी मुश्किल है। रास्ते पर इतनी फिसलन है कि···!"

करोस्तेलेव ने माँ और ल्योन्या को सामने की सीट पर बैठा एक शाल से उन्हें ढक दिया। करोस्तेलेव उन्हें बहुत मानता था। इसीलिए इतनी हिफाजत कर रहा था। उन्हें जिससे ठंड न लगे, वे आराम से जा सकें इसीलिए वह इतना परेशान हो उठा था। इसके बाद खुद लारी के पीछे चढ़ खड़ा हो गया। निश्चल पत्थर की मूर्त्ति की तरह दिखलाई पड़ रहा था वह।

मौसी ने उसे पुकार कर कहा, "कनभास के भीतर चले जाओ मित्या नहीं तो मुँह पर बर्फ पड़ेगी।" करोस्तेलेव कुछ बोला नहीं, जरा हिला भी नहीं।

सेर्योझा की ओर देख बोला, "जरा पीछे हट जाओ बेटा। नहीं तो लारी से चोट लग जायगी!"

लारी ने अब गरजना शुरू किया। तिमोखिन अपनी सीट पर बैठ गया था। लारी अब चलने ही वाली थी। पहले जरा पीछे हटी, फिर आगे, फिर थोड़ा पीछे हट गयी। अब वह रवाना होगी, सरसराती चली जायेगी। इसके बाद फाटक बन्द कर दिया जायेगा, बत्ती बुझा दी जायगी··· और तमाशा खत्म हो जायगा।

सेर्योझा एक ओर चुपचाप खड़ा था, उसके शरीर पर बर्फ गिर रही थी, जी-जान से वह अपनी प्रतिज्ञा यादकर रूलाई रोकने की कोशिश कर रहा था। कोई देख न पाये - इसीलिए सिर्फ सिसक-सिसककर रो रहा था। उसी मौन, असहाय क्रन्दन की एक बूँद आँख से बाहर निकल आयी और रोशनी में जगमगा उठी। लेकिन वह किसी नादान बालक का अबोध क्रन्दन नहीं था, एक सयाने लड़के का मान, अभिमान और अपमान से भरा आँसू था।

नहीं, अब यहाँ खड़ा नहीं रहा जाता। वह पीछे मुड़ा और फूट-फूट रो पड़ा। अपने नन्हे-से शरीर को बड़े कष्ट से ढोता हुआ घर के भीतर चल पड़ा। करोस्तेलेव अचानक चिल्ला उठा, "ऐ गाड़ी रोको, रोको। सेर्योझा आओ, जल्दी से चले आओ। अपने सारे सामान लेकर चले आओ। तुम भी हमारे साथ चल रहे हो!" वह लारी से कूदकर नीचे आया। इसके बाद फिर चिल्ला कर कहने लगा, "जल्दी से चले आओ। तुम्हारा वहाँ पर क्या है? सिर्फ खिलौने

लेकर चले आओ, एक मिनट भी देर न करो, चले आओ।"

दरवाजे के उस ओर से मौसी और लारी के भीतर से माँ प्रायः एक ही साथ बोल उठी, "मित्या, तुम्हें यह क्या सूझी है? यह क्या कर रहे हो? पागल हो गये हो क्या?"

करोस्तेलेव ने बिगड़कर कहा, "आह, तुम लोग चुप भी तो रहो। तुम लोग क्या कुछ समझती नही? हम क्या करने जा रहे थे, कह सकती हो? यह तो शरीर का एक अंग काट कर फेंक देने के समान हुआ है। तुम लोग जो भी,क्यों न कहो, मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता, समझी?

मौसी रोती हुई बोली, "लेकिन वह तो वहाँ जाकर मर जायगा!"

करोस्तेलेव फिर बोला, "बेकार बातें मत करो। उसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूँ, समझी? वह वहाँ जाने से मर नहीं जायगा। यह सब तुम लोगों की बकवास है। आओ बेटा।" वह अब दौड़कर घर के अन्दर आया।

सेर्योझा पहले तो करोस्तेलेव की बात सुनकर हिल-डुल भी न सका। वह जैसे विश्वास ही नहीं कर पा रहा था। विश्वास करते डर रहा था। उसकी छाती काँपने लगी। बड़ी देर तक अडिग खड़ा रहने के बाद दौड़कर घर में गया और एक हाथ से बन्दरिया को पकड़कर फिर सोचने लगा—करोस्तेलेव ने अगर फिर अपना इरादा बदल दिया तो? माँ और मौसी अगर समझा बुझाकर उसका विचार बदल दें!

करोस्तेलेव भी इस बीच दौड़कर उसीकी ओर बढ़ा आ रहा था, कह रहा था, "क्या कर रहे हो? जल्दी से आओ, चले आओ।"

अब वह सेर्योझा के साथ ही घर में घुसकर उसका सामान समेटने लगा। मौसी और लुकियानिच भी आकर उनकी मदद करने लगे।

लुकियानिच सेर्योझा का बिस्तर बाँधते-बाँधते बोला, "तुमने ठीक ही किया मित्या! यह बहुत अच्छा हुआ।"

सेर्योझा ने मौसी के दिये हुए एक बक्से में, जो भी खिलौना पाया, जल्दी से रख लिया। देरी करने से काम नहीं चलेगा....वे अगर चले जायँ? उसकी नन्हीं-सी छाती सिर्फ धकधक कर काँप रही थी। वह जोश में कुछ सुन भी नहीं पाता, सांस छोड़ते भी जैसे कष्ट हो रहा हो। मौसी जब उसे सजाने-सँवारने आयी तो केवल इतना बोला, "जल्दी करो, जल्दी करो।" इसके बाद आकुल दृष्टि से करोस्तेलेव को खोजने लगा। दरवाजे के पास आकर देखा—लारी चुपचाप खड़ी थी। करोस्तेलेव लारी पर चढ़ा नहीं था। दरवाजे के सामने ही खड़ा था। उसने सेर्योझा से सब से बिदाई लेने को कहा।

इसके बाद करोस्तेलेव के पास आकर खड़ा हुआ तो उसने उसे उठाकर सीने से चिपका लिया। इसके बाद माँ और ल्योन्या के पास बैठाकर उसे माँ की शाल के नीचे घुसा

दिया। अब लारी चल पड़ी। ओह, अब कोई चिन्ता नहीं.... अब वह निश्चिन्त है।

लारी के सामने की सीट पर तिमोखिन, माँ, ल्योन्या और वह बैठे थे। एक-दो नहीं, चार-चार आदमी। तिमोखिन सिगरेट का धुआँ छोड़ रहा था। सिगरेट के धुएँ से सेर्योझा को खाँसी आई। माँ और तिमोखिन के बीच वह किसी तरह बैठा था। उसकी टोपी खिसककर आँखों पर आ गयी थी। रूमाल तो मौसी ने खूब कसकर बाँध दिया था। लारी की रोशनी में उसने देखा—सिर्फ बर्फ का नाच हो रहा है! आपस में सट-सटकर वे बड़े कष्ट से बैठे थे। लेकिन इससे क्या हुआ। फिर भी वे एक साथ तो जा रहे हैं। हमारा तिमोखिन हमें होलमोगोरी ले जा रहा है। और लारी के पीछे करोस्तेलेव है। वह मुझे कितना प्यार करता है। मेरी सारी जिम्मेदारी अब उसी पर है। बाहर बर्फ के बीच इतनी ठण्ढक में वह बैठा है और हमलोग गाड़ी के भीतर इतने आराम से बैठे हैं। तब भी वह हमें निरापद होलमोगोरी ले जायगा। हमलोग होलमोगोरी जा रहे हैं, क्या कहना है। मालूम नहीं, वहाँ क्या है, लेकिन हमलोग वहाँ जायेंगे तो मजा आ जायगा। तिमोखिन की लारी सहसा भों-भों कर चिग्घाड़ उठी। बर्फ सेर्योझा के हँसते-से चेहरे पर पड़ने लगी।